वर्ष 26 | श्रावण–भादवा | सितम्बर–2021 | अंक 09 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोरट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023
मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

...रीझो रीझो...

श्री वीर देखी शासनना शिरताज

...हरखो हरखो...

आ मौसम आवी पर्व पर्युषण आज

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व विशेषांक

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

पांच परमेष्ठी के ध्यान से....

अरिहंत के ध्यान से अहं की मृत्यु!
सिद्धों के ध्यान से शब्द की मृत्यु!
आचार्य के ध्यान से मोह की मृत्यु!
उपाध्याय के ध्यान से अविद्या की मृत्यु!
साधु के ध्यान से अविरति की मृत्यु।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेणं तवेण य।
खंतीए मुत्तीए य, वड्ढमाणो भवाहि य॥

तुम ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, क्षमा और निर्लोभता की दिशा में निरन्तर बढ़ते रहना।

उत्तरा. सूत्र, 22.26

पाथेय

हे नाथ! तुम्हारी और मुड़ना, तुममें और तुम्हारे लिए ही जीना, सर्वोच्च आनंद है, अविचल शांति के कारण है। यह मानों अनन्त में श्वांस लेना है, शाश्वत की ओर उड़ान भरना है। तुम्हें पाकर लघु मनुष्य हो उठता है असीम। काल और अंतरिक्ष की सीमाओं से हो जाता है मुक्त। फिर भी न जाने क्यों मनुष्य दूर भागते हैं, भय खाते हैं, उन वरदानों से जो तुम्हारे सान्निध्य से उन्हें होते है प्राप्त ओह! क्या ही विचित्र है यह अज्ञान, समस्त दुःखों की शुरुआत। कितनी दुःखदायी है यह मूढ़ता, जो मनुष्य को उन सौभाग्यों से रखती है दूर, जो उसके जीवन में सुख-शांति का करते हैं सृजन। यह मूढ़ता और अज्ञान ही उसके जीवन को बनाते है अति सामान्य और जकड़ लेते है उसे बनकर दुःख क्लेशों के उपकरण। प्रभु, मनुष्य के अज्ञान दूर करो, भ्रांतियों को मिटाओ और उन्हें अपनी ज्ञान ज्योति में आलोकित करो।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-26 श्रावण-भादवा सितम्बर 2021 अंक-9

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- शांति और क्षमा का महापर्व : पर्युषण पर्व -(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5

4- मैत्रीभाव की रंग-रंगोली-रोशनी से सजाएंगे तन-मन को -पू.श्री वीररत्नविजयजी म.सा., क्षमा : एक नया जन्म, दो आँसू.... 6

5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा., पांच क्षमा 7-9

6- देव जाति के भेद-उपभेद-आचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म. 10

7- पर्युषण पर्व के मूल सिद्धांतों को कर लो आत्मसात : विचारों के प्रदूषण का प्रक्षालन करना ही पर्युषण है 11-12

8- मैं अंजना-पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म. 13-14

9- हरिद्वार में जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा. की निश्रा में पर्युषण पर्व का अध्यात्मिक महोत्सव, क्षमावीर, यह है पर्व पर्युषण, क्षमा एक अमृत 15-16

10-लोक कल्याण के सुवासित पथ पर, क्षमा 17-18

11-जब महामंत्र रक्षक बनता है, विश्व विजयी बनना हो-शस्त्र चाहिये, आत्म विजयी बनना हो-शास्त्र चाहिये- पू.श्री वीररत्नविजयजी म.सा. 19-21

12-किसी को माफ करके देखिए....आपने जिन्हें माफ किया है, वे आपके ऋणी हो जाएंगे और आप उनकी नजरों में बेहद ऊंचे उठ जाएंगे- डॉ. उज्जवल पाटनी 22

13-महापर्व पर्युषण की गरिमा : एक विश्लेषण- प्रेमचन्द जैन,साधु का परिवार,जीवदया 23-25

14-लाखों जैनों के आराध्य गुरु है : जगद्गुरु हीरविजयसूरीश्वरजी महाराज -पू.श्री वीररत्नविजयजी म.सा. चार कषायों में से प्रथम किसको जीतें ? 26

15-पावन पर्वराज पर्युषण, हिंसादि का मूल क्या ? 27

16-पर्युषण पर्व का महत्व क्षमा- श्रीमती प्रभा जैन, अरिहंत की भक्ति 28

17-वर्गपहेली- 316 - जयंतीलाल जैन 29

18-ज्ञान गंगोत्री- 316 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. 30

19-शासन-समाचार 31-41

20-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है, अरिहंत परमात्मा के पांच वैभव 42

संपादकीय

शांति और क्षमा का महापर्व : पर्युषण पर्व

वर्तमान *की भौतिकतावादी खाऊ पियो मौजकरो वाली दुनिया में मानव को आध्यात्मिकता और धर्म का पावन संदेश देनेवाला महापर्व पर्युषण हमारे जीवन को संवारने का काम करता है। स्वार्थ, भोगलिप्सा में आकण्ड डूबे मानव को एक आशामय और तात्विक जीवन जीने का मौका देनेवाला विश्व में एक मात्र महापर्व पर्युषण है। प्रतिवर्ष हमें जीवन को कैसे जीना इस बात को सजग प्रहरी बनकर ही नहीं बल्कि हमें पूर्ण संरक्षण देने का काम भी यह पर्व करता है। जीवन जीने के मूल तत्वों क्षमा, संयम, तप, त्याग से हमारा परिचय करानेवाला यह महापर्व हमें भव भटकन से बचाने के साथ किसी अधर्म कार्य में हमें अटकाता भी नहीं है क्योंकि धर्म के मार्ग का आधार लेनेवाला अधर्म कर्म करने के पहले दस बार विचार करेंगे। धर्म से समंवित कर्म सर्वत्र ही सौहार्द एवं सुख का संसार विस्तृत करता है।*

क्षमा महापर्व का प्राण है, क्षमा में मां छुपी हुई है जिस प्रकार मां अपने पुत्र को सब प्रकार से सुरक्षित, विकसित करने के लिये पूर्ण समर्पित रहती है, इसी प्रकार क्षमा की शक्ति अनंत और अतुल्य है, क्षमा, श्रावक और साधक ही नहीं बल्कि मानव मात्र के कल्याण का हेतु है। क्रोध हर परिस्थिति से बुरा है, क्षमा धर्म है और जब इस बात की चर्चा हो तो क्रोध की चर्चा होना स्वाभिक है क्योंकि दुनिया क्रोध से तो अच्छी तरह परिचित है पर क्षमा के व्यापक प्रभाव को नहीं जानती है। यह तो क्षमा को धारण करनेवाला ही इसके परिणाम को समझ सकता है। अंहकार क्षमा के रास्ते की अड़चन है, समर्पण ही इसका समाधान है। समर्पण जीवन को स्वर्ग बना सकता है। परीक्षा हमेशा अच्छे और सच्चे की ही होती है। कांच कोयले की परीक्षा नहीं होती है इसलिये मन को पवित्र बनाकर जीना सीखे, देह की शुद्धि से अधिक मन की शुद्धि की आवश्यकता है, निष्कपट व्यवहार से आनंद प्रकट होता है। शक्ल खराब हो यह चल सकता है पर व्यवहार और बोली से सबको जीता जा सकता है। जीवन परिवर्तन की प्रयोगशाला है, महापर्व की आराधना मन, वचन और काया में परिवर्तन यह पर्व की प्राथमिक शिक्षा है।

महापर्व धर्म समाज की रक्षा का पर्व है, धर्म बातों से नहीं आचरण से चलता है। महापर्व भी धर्म आधारित आचरण का आव्हान करता है, जुबान में सक्ती न हो इसलिये उसमें हड्डी नहीं दी है। कहो वहीं जो सच्चा हो, देखो वही जो सत्यं-शिव सुन्दरम् हो, खाओ वहीं जो प्रसाद हो पियो वहीं जिसमें अल्हद नाद हो, चाल वहीं हो जिसमें चरित्र हो और कार्य वहीं करो जो पवित्र हो ऐसा सब कुछ जीवन में होगा तो उसमें सुन्दरता कैसे नहीं आयेगी ? यही जिनदर्शन है और इसी की उद्घोषणा करता महापर्व पर्युषण है।

जैन दर्शन अत्यधिक प्राचीन दर्शन है, जैनत्व के मूल में ही समरसता, सद्भावना, सहअस्तित्व, परिग्रह और इन्द्रियों पर नियंत्रण की साधना के साथ जीवन निर्वाह करते हुए अंत में बोधि-समाधि और जिन गुणों की सम्पदा को प्राप्त करना हमारी संस्कृति की पहचान है, पर्व भी आठ दिनों तक लगातार यही घोषणा करते हैं कि जैनत्व सिर्फ वैराग्यमय धर्म नहीं बल्कि अपने दायित्व और जिम्मेदारियों के बोध से भी परिपूर्ण है। इसलिये तप का भी यही संदेश है कि हमने शरीर से अधिक सिद्धांतों को महत्व दिया है।

लोभ मान क्रोध मोह के त्याग के साथ संयममय जीवन जीने की बात करनेवाला पर्युषण पर्व को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि- चारो ओर आत्मा से रहनेवाले पाप कर्मो को जलाये, तपाये वह पर्युषण है। वैचारिक प्रदुषण से मुक्ति दिलाने का काम महापर्व करता है, जीवन में अध्यात्म से बड़ा सहारा कोई नहीं है, सुख-दुःख में समत्व कैसे आ सकता है। यह बात बतलाने ही पर्व आते है। पहले तप और इसके बाद त्याग और दान की महिमा बतलाई है। भोग के समय भी त्याग का भाव होना चाहिये। आसक्त भाव से नहीं अनासक्त भाव से भोग करने पर ही उपभोग सार्थक होता है।

संसार को बदलने की बात तीर्थंकर परमात्मा ने भी नहीं कही है, बदलना है तो हम अपनी दृष्टि को बदले संसार को नहीं। दृष्टि बदलेगी तो सृष्टि अपने आप ही सुन्दर दिखने लगेगी। अपने को बदलना ही आत्म आपरेशन है, महापर्व हमारी अपने आपकी साधना है, अपने आप का मंथन है, अपने अंदर का मंथन करें, आत्म अवलोकन करेंगे तो शुद्धात्मा के दर्शन होंगे। हमारी चेतना पर जो विकार उत्पन्न हो गये है उन्हें समझ कर ही दूर किया जा सकता है। यही हमारी उपासना है, पर्युषण का अर्थ भी यही है, मैं और मेरा के सामने हमें कुछ भी दिखाई नहीं देता है। मैं से हिंसा और घृणा जन्म लेती है और मेरा से परिग्रह की वृत्ति बढ़ती है, इससे मुक्ति का मार्ग पर्युषण दिखाते है। रागात्मक और द्वेषात्मक दृष्टि को बदलने के लिये ही महापर्व की आराधना है। पर्व अंतःकरण को पवित्र सरल निर्मल करने की आत्म औषधि है।

आगमोद्धारक का परिवार हजारों प्रियजनों का है, हमारा उनसे सम्पर्क संवाद बना रहता है, प्रमादवश कई बार हम आपकी अपेक्षा पर खरे नहीं उतर पाते है और कठोर शब्दों से आपके कोमल हृदय को आघात पहुंचा देते है, हमारा यह प्रयत्न रहेगा कि- हम अधिक सजग, सचेत, जागृत रहते हुए आप सबसे व्यवहार करें। केवल शब्दों के उच्चारण मात्र से नहीं बल्कि हम आत्मीयता से आपसे क्षमा चाहते है। आप सब हमें क्षमाभाव से प्रक्षालित करें यही मनोभाव।

✻ डॉ. सुभाष जैन

मैत्री भाव की रंग-रंगोली-रोशनी से सजाएंगे तन-मन को

✲ श्री वीररत्न विजयजी म.सा.

जैन जगत में आराधना का सर्वोच्च दिवस...।

आत्म शुद्धि का, जिन भक्ति का, जीव मैत्री का सर्वोत्तम पर्व...। अतिक्रमण हटाने का, अंतःकरण उजालने का, उपकरण सजाने का सर्वश्रेष्ठ प्रतिक्रमण करने का पावन समय...।

संवत्सरी का दिन तप का है, त्याग का है, जाप का है, ध्यान का है, साधना का है, उपासना का है, क्रोध की ज्वाला को शान्त करके क्षमा के दिव्य जल में स्नान करने का है। विकार को हटाकर संस्कार को प्रगट करने का है। दुष्कृत को समाप्त करके सुकृत की सुवास को फैलाने का है। भक्ति-भक्ति समर्पण का दिवस है।

महापर्व की आराधना का अंतिम दिवस है, जिसको कहा जाता है क्षमा-दिवस, प्रतिक्रमण दिवस, शुद्धि दिवस...। पूर्व के सात दिन तैयारी के है, हमें क्षमा भाव के लिये तैयार करने का। साधना तभी सफल होती है जब मस्तिष्क में दिल में किसी भी जीवात्मा के प्रति शत्रुता का भाव न हो, किसी को गिराने का विचार न हो।

क्षमापना के तीन प्रकार है- क्षमा मांगना, क्षमा देना, क्षमा करना। नमामि-वंदामि-खमामि आत्म शुद्धि के सूत्र है। मिच्छामि दुक्कड़म् का अर्थ है- मेरे दुष्कृत नष्ट न हो, मन, वचन कर्म स्वच्छ व स्वस्थ हो, सदा मैत्री भाव का संगीत गुंजता रहे हृदय में। कल्पसूत्र में उद्गार है- महावीर कैसे...? संते-पसंते-उवसंते।

संवत्सरी का प्रवचन श्रवण श्रद्धा की पराकाष्ठा का है। श्री भद्रबाहु स्वामी रचित कल्पसूत्र के प्राकृत भाषा में श्रवण का सौभाग्य मिलेगा। इन ग्रंथों के 1250 सूत्र है, अतः इस का नाम बारसा सूत्र है। लगभग 150 मिनिट तक सभी श्रद्धालु हाथ जोड़कर, कान खोलकर, मस्तक को झुकाकर सुनते है। अष्टप्रकारी पूजन से विधान करते हैं। शाम को संवत्सरी महाप्रतिक्रमण होता है। 365 दिन की गलतियों के प्रक्षालन का यह विधान है। 161 नवकार मंत्र का ध्यान, 300 श्लोक का पक्खी सूत्र, क्षति स्मरण का अतिचार सूत्र, सकल संघ से क्षमायाचना इस प्रतिक्रमण के मूल मंत्र है। जैन समाज के सभी व्यक्ति उपवास करके अपनी विचार आत्म-शक्ति का परिचय देते है।

क्षमा : एक नया जन्म

अपनी गलती को मानने के लिए बड़े साहस की जरुरत होती है। जब एक ने ''सॉरी'' कह दिया, अपनी गलती मान ली, तब दूसरे का कर्त्तव्य हो जाता है कि उसको क्षमा कर दे। सचमुच अपनी भूल को मानना क्षमा का अधिकारी बनना है। मजाक उड़ाने को आप कह लें कि यह अच्छा है कि जिन्दगी भर पाप किया और अंत में पापों को स्वीकार कर लिया, क्षमा मांग ली। पर सचमुच अपने पाप पर दुःख प्रकट करने वाला, क्षमा चाहने वाला निष्पाप हो जाता है, इसलिए कि वह दूसरा व्यक्ति हो जाता है। वह तो अपने आप मुक्त हो जाता है क्योंकि जो कर्म उससे लिपटे हुए थे, उन्हें वह सांप की केंचुल के समान छोड़ देता है। पाप स्वीकार और क्षमा प्रार्थना के सच्चे अर्थ यही हैं।

दो आँसु....

न तो मूसलधार बरसात की धार में....
न बाढ़ से उपनती नदी के प्रवाह से....
न उच्छूंखल सागर से उठती लहरों की मौजों में....
वह शक्ति है कि जो आत्मा पर चढ़े मैल को धो सके!
बेचारे तालाब, बावड़ी या कुँए की तो क्षमता ही क्यां?
अरे! आत्मा पर चढ़े मैल को धोने की सच्ची शक्ति तो
मात्र दो आँखों से बरसते पश्चाताप के आँसुओं में है
जो मात्र बरसों का ही नहीं वरन्
जन्मों- जनम के पाप धो लेने में समर्थ है।
आओ! हम भी पाप निवारण हेतु....
''दो ऑसु बहायें, पर याद रखना!
ऑसु जीवन का पासा जरुर पलट सकते हैं,
पर ये ऑसु मगरमच्छ के नहीं! जिगर के ऑसु हो।
दिखाई दें ऐसा दर्द का कोई दरिया नहीं होता,
ना ही पकते हैं ये ऑसु, किसी अलाव में कहीं,
इसलिये तो लोग ये जान नहीं पाते कि-
दिल जब जलता है तो धुंआ क्यों नहीं होता।

पाप की सजा भारी...!

***प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.**

गतांक से आगे...!

अध्यात्म मार्ग की प्रगति में अवरोधक पाप स्थानः-

गुणस्थानों की श्रेणी पर चढ़ते हुए और आत्म के गुणों विकसित करते हुए अध्यात्म मार्ग में प्रगति के पथ पर आगे बढ़ती हुई आत्मा के लिये पाप-स्थान ये अवरोधक है। गति अवरोधक का काम करते हैं ! आत्मा की विशुद्धि को रोकते हैं। अध्यात्म शुद्धि को कुंठित करते हैं। रति-अरति भी उसी पाप स्थानों की श्रेणी में है। दिखने में स्वरुप छोटा लेकिन बड़ा ही खतरनाक यह पाप स्थान.... आते समय कई पाप स्थानों को अपने साथ खींच लाता है। क्रोधादि, कषायों को, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्यादि कई पापस्थानों को खींच लाता है और यहां तक कि पापों के राजाप्राणातिपात-हिंसा और मृषावाद-झूठ आदि सभी को खींचकर ले आता है ! और महाभारत खड़ा कर देता है। अतः आत्मा को उपर उठने देने में विध्नरुप है। कर्म क्षय की प्रवृत्ति में विघ्नरुप है। धर्माराधना में विध्नरुप है। भगवदुपासना में अंतराय रुप है। किसी भी रुप से देखिए ये पाप आत्मा को लाभ कर्ता तो है ही नहीं। इनके जीवन में आत्मा को कोई फायदा नहीं है। अतः अध्यात्ममार्ग में प्रगति साधने के साधकों को पापस्थानों से सावधान रहना चाहिये और पाप प्रवृत्ति से बचना चाहिये ! प्रगति पथ पर चढ़ी हुई आत्मा को नीचे गिराने का एवं बाह्य पदार्थों में लुब्ध करने का काम रति कराती है। अतः इनसे बचना ही हितावह है।

साहित्य दर्पण में रति-अरति भावः-

साहित्य दर्पण में नौ रसों का विशेष विवेचन किया गया है जिसमें श्रृंगार रस भी एक रस बताया गया है। जो कामाग्नि को प्रदीप्त करता है। इन नौ ही रसों के नौ स्थायी भाव दर्शाए हैं। इनमें रति भाव यह श्रृंगार रस का स्थायी भाव है। यहां रति का अर्थ करते हुए कहा है कि- ''श्रृंगार रस मूलांकुर रति भावः'' श्रृंगार रस के मूल बीज के अंकुर रुप रति भाव है। यहां रति आनन्द अर्थ में है। श्रृंगार रस कामोद्दीपक है। कामाग्नि को प्रदीप्त करने वाला है ! अतः रति भाव बताया है। अंगना के अंगोपांगादि देखने आदि में रति भाव निर्माण होता है ! कामशास्त्र सुरत क्रीड़ा को रति क्रीड़ा के रुप में बताया है ! यहां भी रति का आनंद अर्थ ही लिया है परन्तु यह आनन्द काम-श्रृंगार का है ! विषय-वासना का है। जैसे सामने पदार्थ होता है तद्नुसार जीव उसमें रति मानकर आनन्द मानता है। अतः रति यह प्रिय अनुकुल पदार्थो में आनंद-सुख का अनुभव करानेवाला है और ठीक इसका विपरीत अरति भाव है ! अतः रति-अरति एक ही सिक्के के दो बाजु काट-छाप की तरह है ! सिक्का एक ही है। परन्तु काट-छाप की दिशा भिन्न है। वैसे ही वस्तु और व्यक्ति एक ही है, वही है, रति-अरति भाव अनुकूलता और प्रतिकूलता के कारण भिन्न-भिन्न है !

चित्त अरति-रति पांखशुंजी, उड़े पखी रे नित्य।
पिंजर शुद्ध समाधि में जी, रुंध्यो रहे ते मित्त॥

यहां पर चित्त-मन को पंखी की उपमा दी है। मनुष्य का मन एक पक्षी के जैसा है और पक्षी को जैसे दो पंख होते है वैसे ही मन रुपी पक्षी के रति और अरतिरुपी दो पंख है। इन्हीं दो पंखों की सहायता से यह मन उड़ता है। अरे तिर्यंच जाति का पक्षी तो उड़ते-उड़ते कभी थक भी जाता है। थक कर कहीं शांति से बैठता है। लेकिन यह मनरुपी पक्षी कभी थकता ही नहीं है। रति-अरति के इसके पंख मजबूत है। यह मन न तो रात्रि देखता है। न दिन न शहर न उज्जड़प्रदेश कुछ भी नहीं देखता और निरन्तर उड़ता जाता है। कभी रति में तो कभी अरति में कभी सुखानुभूति में तो कभी दुःखानुभूति में इसकी उड़ान निरंतर रहती है। अतः महापुरुष कहते है कि इसे उड़ते हुए रोकने के लिए इस देह का यह पिंजर काम में नहीं आएगा। इस देह पिंजर में से तो यह भाग जाता है। अतः इसे समाधिरुपी पिंजरे में बंद करके रखो तो ही स्थिर रह सकेगा। या तो रति अरति की वृत्ति कम करने से मन शान्त रहेगा यही उत्तम विकल्प है। चित्त की अस्थिरता ही मन को रति-अरति भाव में परिभ्रमण कराती रहती है। मन को रुचिकर लगे उसमें रति मानना और मन को जो न रुचे उसमें अरति मानना यह स्वभाव पड़गया है। इस आदत को छोड़नी होगी। वास्तव में रति-अरति की निश्चित व्याख्या ही नहीं है। क्योंकि मन का निश्चित ठिकाना ही नहीं है। किसमें सुख मानना और किसमें दुःख मानना यह मन के हाथों में है। यदि मन चाहे तो दुःखद वस्तु या व्यक्ति में भी सुख मान सकता है और नहीं तो सुखद वस्तु में भी दुःख मान सकता है। बादाम-पिस्ता का हलुआ भी ठुकरा सकता है और कलह खड़ा कर

सकता है। अतः रति अरति का कोई ठिकाना ही नहीं है। चूंकि मन का ही कोई ठिकाना नहीं है। जबकि परिस्थितियां जैसे बदलती रहती है उसी के आधार पर मन की विचारधारा बदलती रहती है।

''इदमपि गमिष्यति''- यह भी चला जाएगा-

एक राजा के गले में बचपन से एक तावीज में बंधा हुआ था। जो कि आनुवंशिक रुप से बाप दादाओं से चला आ रहा था। एक बार शत्रु राजा के साथ युद्ध हुआ। प्रबल शक्तिशाली शत्रु राजा ने इस राजा को हरा दिया। हारा हुआ राजा अकेला कुछ अंगरक्षकों के साथ जंगल में भाग गया। थका-थकाया एकान्त निर्जन स्थान में एक वृक्ष के नीचे बैठा था। चिन्ताग्रस्त था। अकेला था। कोई काम नहीं था। नींद नहीं आ रही थी। उसका हाथ गले में बंधे ताविज पर गया। राजा ने ताविज तोड़ दिया। निकाला, सोचा यह क्या है ? इसमें क्या है ? अब क्या है ? अब तो मैं हार ही गया हूं। एक पत्थर से तोड़ने लगा। ताविज में से एक छोटी कागद की चिट्ठी निकली जिस पर ये शब्द लिखे हुए थे- ''इदमपि गमिष्यति'' अर्थात् यह भी चला जाएगा। (This too Shall pass away) राजा इन शब्दों को पढ़कर विचार मग्न हो गया। क्या अर्थ है ? और सोचते सोचते राजा को समझ में आ गया। राजा थोड़ा खुश हुआ। रति भाव बढ़ा और राजा आनंद में आ गया। चलो यह भी चला जाएगा। यह पराजय भी चला जाएगा। यह जंगल वास भी चला जाएगा। ये दिन भी बीत जाएंगे। राजा को इन शब्दों ने आश्वासन दिया। हिम्मत बढ़ी। राजा खड़ा हुआ.... अरे अंगरक्षकों ! उठो चलो.... हिम्मत रखो। फिर सेना बटोरो। फिर शत्रु से युद्ध करेंगे, लड़ेंगे और जीतकर अपना राज्य वापिस लेंगे। ताबिज के दो शब्दों से सब चेतना आ गई। सभी जागृत हो गए। और पुनः सारी सेना बटोरो और एक दिन फिर युद्ध किया। योगानुयोग भवितव्यता से जीत गए। सारा राज्य हस्तगत किया। राजा पुनः राजगादी पर आरुढ़हुआ थोड़े महीने बीते थे कि पुनः एक दिन उसी तावीज पर हाथ गया। फिर उस चिट्ठी के शब्द राजा ने पढ़े। शब्द वे के वे ही थे। शब्द बदले नहीं थे। ''इदमपि गमिष्यति'' This too Shall pass away यह भी चला जाएगा। इन्हीं शब्दों को जंगल में पढ़कर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ था और आज शब्द ये ही है लेकिन राजा बहुत नाराज हुआ। बहुत ज्यादा गुस्सा आ रहा था। चिन्ताग्रस्त हो गया। अरे ! यह भी चला जाएगा ? यह जो राज्य मिला है। क्या यह भी चला जाएगा। बात तो सही है कि एक दिन यह राज्य तो जाएगा ही जाएगा लेकिन जीव भी चला जाएगा। तब समझो सब चला गया। उस समय जंगल में चिट्ठी पढ़कर प्रसन्न इसलिए हुआ कि राज्य मिलने की रति थी, रति में सुख था और नाराजी-चिन्ता इसलिए है कि मुझे मिला हुआ प्रिय राज्य हाथ से चला जाएगा। अतः अरति है। रति और अरति दोनों ही चिन्ता कराती है। दोनों में आर्तध्यान की मात्रा प्रबल है। रति में इष्ट संयोग की और इष्ट का ही वियोग न हो यह चिन्ता है। तो अरति में अनिष्ट का वियोग कैसे हो ? अनिष्ट का संयोग न हो यह सतत चिन्ता है रोग निवृत्ति हो इसमें भी आर्तध्यान ही चिन्ता है। नियाणे में प्राप्ति की चिन्ता है। इस तरह आर्तध्यान में रति-अरति की प्रक्रिया की चिन्तन प्रक्रिया को रोक देते हैं और चिन्ता की प्रक्रिया बहुत बढ़ा देते हैं। रति-अरति दोनों में ही चिन्ता है। अतः रति-अरति का सेवन करनेवाला प्रायः चिन्ताग्रस्त रहता है।

आपको कैसा सुख चाहिये ?

यदि आपको यह प्रश्न किया जाय कि आपको कैसा सुख चाहिये ? तो इसका उत्तर आप कैसे देगें ? उदाहरणार्थ- 1- क्या आपको क्षणिक सुख चाहिये या नित्य सुख चाहिये ? 2- क्या सुख आकर चला जाय ऐसा या आया हुआ हमेशा टिके ऐसा ? 3- क्या दुःख मिश्रित सुख चाहिए या शुद्ध अकेला सुख चाहिये ? 4- क्या स्वतंत्र सुख चाहिये या परतंत्र-किसी के पराधीन सुख चाहिये ? 5- क्या आपको भौतिक-पोद्गलिक सुख चाहिये कि आत्मिक-आध्यात्मिक सुख चाहिये ? 6- क्या आपको मन-वचन-शरीर-इन्द्रियों से भोगा जाय ऐसा सुख चाहिये या इनके बिना भी स्वयं आत्मा ही जिसका अनुभव करें वैसा सुख चाहिये ? जैसे आंख चली भी जाय तो भी आत्मा देखने का आनंद लेती ही रहे ? 7- और अन्त में पूछता हूं कि क्या आपको सुख चाहिये कि आनन्द चाहिये ?

ठीक है अध्यात्म मार्ग में ऐसे प्रश्न तो कई खड़ेकर सकते है ! परन्तु अब आप सही उत्तर दीजिए। आपकी चाहना क्या है ? एक बात तो निश्चित है आप किसी को भी पूछीए तो कोई भी यह नहीं कहेगा कि मुझे क्षणिक, आकर चला जाय ऐसा, या दुःख मिश्रित सुख या परतंत्र-पराधीन सुख चाहिये ? यह तो कोई नहीं कहेगा। परन्तु भौतिक-पौद्गलिक सुख चाहिये कि आध्यात्मिक सुख चाहिये ? इस प्रश्न का उत्तर देने में कई लोग चक्कर खाएंगे। उसी तरह मन-शरीर-इन्द्रियों से

जो भोगा जाय ऐसा या उनके बिना भी भोगा जाय ऐसा सुख ? या विषय-वासना जन्य वैषयिक सुख चाहिये या निर्विषयक सच्चिदानन्द, परमानन्द, स्वगुणरमणता का सुख चाहिये ? इन प्रश्नों का उत्तर देना जटिल हो जाएगा, क्योंकि आपने कभी आध्यात्मिक-नित्य, स्वतंत्रा, निर्विषयक, शाश्वत अनन्त सुख की कल्पना ही नहीं की है। अतः आपने तो सिर्फ अनुकूल पदार्थों में रति जन्य सुख की ही कल्पना की है ! इतना ही आपके ज्ञान में है। आगे के सुखों के विषय में आपने कभी सोचा ही नहीं है। मन-शरीर-इन्द्रियों के बिना भी आत्मा सुख का अनुभव कर सकती है ? यह बात आपकी बुद्धि में बैठ ही नहीं रही है। अतः आप कैसे सोचेंगे ? अतः आपके सुख की कल्पना क्षुद्र है, मर्यादित है ! मर्यादित है ! अतः रति-अरति भाव है।

परन्तु इतना जरुर ध्यान में रखिए कि जिन पदार्थों में आपने सुख की कल्पना की है वे पदार्थ ही नित्य नहीं है। वे ही क्षणिक है, नाशवत है। विनाशी है। तब फिर उनके आधार पर टीका हुआ सुख नित्य-शाश्वत-चिरस्थायी कैसे से होगा ? यह तो संभव ही नहीं है। इसलिए ऐसे अनुकूल प्रिय पदार्थों और भोगों की प्राप्ति में ही रति भाव जन्य आपका सुख रहेगा और उन्हीं के अभाव में, वियोग में अरति जन्य दुःख भी आपको होगा। अतः संसारी जीव का सांसारिक सुख भी दुःख मिश्रित ही रहेगा। क्योंकि जहां रति है वहीं अरति भी साथ ही है। अतः रति-अरति ही सुख-दुःख का साधन-माध्यम बन गई है और ये ही पाप की जड़ है ! यहीं से पाप की उत्पत्ति होती है। एक बार रति भाव तीव्र बना कि फिर सुख की लालसा सैकड़ों पाप कराएगी ! कोई कहेगा मुझे तो चोरी करने में ही मजा आती है। कोई कहेगा मुझे तो व्यभिचार, मैथुन सेवन के वैषयिक सुख में ही मजा आती है और कहेगा मुझे तो परनारी से संबंध करने में ही मजा आती है। इस तरह लाखों-करोड़ों जीवों ने अपनी-अपनी मान्यता मान रखी है। अब क्या होगा ? सबकी अपनी-अपनी मान्यता अपने-अपने रति-अरति के भाव पर आधारित है।

अब आंसुओं को पोछिये और मुस्कराईये
जो कुछ हो चुका है उसे भूल जाईये
दीवारें नफरतों की अब तो गिराईये
जैसे भी हो दिलों को दिलों से मिलाईये।

- चन्द्रयश

रजनीश का बिचारे का क्या हाल हुआ ? केवल वैषयिक सुख का लालचु और लोगों को सेक्स के पीछे पागल करने वाला और संभोग से समाधि बताने वाला तथाकथित बन बैठा भगवान बैचारा आज हथकड़ीयों में जेल में बंदिस्थ रहा। वर्षो से उसे मारने के लिये इतने पेंतरे क्यों रचे गये ? आखिर क्यों बेचारे को अपने ही हाथों अपने वाद की होली जलानी पड़ी ? इसी की भोग लीला ने इसका भोग ले लिया। बात सही ही है-अति उत्कट पाप का फल यहीं भोगना पड़ता है। अनाचारी, व्यभिचारी दुराचारी की पाप लीला ही उसे सजा देती है। इसलिए सही ही कहा है कि- पाप की सजा बड़ी भारी होती है। विषय-वासना के सुख की कभी तृप्ति नहीं होती है। अतः सनातन काल से यह कहा जा रहा है कि-''भोगाः न भुंक्ता वयमेव भुंक्ता''-अरे ! भोग नहीं भोगे गए हम ही भोग गए। हमारा ही भोग लगा, भोग बन गए। अतः भोग निवृत्ति ही सत्य-शाश्वत धर्म है। यह कलियुग है, इस कलियुग में ऐसे भोगी भगवान तो कई खड़े होंगे और चन्द दिनों में गिरेंगे भी बूरी हालत से। भोग लालसा-अतृप्त तृष्णा यह एक पागलपन है। अतः इनसे बचे वही भाग्यशाली है।

(आगे और भी है...!)

पांच क्षमा

उपकार क्षमा- माता-पिता, सेठ आदि उपकारी है, यह समझकर उनका सहन करना।

अपकार क्षमा- यदि मैं क्रोध करुंगा तो सामने वाला मेरी लाश गिरा देगा वैसा बलवान है। अतः उसके सामने क्षमा रखने में ही मजा है- यह सोचकर सहन करना है।

विपाक क्षमा- यदि मै क्रोध करुंगा तो मुझे ही हानि होने वाली है।

वचन क्षमा- मेरे प्रभु की आज्ञा है कि क्षमा रखें। आज्ञा में अन्य कोई विचार होना ही नहीं। ऐसे विचारपूर्वक रखी हुई क्षमा।

स्वभाव क्षमा- क्षमा तो मेरा धर्म है, स्वभाव है। इसे मैं कैसे छोड़ सकता हूं ? चन्दन को कोई काटे, घिसे अथवा जलाये, फिर भी क्या वह कभी सुगंध फैलाना छोड़ता है ? सुगन्ध चन्दन का स्वभाव है। क्षमा मेरा स्वभाव है। ऐसी भावना से रहनेवाली सहज क्षमा है।

देव जाति के भेद-उपभेद

✻ आ.श्रीमद् विजयजिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

संसारी जीव 1- नरक गति, 2- तिर्यंच गति 3- मनुष्य गति तथा 4- देव गति- इन चार गतियों में परिभ्रमण करता है।**''देवता''** का अर्थ है जो विशिष्टशक्तियों से सम्पन्न हो। देवताओं में कुछ जन्मजात विशेषताएं होती है- जैसे उनका वैक्रिय शरीर। इस शरीर में वे चाहे जैसा छोटा-बड़ा एवं सूक्ष्म-स्थूल रुप बना सकते हैं। तीव्र गति, विशेष प्रभायुक्त शरीर तथा उत्तम प्रकार के काम -भोग सुखों की उपलब्धि।

देवों की चार गति (प्रकार) है- 1- भवनपति (असुरकुमार) आदि 2- वाणव्यन्तर (भूत, पिशाच आदि) 3- ज्योतिषी (सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, तारा) तथा 4- वैमानिक देव (ऊपर सौधर्मकल्प आदि विमानों में रहनेवाले)

1-भवनपति देव- इन देवों का निवास स्थान मेरु पर्वत से नीचे अधोलोक में प्रथम नरक भूमि रत्नप्रभा के बीच में बने भवनों में है। इनके मुख्य रुप से दो भेद है- 1- भवनपति तथा 2- परमाधामी।

भवनपति देवों के दस भेद इस प्रकार है- 1- असुरकुमार 2- नागकुमार 3- सुपर्णकुमार 4- विद्युत कुमार 5- अग्निकुमार 6- द्वीपकुमार 7- उदधिकुमार 8- दिशाकुमार 9- वायुकुमार 10-स्तनितकुमार।

इनके किसी के शरीर का रंग श्वेत, किसी का काला, किसी का सोने जैसा चमकदार तथा किसी का लाल, हरा आदि होता है। ये क्रीड़ाप्रिय तथा सुकुमार प्रकृति के देव होते हैं। किसी की पूजा-प्रार्थना से शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं। इनके मुकुटों पर बने अलग-अलग चिन्हों से इनकी पहचान हो जाती है। उत्तर दिशा में तथा दक्षिण दिशा में रहने के कारण इनके 20 भेद भी होते हैं।

भवनपति देवों की दूसरी जाति है- परमाधामी देव। ये बड़े क्रूर, कठोर तथा निर्दय स्वभाव के होते हैं। दूसरों को पीड़ा देने में ही इन्हें आनन्द आता है। ये देव तीसरी नरक तक नरक में रहे नारकी जीवों को तरह-तरह की यातनाएं देते रहते हैं। इनके 15 भेद है।

2- व्यंतर जाति के देव- ये भी मुख्यतः दो प्रकार के हैं- 1- व्यन्तर 2- वाण व्यन्तर। ये देव मेरु पर्वत के नीचे तथा भवनपति देवों से ऊपर मध्यलोक की सीमा में रहते हैं।

व्यन्तर देव आठ प्रकार के है- 1- पिशाच 2- भूत 3- यक्ष 4- राक्षस 5- किन्नर 6- किंपुरुष 7- महोरग 8- गंधर्व।

वाणव्यन्तर देवों के भी 8 भेद हैं- 1- आणपत्री 2- पाणपत्री 3- ऋषिवादी 4- भूतिवादी 5- कंदित 6- महाकंदित 7- कूष्मांड 8- पतंगदेव।

व्यंतर देवों की एक जाति और है- जृम्भक देव। तिर्यक् लोक में रहने से इन्हें तिर्यक्जृम्भक भी कहते हैं। इनके 10 भेद है।

3- ज्योतिषी देव- इनके पांच भेद है- 1- चन्द्र 2- सूर्य 3- ग्रह 4- नक्षत्र और 5- तारा। इनके विमान सदा ज्योतिर्मान (प्रकाशमान) रहने से इनको ज्योतिषी कहते हैं। मेरु पर्वत से 790 योजन ऊपर और 900 योजन तक के आकाश (अंतरिक्ष) में ये देव मेरु पर्वत के चारों तरफ परिभ्रमण करते रहते हैं। अढ़ाई द्वीप में ये देव मेरु पर्वत की प्रदक्षिणा करते रहते हैं। इसलिये ''चर'' कहलाते हैं। इनके भ्रमण के कारण ही दिन-रात, घड़ी, मुहूर्त, मास, वर्ष आदि होते हैं। अढ़ाई द्वीप के बाहर के क्षेत्र में ये सदा स्थिर रहते हैं। इसलिए जहां दिन है वहां सदा दिन ही रहता है। जहां रात है, वहां सदा रात रहती है। इस प्रकार पांच ज्योतिषी देवों के चर तथा स्थिर यो 10 भेद हो जाते हैं।

4- वैमणिक देव- ऊर्ध्वलोक में जो देव विमानों में निवास करते है वे वैमानिक देव कहलाते हैं। उनके भेद इस प्रकार हैं- 1- बारह कल्पोपत्र देव, 2- कल्पातीत देव- यह भी दो प्रकार के होते हैं- (1) नव ग्रैवेयक देव, (2) पांच अनुत्तरौपपातिक देव 3- तीन किल्विषिया देव 4- नव लोकांतिक देव।

सौधर्मकल्प आदि 12 कल्प विमान, उनके ऊपर नौ ग्रैवेयक विमान तथा उनसे ऊपर पाँच अनुत्तर विमान हैं।

पंचम देवलोक के पास त्रसनाड़ के किनारे पर जो 9 प्रकार के लोकांतिक देव रहते हैं। तीर्थंकर भगवान जब दीक्षा लेने का विचार करते है तब ये देव आकर उनकी अनुमोदना करते हैं।

प्रथम, तृतीय तथा छठे देव लोक के नीचे तीन प्रकार के किल्विषिक (सफाई करने वाले) देव रहते हैं।

इस प्रकार 12+9+5+9+3 कुल 38 भेद वैमानिक देवों के है। चारों जाति के कुल 99 देव होते है।

देवों की उत्पत्ति स्थान को उपपात सभा कहते हैं। यहां पर फूलों जैसी कोमल शय्या पर देवों की उत्पत्ति होती है। उत्पत्ति के समय प्रत्येक देव अपर्याप्त अवस्था में होता है। उत्पत्ति के 48 मिनट (अंतर मुर्हुत) के भीतर वे आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास तथा भाषा-मनः पर्याप्ति पूर्ण कर लेते हैं। तब उनकी पर्याप्त अवस्था कहलाती है। इस प्रकार 99 अपर्याप्त तथा 99 पर्याप्त कुल 198 भेद देवों के होते हैं। **- तत्वार्थ सूत्र, अध्याय 4**

पर्युषण पर्व के मूल सिद्धांतों को कर लो आत्मसात

विचारों के प्रदूषण का प्रक्षालन करना ही पर्युषण है

> **भारतीय संस्कृति के विविध रंग हैं। हमारी धार्मिक एवं सामाजिक संस्कृति का हर पहलू मानव को शिक्षाप्रद संदेश देता है। पर्व आते हैं, त्यौहार मनाए जाते हैं और लोग उल्लास में डूब जाते है लेकिन यह नहीं देखते कि यह पर्व क्यों मनाया जा रहा है ? इसके पीछे क्या संदेश छिपा है और हमें क्या आत्मसात करना है, क्या छोड़ना है, जिस दिन हम यह भली-भांति जान जाएंगे, उसी दिन हमारा पर्व मनाना सार्थक हो जाएगा, उसी दिन हमारा जीवन परिवर्तित हो जाएगा। मै बात कर रहा हूं इस समय मनाए जा रहे जैनियों के सबसे बड़े पर्व महापर्व पर्युषण की। क्या है पर्युषण पर्व और क्या है इसे मनाने के पीछे मूल उद्देश्य ? आज हम इसी पर विचार और विश्लेषण कर रहे हैं। विचारों के प्रदूषण का प्रक्षालन करना ही पर्युषण है लेकिन तुमने कभी विचारों का प्रदूषण दूर करने का यत्न ही नहीं किया, तुम इस पर्व की मूल भावना तक पहुंचे ही नहीं, इसके इर्द-गिर्द के आभा मंडल और दिखावटीपन में ही मग्न रहे।**

आत्मशुद्धि में लगाओ मनः-

आज हमने साधना के पर्व को भी ''मानव प्रतिष्ठा'' का अवसर और विषय बना लिया है। प्रत्येक जैन अपने जीवन में 50 तो पर्युषण पर्व तो मनाता ही होगा लेकिन यदि तुमने सिर्फ 10 पर्युषण पर्व भी आत्मशुद्धि के लिए समर्पित कर दिए तो निश्चित ही जीवन सार्थक हो जाएगा और पर्व भी मन जायेगा लेकिन खेद की बात है कि तुममें से कितने लोग है जो ऐसा करते हैं ? हमने तो इस पर्व को भी प्रतिस्पर्द्धा का विषय बना लिया है। आत्म शुद्धि की साधना के बजाए सभी लोग इसी विचार-मंथन में व्यस्त रहते हैं कि विगत पर्युषण पर्व पर मेरा सिर्फएक मकान था, इस बार तीन हो गए, भले ही उनमें से दो मकान खाली पड़े हों और पिछले पर्युषण पर मेरे पास दो जोड़ी सूट या दो साड़ियां थी और इस बार चार जोड़ी सूट और चार साड़ियां हो गई। इस बार तो नाते-रिश्तेदार तो भी बढ़गए या फिर हम आत्मशुद्धि के लिये प्रयत्न करने के बजाए यह विचार करने में लगे रहते हैं कि विगत पर्युषण पर्व पर अमुक साधु-संत की सीमित प्रतिष्ठा थी जो इस बार बढ गई है।

देह से ज्यादा विचारों की करें साधनाः-

मात्र उपवास करने का नाम ही पर्युषण नहीं है, लोग तो बस यही सोचते है कि अमुक ने कम उपवास किये और मैंने ज्यादा, उसकी शोभायात्रा कम गाजे-बाजे से निकली और मेरी शोभायात्रा ज्यादा धूमधाम से निकली, इससे काम नहीं चलेगा। इस दिखावटीपन व प्रतिस्पर्धा से उबरना होगा। इन संकीर्ण चर्चाओं और छोटी मानसिकता से बाहर निकलना होगा। कीमत संख्या की नहीं बल्कि साधना की होती है। हमें चिन्तन करना होगा कि कहीं हमारी तपस्या और त्याग भी दिखावा तो नहीं बनती जा रही है। कहीं अपनी तपस्या को दिखाकर उसका पुण्य क्षीण तो नहीं कर रहे। पर्युषण नए आकर्षक कपड़े पहनने या श्रृंगार कर सजने-धजने का त्यौहार नहीं है बल्कि यह साधना का पर्व है। देह से ज्यादा विचारों की साधना करें। बड़े दु:ख के साथ कहना पड़ रहा है कि पूरे देश में ही पर्युषण का ऐसा स्वरुप हो गया है। तुम खूब नाच-गा लिये लेकिन पर्युषण तो वास्तविक तौर पर मना ही नही पाए। हकीकत में तो आज तक जीवन में पर्युषण आया ही नहीं, यदि एक ही आ जाए तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा। मैं बता रहा हूं कि यह पर्व आत्मशुद्धि व आत्म प्रक्षालन के लिए बिना है, सभी को अपनी कमियां का अवलोकन करना होगा और उसे दूर कर स्वयं को सुधार के पथ पर अग्रसित करना होगा, तभी यह पर्व मनाना सार्थक होगा।

दस धर्मो के सार को जीवन में उतारो तभी टूटेगा आशक्तियों का गढ़ः-

क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिन्चन्य और ब्रह्मचर्य, ये दस धर्म है पर्युषण के। अब यह बताओ कि तुमने इनमें से कितने पर्वो को अपने जीवन में ढाला, क्या इनमें से किसी एक पर भी अपने जीवन को केंद्रित किया ? मुझे मालूम है कि तुम मेरे सामने झूठ नहीं बोलते हो

इसलिये मेरे इस प्रश्न पर तुम्हारा उत्तर नकारात्मक ही होगा। जब तुम्हारे हृदय में धर्म का निवास ही नहीं हुआ तो ये दस धर्म पूजने का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। अभी तक आशक्तियों के गढ़को तोड़ा ही नहीं। निरुद्देश्य ही रह गया तुम्हारा इस बार का भी पर्युषण पर्व। सब की सब विषयों में ही आशक्त बने रहे जबकि यह पर्व आध्यात्मिक साधना का है। छल, कपट, मोह-माया छोड़ने की हिम्मत ही नहीं जुटा सके। बस, हर साल पर्युषण बढ़ते गए, संतानों की वृद्धि होती रही, एक के बाद एक अट्टालिकाएं खड़ी होती गई लेकिन अभी तक मन और हृदय की उच्च अट्टालिका खड़ी नहीं कर सके। जो साधना भगवान महावीर ने की, क्या तुम रंच मात्रा भी उसके निकट पहुंचे या पहुंचने के बारे में विचार किया, नहीं न, तो फिर आपका इस बार का पर्युषण भी निरर्थक ही जायेगा।

मन में शुद्धि का वास होना चाहिये वहां अभी भी तमाम प्रदूषण व्याप्त है:-

जब हमने अनेक बार क्षमा मांग ली तो दोबारा क्रोध क्यों आता है ? कई बार यह पर्व मनाने के बाद भी तुम्हारे जीवन से दुर्भावनाएं कम क्यों नहीं हुई ? मुझे तो यही प्रतीक होता है कि तुम सारा जीवन तनाव और विद्वेष में ही उलझे रहना चाहते हो, यदि ऐसा नहीं है तो तुम इस महान पर्व के माध्यम से आत्मशक्ति एवं आत्मशुद्धि के पथ पर चलते। जिस हृदय में धर्म का वास होना चाहिये, वहां अभी भी अधर्म का राज है, जिस मन में शुद्धि का वास होना चाहिये वहां अभी भी तमाम प्रदूषण व्याप्त है। जब कोई आत्मा और अपने मन में झांकने की कोशिश नहीं करेगा तब तक अपने जीवन में पर्युषण पर्वो की कितनी भी संख्या बढ़ा लो, लाभ होने वाला नहीं है, हां लोग अपने पड़ौसी या अपने रिश्तेदार से अच्छी प्रतिस्पर्द्धा कर सकते है कि उसने आठ व्रत रखे और हमने दस। अपने मन-मस्तिष्क में धर्म की प्रवाहना होने ही नहीं दी, तो पर्व और धर्म के नाम पर सिर्फ औपचारिकता के निर्वाहन में ही खूद को उलझाए हुए है लोग। क्या किसी ने यह विचार किया कि पिछले पर्युषण से लेकर इस बार के पर्युषण के अंतराल में मित्राता बढ़ाई या वैमनस्यता। कितने लोगों के प्रति आपके हृदय में भाईचारे का भाव उपजा और कितनों के प्रति दुराग्रह। सच लेकिन कड़्वी बात तो यह है कि हमारे विचारों के प्रदूषण को धोने के बारे में सोचा ही नहीं। जबकि प्रयास यह होना चाहिये कि कम से कम इस बार का पर्युषण पर तो हमारी मानसिकता और सोच में वैचारिक परिवर्तन आए और भगवान महावीर स्वामी की आत्म-साधना हमारे जीवन में साकार हो। प्रत्येक पर्व कोई न कोई संदेश देता है, हमें उस पर्व की ऊपरी चमक-दमक या आभा मंडल में न उलझकर उसमें छिपी मूल भावना और संदेश तक पहुंचाना चाहिये और उसे आत्मसात कर न सिर्फ अपने जीवन बल्कि परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व की भौतिक प्रगति के साथ आध्यात्मिक उन्नति के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहिये।

....तो वाकई में तुम्हारा इस बार पर्युषण पर्व मनाना सार्थक होगा:-

तुमने मेरी अवज्ञा कभी नहीं की है। विश्वास के साथ कह रहा हूं कि इस बार भी नहीं करोगे। इस बार के पर्युषण पर्व पर मैं तुमसे एक चीज मांग रहा हूं कि- अपने विचारों के प्रदूषण को धो लो, खुद को आत्मशुद्धि के पथ पर प्रशस्त करने का प्रयत्न करो। तुम्हारा प्रयत्न निष्फल नहीं जाएगा। दृढ़ निश्चय के भाव से संकल्प ले लोगे तो तुम्हारी आत्मा और मन-हृदय सभी कुछ स्वमेव शुद्ध होने लगेंगे, संक्रमण दूर होने लगेंगे, तुम्हारा मन निष्पाप हो जाएगा, अपने मन को साधना में लीन करो, व्यर्थ के संक्रमण स्वमेव ही छंट जाएंगे। तभी तुम्हारा इस बार का पर्युषण पर्व मनाना वाकई में सार्थक होगा। वरना जीवन व्यतीत हो जाएगा, हर वर्ष पर्युषण पर्व आता रहेगा, तुम हर वर्ष दस धर्मो की शाब्दिक एवं औपचारिक आराधना करते रहोगे लेकिन जब तक तुम इस पर्व की मूल भावना को अपने दिल से आत्मसात नहीं करोगे तब तक कोई लाभ होने वाला नहीं है। मुझे तुम पर पूर्ण विश्वास है कि इस बार ऐसा नहीं होगा। इस बार के पर्युषण पर्व पर आप सभी को मेरा यही संदेश है कि आत्मसाधना करें, मन और आत्मा की शुद्धि करें, वैचारिक प्रदूषण से मुक्ति पा ले और भगवान महावीर स्वामी की तरह अपने मन-हृदय और आत्मा को विराट स्वरुप की ओर उन्मुख करने का प्रयत्न करें। तुम ऐसा ही करोगे न...!

क्षमा की रंगोली हो घरों में,
पर्व क्षमा का मने घरों में....
क्षमा मांगे क्षमा करें,
क्षमा बसाये हम दिलों में....

मैं अंजना

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

गतांक से आगे...!

आकाश में से गिरनेवाले को धरती आश्रय देती है। किन्तु यहां तो धरती ने भी आश्रय देने का इन्कार कर दिया था। ससुराल से त्रस्त पुत्री मां-बाप के पास जाती है.... और कहां जायेगी ? मां ही ऐसी व्यक्ति है जो संतान को वात्सल्य से नहला देती है। उनके गुन्हाओं को माफ करके भी सन्मार्ग पर चढ़ा देती है। ''मा ते मा, बीता बधा वगड़ाना वा।'', ''मीठा मधु ने मीठा मेहुला रे लोल.... तेथी मीठी ते मोरी माय रे जननीनी जोड़ सखी नहीं जड़े रे लोल।'' ''भगवान सभी जगह नहीं पहुंच नहीं सकता इसीलिए उसने माता का सर्जन किया है।'' माता विषयक ऐसी कितनी ही उक्तियां कविओं ने कही हैं.... परन्तु मेरे लिये तो मानो सभी उक्तियां गलत साबित हुई।

''कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति'', ''पुत्र कुपुत्र हो सकता है, लेकिन माता कुमाता कभी नहीं होती। ''माता की महिमा को प्रकट करती ऐसी अनेक उक्तियां याद आने लगी, लेकिन किस काम की ? मेरी माँ ऐसी उक्तियों के हिसाब से चलने के लिये थोड़ी ही बंधी हुई थी।

बहन ! अब तू ही सोच ले। मेरे दुःख के पास तेरा दुःख कितना गिना जाय ? ऐसे दुःख के हिमालय टूट पड़े तो भी मैंने अपना सत्व नहीं खोया। मेरी धर्मश्रद्धा नहीं खोई। धर्मश्रद्धा ही मेरी बड़ी पूंजी थी।

ससुराल से निकाली गई, पियर से तिरस्कृत हुई मैं सखी के साथ जंगल की तरफ चल पड़ी। हाँ.... अब जंगल ही मेरा आधार था। दूसरी जगह कहां जाऊं ? कहां रहूं ? अगर किसी नगर में रहूं तो दुष्ट लोग लाचारी का लाभ उठाते। सज्जन मनुष्य तो कलंकिता से दूर रहने में ही सार समझते हैं और सामान्य मनुष्य कुछ नहीं कर सकते। अतः मेरे लिये जंगल ही ठीक था।

सखी के साथ मैं जंगल में गई। पूर्ण समय पर बालक का जन्म हुआ। मैंने अपार चूमीयों के साथ उस बालक को प्रेम से नहला दिया। मेरा मन बोल रहा था- बेटा ! तेरा जन्म आज जंगल में हुआ है। यदि राजमहल में हुआ होता तो कोई अलग तरह का उत्सव ही चालू होता। लेकिन कोई हरज नहीं। बेटा ! बड़ा होकर तू ऐसा बनना कि तेरे कदम-कदम पर उत्सव ही होते रहे। जंगल मंगलरुप बन जाये।

''बेटा ! बहुत ही पराक्रमी, वफादार और सत्वशील बनना। जीवन में कभी हिम्मत मत हारना।''

मृगबाल की तरह एकदम कुदरती तरीके से बालक का पालन-पोषण होने लगा।

एक गुफा में श्रीशांतिनाथ भगवान की प्रतिमा बनाकर उसे मैं पूजने लगी। जंगल में शांतिपूर्वक रहने लगी।

एक बार जंगल में पधारे हुए किसी मुनि से मुझे जानने को मिला कि पूर्व भव में किये हुए मेरे पाप के कारण मेरे जीवन में दुःख आया है। पूर्व भव में मेरी सपत्नी को बहुत परेशान की थी। वह बेचारी भली बाई थी। हमेशा भगवान की पूजा करती, परन्तु मैं उसे धूर्त कहती। काम करते जोर आता है इसलिए धर्म करने बैठी है- ऐसा मैं सोचती। मनुष्य अपनी योग्यतानुसार ही दूसरों के विषय में अभिप्राय दे सकता है। एक बार मैंने ईर्ष्या से भगवान की मूर्ति को गंदगी में छुपा दी। वह बेचारी भगवान के बिना आकुल-व्याकुल हो गई, अन्न-जल छोड़ दिये। मात्र बारह मुर्हूत में उसकी दयनीय हालत देखकर मुझे दया आ गयी। मैंने ढूंढने का नाटक किया और वह मूर्ति दे दी। उस पाप के उदय से मुझे 12 वर्ष तक पति का वियोग हुआ।

मुनि जब मेरा पूर्वभव कह रहे थे उसी समय आकाश में जाता एक विद्याधर का विमान रुक गया। विद्याधर ने नीचे देखा तो मुनि थे। वह विद्याधर मेरे सगे मामा सूर्यकेतू थे। वे हम तीनों को लेकर आकाश मार्ग पर चले।

मेरा छोटा-सा बालक मेरी गोद में था। उसके अंदर शक्ति का महासागर हिलोर ले रहा था। उसकी चंचलता और उसके तूफानों में यह स्पष्ट दिखाई देता था। जहां-तहां वह छलांग लगाता था। विमान पर बंधे हुए सुंदर झुम्मर लेने बार बार छलांग लगाता बालक अचानक ही विमान से नीचे गिर पड़ा। मेरे मुंह में से गहरी चीख निकल पड़ी। अरेरे.... नसीब ! तूने मुझ से बालक भी छिन लिया ? मेरा हृदय घबरा रहा था। मामा ने तुरन्त ही विमान रोका। बालक जहां पड़ा था वहां तलाश की तो आश्चर्य का पार न रहा। क्योंकि बालक जिस चट्टान पर पड़ा था वह टूटकर चूर-चूर हो गई थी और बालक खिलखिलाकर हंस रहा था। मेरे मामा ने आवाज दी- अरे भानजी ! अब सयानी हो ! ले यह तेरा बालक ! देख, इसे कहीं

पीड़ा हुई हैं ? इसका बल तो तू देख। चट्टान टूट गई, किन्तु बालक अखण्ड हैं। अभी भी इतनी शक्ति है तो बड़ा होकर वह कितना शक्तिशाली बनेगा ? इसकी कुछ कल्पना तो कर।

मैंने अपने लाल को हाथ में ले लिया और अपार चूमीयों से नहला दिया।

अब हम सूर्यपुर में मामा के यहां सूखपूर्वक रहने लगे। जंगल में पधारे हुए ज्ञानी मुनि ने कहा ही था कि- अब थोड़े ही समय में दुःख की रात बित जायेगी और सुख की प्रभात प्रकट होगी। मेरे हृदय की खुशी कह रही थी कि अब नजदीक के समय में पति से मिलन होगा।

और सचमुच ही एक दिन मैंने सभा में आगंतुक को देखा। देखते ही मुझे याद आया- अरे, यह तो मेरे पति का मित्र लगता है, ऋषभदत्त ! ऋषभदत्त तुरन्त ही मुझे पहचान गया। वह मुझे ढूंढने ही आया था।

उसने मेरे सुनते मेरे मामा राजा सूर्यकेतु को कहा- राजन् ! हम युद्ध खत्म होने के बाद घर लौटे। पवनंजय ने अंजना के बारे में पूछा तब उसकी माँ ने कहा- बेटा ! उस कुलटा को तो मैंने घर से निकाल दी। वह निकालने जैसी ही थी। यह सुनते ही पवनंजय को जोरदार धक्का लगा। उसको जीवन खारा जहर लगा। वह तो जिंदा जलकर मर जाने के लिये तैयार हो गया। मैंने बहुत मुश्किल से रोका है और कहा है- तू तीन दिन इंतजार कर। तीन दिन में यदि अंजना नहीं मिले तो तेरी इच्छानुसार करना।

उसके बाद मैं अंजना को ढूंढने निकला- फिरते-फिरते यहां सूर्यपुर के उपवन में आया तब स्त्रीयों के मुंह से सुना- यहां राजा की भानजी अंजना आई है। उसका छोटा-सा लड़का क्या तेजस्वी है। सूर्य भी निस्तेज लगे। इतना सुनते ही मुझे लगा- अंजना यहीं कहीं होनी चाहिये। मैं अंजना को लेने ही आया हूं।

मेरे सन्मुख देखाकर ऋषभदत्त ने कहा- अंजना भाभी ! चलो प्रहलादनपुर ! आपके बिना मेरा मित्र नहीं जीएगा। आज अंतिम तीसरा दिन हैं। आज अगर हम वहां नहीं पहुंचे तो हमेशा के लिये हाथ धो देने पड़ेंगे। आप प्यारे पति को खो देगी और मैं प्राणप्रिय मित्र खो दूंगा।

सूर्यकेतु राजा की अनुज्ञा लेकर मैं पुत्र और सखी के साथ चल पड़ी। हमारा विमान घरर.... करते प्रहलादनपुर के बाहर उतरा। मेरे पति अग्निशरण लेने की तैयारी कर रहे थे वहीं मुझे देखाकर लोगों ने आवाज लगाई।

अंजनादेवी ! जल्दी पधारो। पवनंजय के प्राण खतरे में है।अंजनादेवी ! जल्दी पधारो। पवनंजय के प्राण खतरे में है। लोगों की आवाजें सुनकर पवनंजय आत्महत्या करने से रुक गये।

हम दोनों का मिलन हुआ। प्रीति दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। वियोग के बाद का संयोग अत्यंत मधुर होता है।

हमारे पुत्र का नाम हमने रखा- हनुमान ! क्योंकि उसकी हनु (हडपची-दाढ़ी) सुंदर नोकदार थी। हनुमान का नाम तो आपने सुना ही होगा ? राम-रावण के युद्ध में राम के वफादार सेवक हनुमान का पराक्रम आपने नहीं जाना हो-ऐसा नहीं हो सकता।

उसके बाद तो हमने एक साधु भगवंत के पास वैराग्य वासित होकर दीक्षा ली। आज मेरे पति पवनंजय मुनि है और मैं अंजना साध्वी हूं। बोल, अब तू ही बोल : मेरे जितने दुःख तेरे जीवन में आये हैं।

नहीं.... महाराज ! नहीं.... आपका जीवन सुनते तो मेरा हृदय कांप उठा। आपके दुःख के मेरु के पास मेरे दुःख तो राई जितने भी नहीं है। महाराज ! आपने तो कमाल कर दिया। दुःखों के बीच आपने रखी हुई दृढ़ता दुनिया के लिये दीप-स्तंभ रुप बनेगी। आपका निर्मल शील विश्व के लिये प्रेरणारुप बनेगा। आर्यावर्त में हो जानेवाली महासतीयों में अग्रिम पंक्ति में आपका नाम आयेगा। बड़े-बड़े आचार्य भी आपकी यशोगाथा गाते रहेंगे। महाराज ! आपके जीवन में से मुझे बहुत-सी प्रेरणा मिली है। अब मुझे मेरा दुःख कुछ भी नहीं लगता है।

साध्वीजी महाराज को वंदन करके घर जाती उस बहन के मन में कई दिनों तक यह जीवन गूंजता रहा। दुःख को भी उपकारी माननेवाली साध्वीजी की वे पंक्तियां सतत याद आती रही-

सुख मथे शिला पढ़ो, प्रभु हृदय से जाय
बलिहारी है दुःख की, पल-पाल नाम जपाय।

(आधार : उपदेशप्रसाद व्या.)

✲ जब बीज धरती में जाकर कोमल बनता है तब अंकुर फूटता है वैसे ही जब अहंकार गलित होकर सरलता प्राप्त होती है तो व्यक्तित्व विकसित होता है।

हरिद्वार में जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा.की निश्रा में पर्युषण पर्व का अध्यात्मिक महोत्सव

उच्चकोटी आध्यात्मिकता का संदेश देने वाला शहर और देव भूमि के रुप में विश्व में पहचाने जाने वाले हरिद्वार की धरती पर जब भी संत के चरण पड़े तब इस धरा पर दिव्यता को जो रुप प्रकट हुआ, वह यहां से वाशिंदों के लिए अद्भूत और अलोकिक रहा है। जी हां आखिर ये संत है ही ऐसें जहां भी इन संत के चरण पड़ते हैं, अध्यात्मिक धारा के स्रोत स्वतः ही फूटने लगते हैं। ये संत और कोई नहीं जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. हैं। जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी म.सा.का इस शहर में चार्तुमास के लिये मंगल प्रवेश हुआ तो उनकी आगवानी करने के लिए बडी संख्या में भक्तों के पुलकित मन, बैंड बाजों की मधुर ध्वनी के बीच जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा.ने साक्षात् निर्विकार अवस्था में अपनी मधुर मुस्कान के लोगों के हृदय के तार झंकृत कर दिव्यता का अहसास करा रहे थे, वहीं लोगों के खिले चेहरे उनकी खुशी को कुछ इस तरह बयां कर रहे थे कि मानो उनकी मन की मुराद पूरी हो गई आखिर जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा.का सानिध्य है ही ऐसा, (हाथी) जिसको मिलता है उसके जीवन में उसी तरह निर्मलता, सहजता, सरलता, स्वतः वास करने लगती है। जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा.के मंगल प्रवेश के साथ ही शुरु हुआ धर्माराधना का महोत्सव, जैन और जैनेतर समाज के लोगों की भीड़ जुटने लगी, आखिर आत्म दर्शन के इस पावन, पुनीत अवसर को कौन त्याग सकता था, वो भी तब जब करुणा के सागर साक्षात विराजमान हों, कहते हैं कि जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा.तो वह दिव्य संत है जिनकी दृष्टि पड़ने मात्र से लोगों का कल्याण हो जाता है, ऐसे संत की धर्मवाणी को सुनने के लिये भक्त प्रतिदिन आया करते औरजैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. का तेज और वाणी का ओज जैन ही नहीं जैनेतर समाज के लोगों के हृदय में इस कदर उतर जाता कि वे मुग्ध हो जाते, प्रवचनों से मिलनेवाली आत्मशांति भक्तों को सुख का अहसास करा जाती। इस दिव्य संत के चार्तुमास के दौरान ही धर्म की दृष्टि में किसी पर्व का क्या महत्व होता ये गुरु की वाणी से भक्तों ने जाना, भक्तों को हरिद्वार के इतिहास में पहली बार जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. के सानिध्य में महामांगलिक में भाग लेने का मौका मिला ,जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा.के प्रभु भक्ति के इस अनोखे स्वरुप देखकर भक्तों ने जो आनंद महसूस किया, उसके भव उनके चेहरे पर प्रकट हो रहे थे। जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा.की दिव्यता का विराट स्वरुप तब प्रकट हुआ जब महापर्व की शुरुआत हुई, पर्युषण पर्व के दौरान देह, श्वास, आत्मा को जागृत करने के लिए एक नई शुरुआत हुई, जिसमें शामिल होने वाले साधकों की दिनचर्या ही बदल गई, कठोर साधना की इस बेला में भक्त सुबह प्रतिक्रमण करते, बाद में प्रभु स्मरण प्रार्थना होती,श्री चितांमणि पार्श्वप्रभु का जिन अभिषेक पूजन, इसके बाद जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा.की धर्मवाणी में भक्त खो जाते, पर्युषण पर्व के पहले दिन जैनाचार्य श्री विश्व रत्नसागर सूरीजी म.सा. ने **महापर्व के प्रथम दिन पांच कर्त्तव्यों का संदेश** ओजपूर्ण वाणी से समझाया तो भक्तों को क्षमा का एक नया रुप समझ आया, इसके साथ ही श्रद्धालुओं का आचार्यश्री का एक नया रुप भी दिखाई दिया जिससे उनको ज्ञात हुआ कि आज के युग में भी इस धरा पर ऐसे संत मौजूद है जिनकी वाणी मनुष्यों को इस भवसागर से पार लगा सकती है। पर्युषण पर्व की ये तो शुरुआत थी, पर्युषण

क्षमावीरः- जो आत्मा के साथ अनादिकाल से लगे हुए शत्रुओं या रागद्वेष, काम, क्रोध आदि विकारों के साथ वीरता से जुझाता है, कहीं भी प्रमाद नहीं करता और न शत्रुओं को घुसने का मौका देता है, वही आध्यात्म योद्धा है युद्धवीर है। जो कर्त्तव्य कार्य करने में वीर पुरुषार्थी उद्यमी और साहसी है, वे कर्मवीर हैं। वे अपने समय और शक्ति को निरर्थक कार्यो में नहीं खोते हैं। जिसमें स्वार्थ और त्याग की निष्काम भावना होती है, जो अपनी लक्ष्मी का दूसरों के उपकार के लिये सदुपयोग करता है, वही दानवीर कहलाता है। जो कड़वी बात सुनकर या प्रतिकूल बात देखकर सहसा क्षुब्ध नहीं होता अपकारी को भी क्षमा करता है, वही क्षमावीर है।

पर्व के दूसरे दिन में जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. की प्रखर वाणी में वर्ष भर में श्रावकों के द्वारा किये जाने वाले 11 कर्तव्यों की नई व्याख्या मिली, जो आधुनिक दृष्टिकोण का ऐसा रुप था जिसको समझने के बाद तो भक्तों की विचारधारा में ही परिवर्तन हो गया, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. ने जब समस्त जीवों से मैत्री भाव। सहधर्मी की पूर्ण भक्ति। तीन दिवसीय निराहार उपवास।परमात्मा की परम भक्ति क्षमापना-वैर किसी से नहीं, प्रेम सभी से , पर प्रवचन दिये तब तो श्रद्धालुओं को ऐसा लगा कि उनके जैसे संत किसी भी व्यक्ति के जीवन में क्रांति के वो बीज रोपित कर सकते हैं, जिसके माध्यम से लोग जीवन के आनंद को महसूस कर सकते हैं। जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. के प्रवचनों को सुनने वाले साधक प्रतिदिन उनके प्रवचनों को सुनने के बाद मुग्धभाव से धर्म को आत्मसात कर चल देते। तीसरे दिन पौषघ पर प्रवचन शुघ्द रुप से जीवन में साधु अनने की प्रेरणा पर आधारित थे इसके बाद तक पर्वाधिराज श्री पर्युषण महापर्व के अंतिम पांच दिन श्री कल्पसूत्र जैसे अलौकिक ग्रंथ रत्न के वांचन-श्रवण-स्मरण तथा चिंतन पर प्रवचन ने धर्मिष्ठें को आत्मशुद्धि और वैचारिक शुद्धि से ओतप्रोत कर दिया और यह सिघ्द कर दिया कि पर्वाधिराज पर्युषण आत्म निरीक्षण तथा आत्म परीक्षण का पर्व है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी म.सा. के सानिध्य में साधकों को जैन दर्शन के तत्व ज्ञान का वह व्याख्यान मिलता है, जिससे वह अभी तक अनजान थे और जिज्ञासा करनेवालों को जहां आलोकिकता का अनुभव होने लगता है वहीं लोकिक जीवन की जीने की नई दिशा का भी ज्ञान होता है। शाम का समय होता प्रतिक्रमण गुरु भक्ति व प्रभु आरती का होता था साधक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. के श्रीचरणों में नमन करने के साथ पापों के प्रक्षालन हेतु प्रतिक्रमण करने एवं गुरु भक्ति से देह आत्मा प्रथक्किरण करते हुए आनंद यात्रा में करते हुए कब समय निकल जाता इसका पता नहीं चलता और पर्व के दिन होने वाले है।

यह है पर्व पर्युषण...!

✲ नेत्र बिना का मुख, सुगन्ध बिना का पुष्प, जल बिना का सरोवर, दंतशूल बिना का हस्ति, मूर्ति बिना का मंदिर, शील बिना की नारी, सत्य बिना का संत-महात्मा जैसे शोभा नहीं पाते वैसे और अजोड़ तप-जप-आराधना शोभास्पद पुण्यप्रदायक नहीं होती है।

✲ जो दयालु आत्मा सर्व प्राणियों को अभय दान देता है और पर्वाधिराज श्री पर्युषण महापर्व जैसे पवित्रम दिनों में जिन पूजा-दान पुण्य-तप-जप-पौषध-सामायिक-मौन- प्रतिक्रमण-क्षमापना आदि करता है वो शीघ्र ही अनंतकाल से चला आते भीषण संस्कार का अंत करने मुक्ति निलय को पा लेता है।

✲ भाव बिना दान करने से केवल धन की ही हानि होती है, श्रद्धा बिना उग्र तप-जप करने से केवल देह को ही पीड़ होती है और श्रद्धा भाव बिना के शीलव्रत से केवल कायक्लेश होता है। श्रद्धा-भाव बिना की कोई धर्मक्रिया सुन्दर फल नहीं दे सकती। थोड़ी सी आराधना करो, लेकिन शुद्ध श्रद्धा होनी जरुरी है।

क्षमा : एक अमृत

मनुष्य का जीवन एक सागर है। उसमें अमृत भी है, जहर भी है और भी बहुत कुछ है वहां। जब-जब इस सागर को व्यवहार की मथनी से मथा जाता है, भीतर के तत्व उभर कर बाहर आ जाते हैं। जब उसके भीतर का जहर पूंजीभूत होकर बाहर आता है, तब मनुष्य सांप, बिच्छु आदि जहरीले जंतुओं से भी अधिक मारक हो उठता है। उसका मन, वाणी और शारीरिक चेष्टाएं विष बुझे तीरों की तरह किसी के सर्वस्व का हरण कर लेता है। इसी बात को लक्ष्य रखकर भगवान ने जीवन को अमृतमय बनाने का निर्देश दिया है।

क्षमा एक अमृत है। यह जिसके पास होता है, वह कटुता के जहर को धोकर स्वयं अमृत बन जाता है। जैन धर्म में ''क्षमा'' का गौरव पूरी गुरुता के साथ उद्‌गीत हुआ है। धर्म के चार दरवाजों में पहला द्वार क्षमा है। इस द्वार में प्रवेश किये बिना कोई भी व्यक्ति उस महापथ पर आगे नहीं बढ़ सकता। दस प्रकार के श्रमण धर्मो में पहला धर्म क्षमा है। क्षमा जीवन का तेज है, ओज है। क्षमा ब्रह्म है, सत्य है। क्षमा तपस्वियों का रुप है। इसलिये क्षमा धर्म का विकास अपेक्षित है।

लोक कल्याण के सुवासित पथ पर

संसारी और संन्यासी:- संसारी और संन्यासी में सिर्फ होश का अंतर है। संसारी की हर क्रिया बेहोशी में होती है और संन्यासी की हर क्रिया होशपूर्वक होती है। संसार में रहकर भी हमें संतों जैसा जीवन जी सकते हैं। जो अपना ख्याल रखता है, वह संसार में नहीं रहता है।

शरीर और आत्मा:- आज मानव ने कम्प्यूटर, इंटरनेट और संचार माध्यमों से सारी दुनिया को जान लिया है। उसने आसमान की बुलंदियों और पाताल की गहराईयों को भी जान लिया है, लेकिन स्वयं से अनभिज्ञ रहा। इंसान को नहीं पता कि वह स्वयं क्या है। वह जिसे अपना मानता है, वह उसका नहीं है। इंसान सोचता है कि यह शरीर जिस पर वह इतना अकड़ रहा है, वह माता-पिता द्वारा दिया गया है। इंसान सोचता है कि वह रुपवान है, सुंदर है, लेकिन यह सुंदरता भी दुनियावालों की ही देन है। उसकी तो केवल आत्मा है लेकिन वह उसी से जीवनभर अनजान बना रहता है। जिस दिन उसे पता चलता है कि आत्मा में ही परमात्मा है, तो उसका कल्याण होने में देर नहीं लगती।

आत्मा की पवित्रता:- पत्थरों की मूर्ति बना देना आसान है, पहाड़ों को तीर्थ बनाकर पूजना आसान है, नदियों को पवित्र बना पूजना आसान है, लेकिन अपने शरीर को मंदिर बना देना बहुत मुश्किल है। अपनी आत्मा की पवित्रता बनाए रखना मुश्किल है।

शांति:- जीवन में सबसे बड़ी संपदा है शांति जबकि अशांति सबसे बड़ी दरिद्रता है। शांति है तो जीवन स्वर्ग है। शांति होने पर अभाव में भी आनंद बढ़ता है। यदि अशांति हुई तो साधना होने पर भी आनंद नहीं मिलेगा। यदि आपके पास सबकुछ है और शांति नहीं है तो जीवन व्यर्थ है।

अहंकार और विनम्रता:-

अहंकार चलता तो है, लेकिन दिखाई नहीं देता। जिसे दिखाई नहीं देता, वह जीवन में मंजिलों को प्राप्त नहीं कर सकता। अहंकार की कार में बैठकर कोई भी व्यक्ति परमात्मा की यात्रा नहीं कर सकता। इसके लिये उसे विनम्रता के विमान में बैठकर यात्रा करनी होगी। संसार में जो मनुष्य जितना झुकता है, उतना ही ऊपर उठता है। दो भाई, सास-बहू हिंदू-मुसलमान आपस में कभी लड़ा नहीं करते, आपस में अहंकार लड़ता है।

मृत्यु:- आत्मा अमर है, फिर भी हमें मृत्यु से डर है। हम जानते है, किंतु मानते नहीं। हमें आत्मा की अमरता पर विश्वास नहीं, इसलिये मृत्यु से भय है।

क्रोध:- अज्ञानता के कारण हम अपराध करते चले जाते हैं। किए गए अपराधों की शुद्धि क्षमा व समता के आचरण से होती है। एक क्षण का क्रोध अनेक जन्मों से संचित पुण्य, व्रत तप, नियम और उपवास आदि को नष्ट कर देता है।

देश और संस्कृति:- भारत की असली पहचान ताजमहल और कुतुबमीनार से नहीं है, बल्कि यहां की सांस्कृतिक विरासत व चरित्र से है। यदि ताजमहल आदि से पहचान होती तो भारत मात्र पत्थरों के ढेर से ज्यादा कुछ नहीं होता। संपूर्ण विश्व में आज भारत की पहचान उसकी गौरवशाली परंपरा और आचरण से है। भारत एक चरित्र प्रधान देश है।

जैन दर्शन:- जैन दर्शन ईश्वर को हर्ता कर्ता भले ही नहीं मानता हो, पर ईश्वर को जरुर मानता है। कुछ लोग जैन दर्शन को नास्तिक भी कहते हैं, पर मेरी नजरों में नास्तिक वह है जो ईश्वर को मानता ही न हो। जैन दर्शन सिर्फ आध्यात्मिक ही नहीं है, उसमें भक्ति को भी स्थान दिया गया है।

जिनवाणी:- भगवान ने जो अपने नेत्रों से देखा, उसे हम नहीं जान सकते हैं, लेकिन जो अपनी दिव्य ध्वनि में कहा है, उसे हम मां जिनवाणी के माध्यम से जान सकते हैं।

पुरुषार्थ और भाग्य:- जो बिना पुरुषार्थ के हमें सरलता से प्राप्त हो गया, वह भाग्य है और पूर्व कर्म जो करने नहीं देते, उसको चुनौती देते हुए मैं कार्य करता हूं। वही पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ और भाग्य से जो मिला, उसे ठुकराने का साहस ही वैराग्य है। अरिहंत पुरुषार्थ से ही बन सकते हैं। स्वाध्याय व ज्ञान के अभाव में चरित्र और श्रद्धा सम्यक् नहीं हो सकती।

अनुभूति:- दर्पण बदलने से चेहरा नहीं बदलता। मूर्ति बदलने से मान्यता नहीं बदलती। मान्यता मन में बदलनी चाहिये। विवाद अनुभूति में नहीं है। अनुभूति को शब्द पूरी तरह अभिव्यक्त कर सकते। झगड़े शास्त्रों के नहीं, शब्दों के हैं। हम अपने अर्थ शब्दों पर थोपते हैं।

क्षमा:- क्षमा में माँ छिपी है। जिस प्रकार एक माँ अत्यंत क्षमाशील है, उसी प्रकार धर्म के प्रमुख दस लक्षणों में उत्तम क्षमा की शक्ति अनंत व अतुल्य है।

कर्त्तव्य:- उपयोगिता संबंधों को प्रगाढ़ करती है, भावना परिवार को मजबूत करती है और कर्त्तव्य घर, परिवार व समाज में एकता का संचार करता है। उपयोगिता के बदले उपयोगिता चाहिये, भावना के बदले भावना चाहिये लेकिन कर्त्तव्य के बदले कुछ नहीं चाहिये, कर्त्तव्य तो निःस्वार्थ भावना से किये जाते हैं।

मित्राता:- सच्ची मित्राता सीखनी है तो कृष्ण से सीखो। वे सबको अपने समान बनाना चाहते हैं। उनकी दृष्टि में अमीर-गरीब का कोई भेद नहीं था। इसलिये तो सम्राट होकर भी वे ग्वाल- बाल सखाओं के साथ गायें चराते और उनके साथ आमोद-प्रमोद करने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता था। एक गरीब ब्राह्मण का उद्धार करने की कथा और मित्र धर्म निभाकर विश्व के सामने आदर्श प्रस्तुत करके कृष्ण ने यह साबित किया कि वे सबको अपने समान बनाना चाहते हैं।

भक्ति:- जिस प्रकार एक कंकर फेंकने से ही तार अथवा पेड़पर बैठे सैकड़ों पक्षी एक साथ उड़ जाते हैं, उसी प्रकार जिनेन्द्र प्रभु की भक्ति करने से मनुष्य के हजारों कर्म उड़ जाते हैं।

जीवन और विपत्तियां:- जिंदगी नाकाम तो हो सकती है, लेकिन नाउम्मीद नहीं हो सकती। उम्मीद बनाए रखने से अनंत संभावनाएं जन्मती हैं। नाउम्मीद होने से कुछ मिलता तो नहीं, पर जो मिलने वाला होता है, वह भी हमारे हाथों से निकल जाता है। विपत्तियों को देखकर मुंह फेरनेवाला विपत्तियों से बच नहीं सकता। जीवन में विपत्तियाँ व मुसीबतें आती है, निराशा, हताशा और असफलताएं चुनौती बनकर आती हैं, लेकिन इनका पूरे साहस के साथ सामना करना चाहिये।

आत्महत्या:- आत्महत्या का ग्राफ पूरी मानव जाति के लिये खातरे का संकेत है। आत्महत्या किसी समस्या का समाधान नहीं है। जीवन का अंत करने से दुःखों का अंत नहीं होता है, बल्कि दुःखों की जड़े और गहरी हो जाती है। आत्महत्या न दुःखों का अंत है, न ही जीवन का। अभिभावक को चाहिये कि वे बच्चों पर अनावश्यक दबाव न डालें फिर कैसी भी परिस्थिति आ जाए, बच्चे आत्महत्या नहीं करेंगे।

आदमी:- दुनिया में आदमी आता है, जीता है, खाता है, पीता है और दुनिया से चला जाता है। वह कुछ ऐसा करके नहीं जाता कि दुनिया उसे याद रखे।

असफलता:- एक असफलता से जीवन असफल नहीं होता। भौतिक सफलता हमें जीवन नहीं दे सकती है, तो एक असफलता जीवन कैसे ले सकती है। थोड़ी सी असफलता से व्यथित होकर मौत को गले मत लगाओ, हिम्मत का हाथ थामो।

शिक्षक :- शिक्षक भारत के भविष्य का निर्माता है। जीवन में जो भी बड़े से बड़ा पद मिलता है, वह शिक्षक की ही देन है। समाज व राष्ट्र को शिक्षकों का सम्मान करना चाहिये।

कुविचार:- एक कुविचार जीवन को बरबाद कर देता है। जब भी तुम्हारे मन में कुविचार उत्पन्न हो, तो उन्हें कुचल दो।

संयुक्त परिवार:- हमारा जीवन रंगभूमि व रणभूमि दोनों प्रकार का है। यह हम पर निर्भर है कि हम इसे क्या बनाते है। जीवन को रंगभूमि बनाकर जीते है तो वह स्वर्ग सा सुंदर होगा, नहीं तो वही जीवन दुःखदायी होगा। पति-पत्नी के सुखमय जीवन में जब क्रोध नहीं होता है तो उनका जीवन रंगभूमि के समान रहता है। क्रोध आता है तो रणभूमि बन जाता है। जब संयुक्त परिवार थे तो लड़ाई-झगड़े और तलाक की दर बहुत कम थी। संयुक्त परिवार में भी लोग क्रोध करते थे, किंतु वह क्रोध लोगों के बीच बंट जाता था। आज एकल परिवार में क्रोध बंट नहीं पाता है। रिश्तों में तनाव बढ़ने की वजह से घरों का वातावरण तनावपूर्ण बना हुआ है। यही कारण है कि एकल परिवारों में तलाक के ग्राफ में बढ़ोतरी हुई है।

नारी:- जिस प्रकार शरीर में नाड़ी का महत्व है, उसी प्रकार समाज में नारी का। नाड़ी बंद होने पर शरीर मृत हो जाता है, उसी प्रकार समाज भी नारी के बिना नष्ट हो जाता है। परिवार से मोह की परिणति संसार है और परमात्मा से मोह की परिणति मोक्ष है। हमें परिवार की अपेक्षा परमात्मा से लगन लगाना चाहिये। आज परमात्मा के पुजारी तो बहुत है, प्रेमी कोई नहीं।

क्षमा:- **एक बार एक संत घुमते हुए एक गांव में पहुंचे तथा अपनी समाधि लगा ली। गॉव का व्यक्ति उसे देख कर चिल्लाने लगा व पत्थर मारने लगा। संत कुछ नहीं बोले। यही क्रम 3-4 दिनों तक चला तो वह व्यक्ति संत के कुछ न बोलने पर बेहद आश्चर्यचकित हुआ व उनके पैरों पर गिरकर क्षमा मांगने लगा तो संत ने कहा-क्षमा कैसी ? यदि तुम्हारे घर मेहमान आए व उनके लिये तुम पकवान बनाओं और वे नहीं खाए तो वो सब पकवान तुम्हारे ही होंगे। उसी तरह जो तुमने गालियां दी, उसे मैंने ग्रहण नहीं किया। इसलिये वे सब तुम्हें लगी, फिर क्षमा कैसी ?**

जब महामंत्र रक्षक बनता है

''**कदम** कदम दम-दम हरदम पर जहां लहु के आंसु उमड़े'' ऐसे कंटक कंकर भरी राह पर चलने वाला जवांमर्द कहा जाता है। विराट भी एक ऐसा ही जवांमर्द था। हिंमते मर्दा तो मद्दे खुदा। जिसमें शौर्य हो, जवांमर्द हो, ऐसे जवांमर्दो की मदद में तो खुदा भी दौड़कर चले आते हैं। विराट में शौर्य था, जवांमर्दी थी, फिर उसकी रक्षा महामंत्र करें, इसमें क्या आश्चर्य।

विसनगर विराट का वतन था। उम्र मात्र पन्द्रह वर्ष की ! शैशव काल तो अभी उसके देह से विदाई ले रहा था फिर भी उसके दिलोदिमाग में महामंत्र नवकार के प्रति अटूट श्रद्धा थी। वह महामंत्र का अनन्य भक्त था। महामंत्र के भक्तिगीत उसके दिल में सदैव गुंजते रहते थे ! पन्द्रह वर्ष की उम्र में एक बार विराट के दिल में तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय की महायात्रा करने के भाव जगे। उसके स्मृतिपट पर भगवान श्रीआदिनाथ की अलबेली प्रतिमा खड़ी हो गई। दादा का वह भव्य मुखकमल ! वह विशाल काय बिम्ब, अनोखी अस्मिता से शोभित वे होठ ! एवं करुणा बहाते वे नयन युगल ! इन सबकी मीठी याद विराट की याददास्त में अंकित हो गयी। शत्रुंजय मानो विराट को बुला रहा था। उसके उर का उर्मितंत्र मानो यात्रा के लिए प्रयाण हेतु उसे पुकार रहा था।

हृदय के उर्मियों की पुकार को भला कौन नकार सका है कि विराट भी नकार दे। एक दिन विराट ने शत्रुंजय यात्रा हेतु प्रयाण किया। मात्र पन्द्रह वर्ष की उम्र में अकेले ही विराट ने यात्रा हेतु प्रयाण किया। विसनगर से शत्रुंजय की तरफ आगे बढ़ने वाली ट्रेन में उसने अपनी बैठक जमा दी। ट्रेन एक के बाद एक स्टेशन छोड़कर आगे बढ़ रही थी। विराट का मानस भी किसी सुहावनी स्वप्न सृष्टि की सफर में लग गया था। ट्रेन में बैठे बैठे भी विराट शत्रुंजय की मानसिक यात्रा कर रहा था। उसके मानसपटल पर शत्रुंजय का वह भुरा-भुरा पहाड़ अंकित होता व विराट उसके कंकर-कंकर को भक्ति भरे दिल नमन करता था। उसका दिल तीर्थाधिराज की सीढ़ी पर चढ़कर भगवान श्रीआदिनाथ के रंगमंडप में पहुंचकर दादा के शरण-चरण में झुक जाता।

बस एक तरफ ट्रेन आगे बढ़ रही थी व दूसरी तरफ विराट की इन रंगीन स्वप्नों की सृष्टि भी आगे बढ़ती जा रही थी। एक के बाद एक स्टेशन को छोड़कर आगे बढ़ती ट्रेन ''सोनगढ़'' स्टेशन पर खड़ी हुई। विराट जिस डिब्बे में बैठा था, उस डिब्बे में से कुछ लोगों का एक टोला नीचे उतरा व अज्ञात दिशा की ओर चलने लगा। इस टोले के पीछे विराट भी ट्रेन से नीचे उतरा। आसपास नजर करते उसकी आंख के आगे ''सोनगढ़'' का बोर्ड दिखायी दिया। विराट आश्चर्य सहित विचार करने लगा कि मैं डिब्बे में से यहां क्यों नीचे उतरा ? मेरी मंजिल तो शत्रुंजय है और विराट फिर ट्रेन में बैठने के लिए पीछे मुड़ा, लेकिन यह क्या ? उसके कदम जैसे उस ट्रेन की तरफ वापस जाने के लिए मानो साफ ना दे रहे थे एवं वह टोला जिस दिशा में आगे बढ़ रहा था वहीं जाने के लिये बैताब हो रहे थे। विराट ने अपने कदम ट्रेन की तरफ मोड़ने के लिये काफी हिम्मत की। उस अज्ञात दिशा में जाने के बजाय अपने मन को शत्रुंजय की राह तरफ मोड़ने की खूब कोशिश की, लेकिन वे कदम नहीं माने, वह दिल वापस नहीं फिरा एवं विराट ने महामंत्र नवकार का स्मरण किया, अलबेले आदिनाथ को याद किया व वह टोली जिस दिशा में जा रही थी, उस तरफ चलने लगा।

विराट का मन भी आश्चर्य का अनुभव कर रहा था कि शत्रुंजय जाकर मृत्युंजय बनने निकला मैं इस अज्ञात दिशा में क्यों जा रहा हूं ? मुझे कोई अजब का आकर्षण उस टोले की ओर ले जा रहा है। क्या मेरे अरमान अधूरे ही रह जायेंगे। क्या मेरी आँख में अवतरित शत्रुंजय की सुहावनी स्वप्नसृष्टि साकार हुए बिना ही बिखर जायेगी ? विराट ने आगे नजर डाली तो देखा कि वह टोला आगे ही आगे बढ़ता जा रहा था। विराट पुनः विचारों की गहरी दुनिया में घूमने निकल पड़ा, क्या मेरे दादा मुझे नहीं मिलेंगे ? क्या शत्रुंजय की स्पर्शना से मैं वंचित रह जाऊंगा ? नहीं, नहीं, किसलिये दादा मुझे नहीं मिलेंगे ? उस तीर्थ की स्पर्शना से भी मैं क्यों वंचित रहुं ? इस टोली से अलग पड़कर यदि मैं सोनगढ़ की राह पकडुं, तो दादा भी मुझे मिले व शत्रुंजय का स्पर्श मैं भी अवश्य करुं।

विराट की विचार माला रुक गयी, उसने चारों तरफ नजर दौड़ायी। सोनगढ़ के सिग्नल अभी भी दिखायी दे रहे थे। दूर-दूर स्टेशन से निकली ट्रेन का काला धुंआ आकाश में बिखर रहा था एवं ट्रेन की सीटी की आवाज स्पष्ट सुनायी दे रही थी।

विराट ने वहां से पलायन होने का विचार किया। मन को

मजबूत बनाया और सोनगढ़ की तरफ पुनः जाने के लिये कमर कसी, लेकिन उसके ये प्रयत्न कामयाब नहीं हुए, उसके कदम निश्चल बनकर खड़ेथे व सोनगढ़ तरफ जाने के लिये साफ ना कह रहे थे।

आखिर विराट हार गया। मन व तन के संग्राम में अंततः तन ने मन को शिकस्त दी और विराट उस टोले की नजर रखते हुए आगे बढ़ने लगा टेढ़े-मेढ़े रास्ते पार करते हुए वह टोला आगे बढ़रहा था। उस टोले के हंसने पर पार्श्व भूमि में जैसे अट्‌टहास्य फैला हो, ऐसा वातावरण बन जाता था। वह टोला आगे कदम बढ़ाता तो जैसे धरतीकंप हो रहा हो, ऐसा आभास होता था। विराट का मन मजबूत था लेकिन तन लाचार था, असहाय था। उस टोले के पीछे जाने के लिये विराट का मन मान नहीं रहा था, फिर भी कोई अज्ञात बल उसे टोले के पीछे ढकेल रहा था व विराट मजबूर होकर उस तरफ धकेला जा रहा था।

महामंत्र नवकार विराट के होठों के आंगन में खेल रहा था। भगवान श्रीआदिनाथ की प्रतिमा उसकी आंखों के समक्ष दर्शन देती थी एवं तीर्थ सम्राट शत्रुंजय का वह पवित्र पहाड़उसकी स्मृतिपट पर खड़ा-खड़ा आशिष दे रहा था। नवकार का रटण करते हुए विराट आगे बढ़ रहा था। टोले और विराट में अब ज्यादा अंतर बचा नहीं था। वह थोड़ा चला और दूर नजर फेंकी तो देखा कि वह टोला थम गया था एवं बातों की महफिल में मशगुल था।

बातों में मशगुल बने उस टोले में से एक व्यक्ति ने पीछे नजर फेंकी, तो विराट टोले के पीछे आता हुआ दिखायी दिया, उसने अपने सरदार से कहा- ''सरदार ! देखिये पीछे कोई नाजुक बालक आता दिखायी दे रहा है, वह कितना सुंदर है ? हां-हां देखो, उस वृक्ष के नीचे से होकर वह आ रहा है। उसके मुख मंडल पर रहा हुआ तेज कितना मोहक है ? गौरवर्णी उसका तन-बदन कितना सुरेख व सुडौल है। अभी उम्र तो छोटी लगती है, फिर भी उसके मुख पर गांभीर्य के तेजकरण कितने भव्य लग रहे है ?

लड़के के आकर्षक शरीर को देखकर सरदार भी बोल उठा। टोला थोड़ी देर वहां खड़ा रह गया, इतने में विराट उनके पास पहुंच गया। टोले के आगेवान ने विराट से बात करने की खूब कोशिश की लेकिन विराट नहीं बोला। वह तो महामंत्र के जाप में लयलीन बन गया था। शत्रुंजय के शिखरों पर खड़े मंदिरों के मानसिक दर्शन में वह एकतान बन गया था। अंततः टोले का आगेवान थक गया और उसने आगे बढ़ने की आज्ञा दी। विराट भी उनके पीछे पीछे चलना लगा। आकाश में अंधकार के बादल छा रहे थे। सूर्य की विदायी को भी ठीक समय हो गया था। टोला आगे बढ़ा जा रहा था। आकाश में उभरे अंधकार के बादल अब अंधकार का जल बरसाने लगे थे। अवनि पर अंधकार छाया जा रहा था। थोड़े से उजियारे के आधार पर टोला चल रहा था और विराट भी उसके पीछे खींचा चला जा रहा था। अब वे एक गहरे जंगल को पारकर खुले मैदान में आ गये थे।

एक छोटे टीले के पास पास चलने पर टीले का बसेरा आता था। क्रमशः अंधेरा ज्यादा गहरा बन रहा था, अतः उन्होंने थोड़ी तेज गति से प्रयाण का आरंभ किया। टीले के पास से चलने के बाद एक पगडंडी आती थी। उस पगडंडी के आमने-सामने हरियाली छायी हुई थी। सभी ने पगडंगी पर प्रवास प्रारंभ किया, उनके पीछे विराट भी आ रहा था। टोला तो निर्भय बनकर चल रहा था, लेकिन विराट तो अभी नया-नया था, जिससे भय जनक लगने के बाद भी महामंत्र के जापपूर्वक वह आगे बढ़ रहा था। पगडंडी पर चलते चलते वे सब एक गहरी पल्ली के पास आ पहुंचे और अंदर प्रवेश किया तब चारो तरफ अंधेरा था।

मंत्र-तंत्र व यंत्र में ऐसी शक्तियां छुपी होती है कि जिनके सहारे अघटित भी घटित बन जाती है। स्वप्न में भी कल्पना नहीं की जा सके, ऐसी वस्तुएं साकार होकर सामने खड़ी हो जाती है। विराट के जीवन में भी कुछ ऐसा ही घटित हुआ और इसलिये तो विसनगर से शत्रुंजय जाने के लिये निकला विराट एक अंधेरी पल्ली में आ पहुंचा था। वह जिस डिब्बे में बैठा था, उस डिब्बे में लुटेरों का एक टोला भी बैठ गया था और उसने ही विराट पर टोना-टोटका किया था।

विराट के रुपरंग एवं नाजुक उम्र देखते ही टोले ने उसे उठाने का विचार किया और एक ऐसी आकर्षण विद्या विराट पर डाली कि जिससे विराट उस टोले की तरफ स्वयंभू आकर्षित हो जाये व उनकी इच्छा फलदायी बने। उस टोले की इच्छा फली भी, विराट की तरफ छोड़ी गयी उस आकर्षण विद्या ने अचूक कार्य किया और विराट लूटेरों की पल्ली में खींचकर चला आया। सोनगढ़ से निकले उस टोले ने जब पल्ली में प्रवेश किया, तब लगभग अंधकार छा गया था। पल्ली में आने के बाद वहां के सरदार ने विराट से बात करने की खूब कोशिश की, लेकिन विराट नहीं बोला, तो नहीं

बोला। उसके मुख पर विषाद था। उसके जख्मों की ज्वालायें जल रही थी। सरदार को तो विराट की जरुरत थी, इसलिये सरदार ने विराट को खुश करने के लिये सुख-सामग्री देने का मार्ग अपनाया। मखमल की शैया में उसे शयन करवाया गया। विविध खाद्य सामग्रियां उसके मुंह के सामने रखी गयी, लेकिन विराट तो भक्त था। महामंत्र का एवं उपासक था जैन शासन का ! वह रात्री में कैसे खा सकता था ?

दिन भर चलने की थकान थी। आंखों में नींद नहीं आ रही थी, फिर भी विराट सो गया। मंत्राधिराज का स्मरण करते हुए विराट सुख-शैया में तन कर सोया था, लेकिन उसकी आंखों में नींद नहीं आ रही थी।

काली-काली मध्यरात्रि ! पल्ली का सुनसानभरा वातावरण ! धरती के अज्ञात कोने में खड़ी अकेल पल्ली ! इन सारे पराये वातावरण के बीच वह अकेला था। विराट की आंखों के सामने ये सारी घटना चित्रपट की तरह आती व हृदय कांप जाता। धरती पर छांये अंधकार का काला परदा धीरे-धीरे हट रहा था एवं धीमे-धीमे तेज कण अवनी को उज्जवल बना रहे थे।

विराट शैया से उठ खड़ा हुआ। महामंत्र के चरण में घुटने टेककर नमन किया और सिद्धाचलजी की सुहावनी मूर्ति को मनोमन वंदन किया। फिर सरदार के वे ही प्रयत्न ! वही आजीजीभरी आरजु ! लेकिन विराट नहीं माना तो नहीं माना। उसके मुख पर छाये विषाद के बादल नहीं बिखरे सो नहीं बिखरे। इसी प्रकार एक-दो-तीन बीत गये।

विराट को सिद्धाचल के संस्मरण याद आते और उसका दिल उसके मिलन हेतु तड़प उठता। इस प्रकार जब चारों तरफ से जब वह विपत्तियों के बादल में घीर जाता तो दौड़कर चला जाता मंत्र-सम्राट के शरण में। मंत्र-सम्राट की शरणागति से विराट का अंतर कुछ शांति का अनुभव करता, उसके उर के उर्मि-तंत्र को उमंग की बेहद अनुभूति होती। विराट फिर एक बार विचारों की गहराईयों में खो जाता। क्या इन जंजीरों को तोड़कर भाग जाऊं? ये मेरे लिए असंभव बात है ? नहीं, नहीं अभी भी मैं अपने मन को मर्द बनाऊं, जिगर को जवांमर्द बनाऊं तो मेरे विचारों के अरमान आकर पा सकते हैं ? विराट का विचार-प्रवाह स्थगित बन गया, उसने देखा कि सरदार उसके सामने प्रत्यक्ष खड़ा था और उसे खुश करने का प्रयत्न कर रहा था।

(आगे और भी है...!)

विश्व विजयी बनना हो- शस्त्र चाहिये, आत्म विजयी बनना हो-शास्त्र चाहिये

✲ पू.श्री वीररत्न विजयजी म.सा.

पर्वाधिराज श्री पर्युषण महापर्व का मध्य-काल श्री कल्पसूत्र जैसे अलौकिक ग्रंथ रत्न के वांचन-श्रवण-स्मरण तथा चिंतन के माध्यम से होता है। जैन जगत के आबाल-गोपाल के दिल दिमाग में महाग्रंथ के प्रति असीम श्रद्धा है। ग्रंथ का एक-एक शब्द भीतरी चेतना को जगाने वाला है। तीर्थंकरों की दिव्य-भव्य जीवन कथा उनके चरणों में हमें नतमस्तक बना देती है। श्रमण जीवन की अद्भूत आचार संहित सुनकर मन आहलादित हो जाता है।

हिन्दू धर्म में जो सम्मान भगवद् गीता का है, मुस्लिम समाज में जो स्थान कुरान का है, सिक्ख समाज में जो महत्व गुरु ग्रंथ साहिब का है तथा इसाई धर्म में जो प्रभाव बाईबल का है वैसे ही जैन समाज में श्री कल्पसूत्र की महिमा है क्योंकि इस ग्रंथ का प्रत्येक सूत्र सिद्धमंत्र है।

युद्ध के मैदान में विश्व विजयी बनना है तो शस्त्र चाहिये किन्तु आत्मविजयी बनना है तो शास्त्र चाहिये। कोई भी धर्म आज भी जीवंत तथा जयवंत है तो उसका मुख्य कारण उसके ग्रंथ है। ग्रंथ नहीं तो पंथ नहीं, पंथ नहीं तो पथ नहीं, पथ नहीं तो आत्म मुक्ति संभव नहीं है। हंसते-हंसते जीवन जीने की बात तो सभी करते है किन्तु मरते मरते भी हंसते रहने की कला शास्त्र ही सिखाते हैं।

इतिहास के महान ग्रंथों की रचना के पीछे जबान व कान का समन्वय रहा है, द्रोपदी की जबान तथा दुर्योधन के कान के कारण रचा गया महाभारत। मंथरा की जबान तथा कैकयी के कान के कारण जन्म लिया रामायण ने। श्री कृष्ण की जबान तथा अर्जुन के कान के कारण निर्माण हुआ भगवद् गीता का। भगवान श्रीमहावीर की जबान तथा गौतम के कान ने सर्जन किया कल्पसूत्र का।

जीवन कितना जिया, यह महत्वपूर्ण नहीं है। जीवन कैसा जिया, यही महत्वपूर्ण है। श्री कल्पसूत्र का श्रवण जीवन का उपवन बना देता है।

किसी को माफ करके देखिए....

आपने जिन्हें माफ किया है, वे आपके ऋणी हो जाएंगे और आप उनकी नजरों में बेहद ऊंचे उठ जाएंगे

✻ डॉ. उज्जवल पाटनी

एक नामी उद्योगपति ने यूनिवर्सिटी के एक बड़ेसमारोह में हजारों छात्रों और शिक्षकों के बीच जब अपनी आपबीती सुनाई तो यहां बैठे सभी लोगों की आंखों से आंसू टपक पड़े। कहानी कुछ इस तरह से थी।

एक कक्षा में बहुत से छात्र बैठे थे। अचानक एक छात्र उठा और उसने घबराते हुए प्रोफेसर से कहा कि उसके पिताजी ने इस बार उसके जन्म दिन पर उसे बहुत कीमती घड़ी गिफ्ट में दी थी, लेकिन वह थोड़ी देर पहले ही किसी ने चुरा ली है।

इस पर प्रोफेसर ने कहा कि- बहुत देर से कोई भी छात्र न तो कक्षा से बाहर गया और न बाहर से भीतर आया। इसका मतलब यह है कि जिसने भी घड़ी उठाई है, वह इसी कक्षा में है।

इसके बाद प्रोफेसर ने सभी को अपनी आंखों पर पट्टी बांधने और एक लाइन में खड़े होने को कहा। प्रोफेसर ने एक-एक करके सबकी जेब पर हाथ लगाना शुरु किया। कुछ ही देर में एक लड़के की जेब में घड़ी मिल गई। प्रोफेसर ने चुपचाप वह घड़ी निकाली और उसके मालिक को मुस्कराते हुए दे दी। प्रोफेसर ने किसी से कुछ नहीं कहा। सबकी आंखों पर पट्टी होने की वजह से किसी को कुछ पता नहीं चला कि घड़ी किसने चुराई थी।

अगले दो-तीन दिन तक घड़ी चुराने वाला लड़का मन ही मन घबराता रहा कि उसका राज खुल जाएगा लेकिन किसी को मालूम नहीं हुआ कुछ ही महिनों में वे सभी छात्र पढ़ाई खत्म करके कॉलेज से निकल गये।

बहुत साल बाद कॉलेज में पुराने छात्रों का रीयूनियन का कार्यक्रम था। वह छात्र जिसने चोरी की थी, अब एक बड़ा उद्योगपति बन चुका था। वह अपने प्रोफेसर के पास गया तो उसकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। उसने प्रोफेसर से कहा- मेरे जीवन पर आपका बहुत बड़ा कर्ज है। यदि आज मैं जिदा हूं तो केवल आपके कारण।

प्रोफेसर हैरान हुए और कुछ समझ नहीं पाए। ऐसा कहने का कारण पूछा।

उस छात्र ने कहा- सर एक बार आपकी कक्षा में एक घड़ी चोरी हुई थी। तब आपने सबकी आंखों पर पट्टी बंधवाकर सबकी जेब चेक की थी। मैं शर्मिंदगी में इतना घबरा गया था कि- मैंने निर्णय ले लिया था कि यदि उस दिन सबको इस बात का पता लग गया कि घड़ी मैंने चुराई तो मैं आत्महत्या कर लूंगा। वह घड़ी मेरी जेब से मिली थी, लेकिन आपने उस बारे में किसी को नहीं बताया। आपने मुझे माफ कर दिया था और उस दिन आपने मेरी इज्जत रख ली। उस दिन मुझसे गलती हो गई थी और मैंने अपने आप से वादा किया था कि मैं कुछ बनकर दिखाऊंगा। यदि आप उस दिन मेरी चोरी के बारे में सबसे कह देते तो मैं अपनी जान दे देता।

प्रोफेसर ने धीरे से कहा- मैं नहीं जानता था कि वह घड़ी तुमने ली थी। मैंने तुम सबकी आंखें तो पट्टी से बंद करवा दी थी, लेकिन साथ ही साथ अपनी आंखों पर भी पट्टी बांध ली थी। मैं नहीं चाहता था कि मुझे पता चले कि मेरे किस छात्र ने यह काम किया है, ताकि अपने किसी छात्र की वैल्यू मेरी नजरों में हल्की न हो।

यह सुनते ही वह लड़का जो अब एक नामी उद्योगपति था, नतमस्तक हो गया। व्यवहार की इतनी उच्चता, इतनी विनम्रता, इतनी उदारता उसकी कल्पना से परे था। उसकी आंखों में उस प्रोफेसर का सम्मान और भी कई गुना बढ़ गया। किसी की गलती पता चलने पर उसका अपमान करना आम बात है, सबके बीच उसकी निंदा करना और सजा देना भी आम बात है, लेकिन उसकी गलती माफ कर आत्मसम्मान बचाने का मौका देना महानता है। प्रबंधन का सिद्धांत है कि प्रशंसा सबके बीच करो और निंदा अकेले में। माफ करना और माफी मांगना दोनों शक्तिशाली लोगों का काम है।

एक बार किसी की गलती को भूलकर उसे माफ करके देखिए। अधिकांश मामलों में स्टाफ से लेकर संतान तक, जिन्हें आपने माफ किया है, वे दिल की गहराई से आपके ऋणी हो जाएंगे और आप उनकी नजरों में बेहद ऊंचे उठ जाएंगे।

✻ योग्य व्यक्ति दूसरों की गलतियों को लम्बे समय तक याद नहीं रखता।

महापर्व पर्युषण की गरिमा : एक विश्लेषण

❊ प्रेमचन्द जैन, लुधियाना

भारत एक बहुत विशाल देश है और इस विशाल देश में राष्ट्रीय, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पर्व आते रहते हैं। प्रत्येक पर्व के पीछे कोई न कोई भावना अवश्य छिपी रहती है। कुछ राष्ट्रीय पर्व हमारे देश इतिहास से जुड़े हुए हैं। कुछ धार्मिक एवं आध्यात्मिक पर्व और कुछ महापुरुषों के जीवन संबंधी घटनाओं के कारण भी मनाये जाते हैं। जैसे जैन परम्परा में पर्युषण पर्व,श्रीमहावीर जन्म कल्याणक पर्व है। बौद्ध धर्म में वैसाखी पूर्णिमा, हिन्दू समाज में जन्माष्टमी दशहरा, दीपावली, होली आदि पर्व बहुत उत्साह से मनाया जाता है। इसी प्रकार ईसाई समुदाय क्रिसमस डे अर्थात् ईसा का जन्मदिन मनाते है। मुसलमान रमजान और ईद को अपना धार्मिक पर्व मनाते हैं। इस प्रकार संसार में मनुष्य चाहे किसी भी धर्म परम्परा का हो, किसी भी देश का निवासी हो वह अपनी मान्यता के अनुसार पर्व मनाता है।

इसी पर्व श्रृंखला में जैन समाज में एक ऐसा पर्व आता है जो रागद्वेष को मिटाकर स्नेह एवं प्रेम की गंगा बहाने की प्रेरणा देता है। भगवान श्रीमहावीर ने आत्म-शुद्धि के लिये तप, त्याग और आराधना करने के लिये पर्युषण मनाने का विधान किया है। लेकिन दूसरे तीर्थंकर से लेकर तेईसवें तीर्थकर तक इस पर्व को कैसे मनाया जाता था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। बाद में चौबीसवें तीर्थकर भगवान श्रीमहावीर के शासनकाल में पुनः यह पर्व मनाना शुरु हो गया। स्वयं भगवान श्रीमहावीर ने पर्युषण पर्व का पालन किया और श्रमण-श्रमणियों को इस पर्व को मनाने के लिये प्रेरणा दी कि यहां के सभी पर्व आत्मानुलक्षी है। जैन धर्म कहता है कि जो आत्मा को पवित्र करें वहीं पर्व कहलाता है। खाना-पीना, घूमना, मौज मनाना आदि यह तो क्षणिक सुख है। दुनिया में चारों तरफ पर्व के दिनों में इन्हीं का बोलबाला रहता है किन्तु जैन धर्म के पर्व तप-त्याग, ज्ञान, ध्यान, पूजा, भक्ति आदि के द्वारा आत्मा को अनुपम मस्ती का मार्ग दिखाते है। गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी पर्युषण पर्व आ रहा है और चला भी जायेगा। सम्पूर्ण समाज में यह आठ दिन का पर्व एक विशेष महत्व रखता है। यह पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हम अपनी आत्मा में रह रहे काम, क्रोध और मोह आदि विकारों को दूर कर आत्म-शुद्धि करें। यह पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हम सोचे कि हम कहां से आये हैं और हमारा लक्ष्य क्या है। हम स्वयं के बारे में कुछ सोचे। हर व्यक्ति दूसरों के सम्बन्ध में जितना जानने की कोशिश करता है उतना शायद स्वयं के बारे में जानने का प्रयास नहीं करता। मन में बिखरे अवगुण, दोष और बुरे संस्कारों के मैल को साफ करने का ध्यान मनुष्य के तन में बहुत कम आता है। वह व्यक्ति जो अपने अन्दर झांकता है और ईर्ष्या, द्वेष, वैर, विरोध आदि दोषों को देखकर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करता है। पर्युषण का अर्थ है पूरी तरह से आत्मा को धर्म से जोड़ना है। यदि हम इन सिद्धांतों का अनुसरण करें तो हमारे जीवन को बहुत कुछ मिल सकेगा।

संकल्प हो हमारा इन्सान हम बनेंगे।
इन्सान हम बनेंगे तो भगवान भी बनेंगे।

हम लोग दूसरों के गुण-दोषों को निकालने में ही अपना अधिक समय नष्ट कर देते हैं। अपने अन्दर हमें देखने की आदत नहीं। पर्युषण के आठ दिन बाहर की भाग-दौड़ त्याग कर अपने अन्दर झांकने का शुभ अवसर हमें मिलता है और इस बात की प्रेरणा देता है कि हम क्षमा, मैत्री एवं प्रेम की त्रिवेणी में अवगाहन कर अपने आप को सम्भाले और यह देखें कि हमने अपने अन्दर कितना कषाय रुपी कचरा एकत्र किया है। कहीं ज्ञान का अहंकार तो हमें नहीं आ गया ? कहीं पद और सत्ता के नशे में तो हम नहीं नाच रहे। अपनी सुन्दर लेखनी के दो शब्द या टूटी-फूटी भाषा में बोलकर अपने आपको अच्छा लेखक या वक्ता कहलाने का अभिमान तो मुझ में नहीं आ गया। कहीं धन का नशा या दौलत का गर्व मुझे कहीं भटका तो नहीं रहा कहीं हमसे आचार्यों एवं साधु-साध्वियों के प्रति अविनय तो नहीं हुआ। ऐसे कई प्रश्न है जिन्हें आज के दिन हमें मन से निकालने हैं।

कोई भी त्यौहार का मनाना, तभी सार्थक हो सकता है।
जिओ और जीने दो का नारा, यदि इन्सान अपना सकता है।

तप का अंतिम चरण-मोक्ष

जैन संस्कृति में तप का सबसे अधिक महत्व बतलाया गया है। तप करने से जीव कर्म विमुक्त होकर विशुद्धि प्राप्त कर लेता है। जो विशुद्धि मोक्ष मार्ग के लिये आवश्यक है और तप की विशुद्धि के लिये श्रद्धा,विनय और सहनशीलता का होना अनिवार्य है। जैन आगमों में तप की बड़ी महिमा बताई गई है। जैन आचार्यो ने आत्म-शुद्धि के लिये अनेक मार्ग बतलाये हैं। लेकिन सर्वप्रथम मार्ग तप बतलाया है। तप एक महान

ज्योति है और उस ज्योति ने महान शक्ति छिपी हुई है। जैसे किसान अपने खेत में, विद्यार्थी अपने अध्ययन में, व्यापारी अपने व्यापार में और साधक अपनी साधना में अपने आप को तपाता है तभी जाकर उसे अपने जीवन में सफलता प्राप्त होती है। हर व्यक्ति को अपने जीवन में सफलता पाने के लिये अपने-अपने क्षेत्र में तपने की आवश्यकता होती है। इसी तरह आत्मा को निर्मल बनाने के लिये उसमें छीपे राग-द्वेष, मोह-माया इत्यादि विकारों को नष्टकरने के लिये तप की आग में साधक को तपना पड़ता है। जैन धर्म में तप का अर्थ है विकारों को शांत करना। मन को विकारमुक्त कर सभी प्रकार की वासना आदि से रहित होना, जैसे कच्ची मिट्टी के बने घड़ेमें पानी भर देने से वह कुछ ही देर में गीला होकर बिखर जाता है लेकिन यदि उसे आग में पका लिया जाये तो वह मजबूत होकर लम्बे समय तक काम देता है। यह तपाने का चमत्कार है। सोने को तपाये जाने पर ही उसके खरे खोटे होने की परख होती है। चाकू को पत्थर की चरखी पर घिसना पड़ता है तब जाकर उसी की धार बनती है। जो वृक्ष कठोर परिस्थितियों में उगते हैं और बढ़ते हैं वे पर्वत शिखरों पर भी हरियाते हैं। आंधी, तूफानों से टकराते हैं किन्तु बगीचों की शोभा बढ़ानेवाले फूल तनिक सी गर्मी सर्दी की प्रतिकूलता आते ही मुरझा जाते हैं। मैला कपड़ा जब गर्म-गर्म भट्टी में उबलता है और धोबी के डंडे की पिटाई सहता है तभी उसे चमकाने का अवसर मिलता है। मात्र पानी में निचोड़ देने पर सफाई उसमें नहीं आ सकती। छाछ में मक्खन तब तक नहीं निकल सकता जब तक छाछ अपने आप को अग्नि में नहीं तपाती। इसी प्रकार आत्मा में छिपे राग-द्वेष काम, क्रोध, मान, मोह, लोभ आदि विकार तब बाहर नहीं निकाले जा सकते जब तक तप की अग्नि में आत्मा न लगे। जब कर्मों का भगतान का समय आता है तो यह आत्मा धर्म ज्ञान न होने के कारण विचलित हो जाती है जो साधक ज्ञानी होते है वे कर्म युद्ध में अपनी शक्ति तप के मैदान में लगाकर आत्म विजयी होकर निकलते हैं। भगवान महावीर ने कहा कि जो साधक स्वयं तप में प्रवृत्त न हो सकते हों वे अपने आपको तपस्वी के दर्शनों से कृतार्थ हो सकते है। वे भी कुछ अंशों में पुण्य के भागी हो जाते हैं।

लेकिन आज के समय में प्रायः देखने में आता है कि पहले जो तप अपनी निजी आत्मा को निर्मल बनाने के लिये किया जाता था आज उसमें ऊपर का दिखावा और लालसा दिखाई देती है। तपस्या के बाद जो समाज एवं रिश्तेदारों में लेन-देन उपहार देना, बांटना यह एक आम बात हो गई है और पैसे का भी प्रभाव तपस्या के ऊपर छाने लग गया। वह व्यक्ति जो आर्थिक दृष्टि से यह सब कुछ नहीं कर सकता ऐसा व्यक्ति तपस्या की भावना होते हुए भी तपस्या से दूर रह जाता है। कभी-कभी तो लम्बी तपस्या के पारने के समय शादी विवाह जैसा वातावरण बन जाता है और लम्बा चौड़ा-लेन देखने को मिलता है। इन बातों से हमें दूर रहना चाहिये।

मैं सभी भाई-बहनों से विनम्र प्रार्थना करता हूं कि हम अपने आपको इन व्यर्थ के आडम्बरों से दूर रहकर तपस्या को सादगी से करें। यदि तपस्या करनेवाले भाई-बहन यह प्रतिज्ञा कर ले कि वह तपस्या बिना किसी तृष्णा या मान सम्मान की इच्छा से मुक्त होकर ही करेंगे तो यह समस्या अपने आप ही हल हो सकती है। केवल हमारी शुभकामनाएं होनी चाहिये कि उनकी तपस्या, सुखमय हो, मंगलकारी हो, कल्याणकारी हो। उनका तप सुखसाता सम्पन्न हो। इस तरह की भावना तपस्वी के लिये ज्यादा आत्म-बल देनेवाली हो सकती है।

क्षमा रखो, क्षमा मांगो, क्षमा दो

क्षमा मांगना एक पक्ष है और क्षमा देना दूसरा पक्ष है। दोनों ही पक्ष अपनी अपनी जगह अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। विनयपूर्वक झुककर अपनी भूल को स्वीकार करते हुए किसी से क्षमा मांगना वीरता है और क्षमा देना उदारता है। मन की सरलता है। यदि हम ऐसा करते हैं तो हम भगवान महावीर के सच्चे अनुयायी है। आज के दिन इन सब बातों पर हमें गहराई से चिन्तन करना होगा। क्षमापना और क्षमा-याचना की प्रवृत्ति अगर अपने अन्दर नहीं जगाई तो संवत्सरी आती रहेगी और जाती रहेगी और इस तरह मानव अपनी आत्मा का विकास और कल्याण करने का सुनहरी अवसर खो देता है। एक नहीं अनेक बार सम्वत्सरी पर्व आकर चले गये किन्तु साधक अपने अभिमान में अकड़े रहते हैं। लोगों को क्षमा का पाठ पढ़ाते हैं। एक दूसरे की निन्दा आलोचना करते हैं। ऐसा करके साधक अपने कर्मों के बन्ध से नहीं बच सकता अर्थात् हम संवत्सरी महापर्व की आराधना सच्चे दिल से करें, दिखावा न करें तभी हमारा इस महापर्व को मनाना सार्थक हो सकता है।

हो सकता है कि कभी प्रमादवश हम से किसी को पीड़ा पहुंची हो। किसी को किसी प्रकार का हमारे कारण कष्ट हुआ हो। आखिर हम भी इन्सान हैं। भूल मनुष्य से ही हो जाती है

। पश्चाताप पूर्वक क्षमा न मांगना बहुत बड़ी भूल है। हमें भूलों से सदैव दूर रहना चाहिये। अतः हम इस पावन आत्म-विशुद्धि पर्व पर त्रिकरण शुद्धिपूर्वक सबसे क्षमा याचना करते हुए। इस पर्व को मना कर अपने आपको कर्मो से मुक्त कर सकते हैं। क्षमा इन्हीं विकारों को दूर करने की शक्ति है। मनुष्य को स्वभाव के निकट लानेवाला यंत्र है। मनुष्य को मनुष्य बनानेवाली अचूक औषधि है। आप तप नहीं कर सकते तो कोई बात नहीं। दान नहीं दिया तो कोई बात नहीं, लेकिन संवत्सरी के दिन अगर हम क्षमाधर्म की आराधना नहीं करते तो समझो कि अभी हम भगवान श्रीमहावीर के उपासक कहलाने के हकदार नहीं। क्षमा रखना बहुत आसान है, लेकिन क्षमा मांगना बहुत मुश्किल है, क्योंकि हमारा अभिमान हमारे बीच आकर खड़ा हो जाता है और कहता है कि मैं क्षमा क्यों मांगू ? मैंने तो कोई भूल की ही नहीं, भूल तो सामनेवाले ने की है। पर्युषण पर्व विनम्र होने और मन की गाठों को सुलझाने और खोलने का पर्व है। आपने स्वयं देखा होगा कि छत्तीस घंटे या आठ दिन का उपवास तो रख लिया जाता है किन्तु उसमें आत्म चिन्तन के क्षणों की गिनती कीजिए तो उत्तर में प्रायः शून्य ही मिलेगा। पौषध चलता है, लेकिन आत्म पौषण नहीं सामायिक तो ले ली जाती है लेकिन मन की एक गांठ भी नहीं खुलती, पर निन्दा के अम्बार लग जाते हैं। आत्म आलोचना के लिये समय बचता ही नहीं। तो आईये पर्युषण पर्व की इस पावन पर्व पर एवं संवत्सरी की शुभ वेला पर प्राणी मात्र से क्षमा याचना करते हुए क्षमा देते हुए अपनी-अपनी आत्मा का निरीक्षण करें।

साधु का परिवार

''धैर्य यस्य पिता, क्षमा न जननी।
शांतिचरं गेहिनी।
सत्यं मित्रमिदं दया व भगनी,भ्राता मन संयमम्॥
शैय्या भूमि तलं दिशोपि वसनं
ज्ञानामृतं भोजनं॥

अर्थः- 1- धैर्य-पिता, 2- क्षमा-माता, 3- शांति-पत्नी, 4- सत्य-मित्र, 5- दया-बहन, 6- संयम-भाई, 7-शैय्या- भूमि, 8- दशो दिशा-वस्त्र, 9- ज्ञानामृत- भोजन, 10- स्वपर भेद- रक्षक, 11- रत्नत्रय-धन 12-निर्विकार- आभूषण 13-ध्यान-अध्ययन व्यापार।

जीवदया

मैत्री की बातें तो हर धर्म में है, लेकिन उसका शक्य संपूर्ण पालन जैन दर्शन के बिना किसी भी धर्म में देखने नहीं मिलेगा। पृथ्वी, पानी, अग्नि, वनस्पति, वायु आदि एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक-सभी जीवों के साथ मैत्री रखो- ऐसा कहनेवाले अरिहंत के अलावा दूसरे कोई नहीं है। ऐसा जानकर सिर्फ बैठ रहने के लिए नहीं कहा, किन्तु उनकी रक्षा करने के लिए कहा है। पृथ्वी आदि की रक्षा करने का फरमान सिर्फ जैन शासन में ही है। जैन साधु ही ऐसे रक्षक है।

मुनि के जीवन में 24 घंटे सब जीवों के प्रति स्नेह भाव ही होता है.... कहीं किसी जीव की विराधना न हो जाये, उसकी हमेशा सावधानी रखे, वही जैन साधु!

पांचों महाव्रत, जीवों के प्रति स्नेहभाव को स्पष्ट रुप से व्यक्त करनेवाले उद्घोषणा-पत्राक है। पांच समिति और तीन गुप्ति में भी मुख्य रुप से जीव-मैत्री का झरना ही बह रहा है। नीचे देखकर क्यों चलना ? उपयोगपूर्वक क्यों बोलना ? सबके मूल में देखेंगे तो, जीव-मैत्री ही दिखेगी। जीव-मैत्री खंडित होते देखकर हमारे अनेक पूर्व मुनिओं ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है।

कटु तुंबी की सब्जी परठवते समय जंतु की विराधना का ख्याल आते ही धर्मरुचि अणगार ने स्वयं इस जहरीली सब्जी वापर ली और मृत्यु को प्राप्त किया। क्रौंचपक्षी की रक्षा के लिए मेतार्यमुनि मौन रहे, सुनार के जानलेवा उपसर्ग को स्वीकार लिया। ऐसे तो बहुत दृष्टांत जैन शास्त्रों के पन्ने-पन्ने पर विद्यमान है।

जीवों की दया से, आत्मा की ही दया होती है। जो दूसरों पर थोड़ा भी उपकार करता है उसे कर्मसत्ता अपार सुख-समृद्धि देती है। हाथी ने खरगोश को बचाया तो कर्मसत्ता ने उसे मेघकुमार बनाकर भगवान श्री महावीर स्वामी का शिष्य बना दिया।

❋ हम जिनके साथ रहते है यदि उनकी दुर्बलता का फायदा उठाते हैं, उन्हें हैरान करते है तो वे भले माफ कर दें पर कुदरत नहीं माफ करेगी।

भादवा सुदी 11 - 17 सितंबर को जगतगुरु की स्वर्गावास तिथि पर

लाखों जैनों के आराध्य गुरु है : जगद्‌गुरु हीरविजय सूरीश्वरजी महाराज

✻ पू.श्री वीररत्न विजयजी म.सा.

आज जैन जगत की विरल विश्व विभूति जगद्‌गुरु अकबर प्रतिबोधक तपागच्छालंकार श्री हीरविजय सूरीश्वरजी महाराज का स्वर्गगमन का दिन है। भारत के कोने-कोने में आज अहिंसा दिवस के रुप में यह दिवस मनाया जाता है क्योंकि आपकी ही प्रेरणा से सम्राट अकबर ने समग्र भारत वर्ष में 6-6 मास तक हिंसा के तांडव को समाप्त करके अहिंसा का जयघोष गुंजित किया था।

आचार्यश्री सच्चे अर्थों में एक महासंत थे, एक विद्वान के शब्दों में देखें तो-सिर्फ वेष परिवर्तन नहीं, राग विसर्जन, द्वेष विसर्जन, मोह विसर्जन से व्यक्ति महान बनता है जिसमें शब्दों की अभिव्यक्ति के साथ भावों की अनुभूति भी हो, स्व-जागरण के साथ सर्व जागरण की ताकात भी हो। करुणा व कृपा का जिसमें संगम हो वही महापुरुष है।

जगद्‌गुरु के जीवन-वन पर प्रकाश डालते हुए अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न विजयजी म. ने कहा- ललाट पर हीरे जैसा तेज था, अतः नाम रखा गया हीरजी। अध्ययन काल समाप्त होने पर गुरुवर के प्रथम दर्शन होने पर हीर-विजयजी ने खड़े-खड़े ही 108 नए काव्यों से वन्दना स्तवना की। दशवैकालिक सहित लाखों सूत्र आपको कंठस्थ थे। आपके आग्रह पर बादशाह ने हिन्दुओं पर 14 करोड़ का कर माफ कर दिया। आचार्यश्री के प्रभावक व्यक्तित्व को देखकर सम्राट ने 1640 में जगद्‌गुरु का पद प्रदान किया। प्रथम मिलन पर सूरीश्वरजी के साथ 67 मुनिवर तथा 303 संघपति थे। राधनपुर पर्दापण पर गुरुभक्त देवसी शाह ने 6000 सुवर्ण मुद्रा से गुरुपूजन किया था। 1637 में आपने अकबर को प्रतिबोध करके अहिंसा प्रेमी बनाया था। आपने 50 जिनालयों की प्रतिष्ठा की तथा 2500 श्रमणों का तथा 3000 साध्वीजी का आपका विशाल परिवार था। आचार्यश्री की तपस्या का भी एक विशिष्ट इतिहास रहा है, 3 उपवास 225 बार, 2 उपवास 225 बार, दो हजार आयंबिल, दो हजार नीवी, 3600 उपवास, 20 बार वीश स्थानक, योगोव्दहन, जीवन भर पांच विगई त्याग, सूरीपद के बाद भोजन में 12 द्रव्य से अधिक नहीं।

वर्तमान में जैन शासन के मूर्तिपूजक संघ के लगभग 10 हजार साधु-साध्वीजी में अधिकांश जगद्‌गुरु हीरसूरीश्वरजी के साम्राज्य में है। चमत्कार था स्वर्गगमन के दिन आसमां में देवविमान दर्शन, बगीचे में आम का प्रगट होना, देवीगीत-संगीत का श्रवण।

चार कषायों में से प्रथम किसको जीतें ?

चार कषायों में प्रथम क्रोध है। पर्युषण के दिनों में क्रोध विजय पर विशेष महत्व दिया जाता है। तो क्या चारों में से सबसे खतरनाक क्रोध है ? दुनिया तो पाप का बाप लोभ को मानती है और **''लोहो सव्वविणासणो''** लोभ सर्व-नाशक है- ऐसा हमारे यहां कहा भी है तो खतरनाक कौन ? क्रोध या लोभ ? अगर लोभ खतरनाक है तो सबसे प्रथम उसको जीतना चाहिये न ? बात सच है। लोभ सबसे खतरनाक है लेकिन चाणक्य की तरह सीधा राजधानी पर हमला नहीं करना चाहिये। पहले आस-पास के गांवों को जितना चाहिये। जिसे सरलता से जीता जाय, उसे सबसे पहले जीतना चाहिये। गरमागरम खिचड़ी में सीधा बीच में हाथ नहीं डाला जाता, लेकिन साईड की कम गरम खिचड़ी पर हाथ डाला जाता है। लोभ बीच में रही हुई गरम खीचड़ी है, अथवा राजधानी है। उसके चारों और माया का वर्तुल है। माया के चारों और मान का वर्तुल है और मान के चारों और क्रोध का वर्तुल है और मान के चारों और क्रोध का वर्तुल है, अब हम पहला हमला किस पर करेंगे ? क्रोध के वर्तुल को ही पहले तोड़ना पड़ेगा। सरल भी यही पड़ेगा। गुणस्थानक में भी देखो। पहले क्रोध जाता है फिर मान, माया और अंत में लोभ जाता है, वह भी दसवें गुणस्थानक में। जितनी आसानी से हम क्रोध को जीत सकते है उतनी आसानी से लोभ को नहीं जीत सकते। क्रोध आते समय ख्याल आ जाता है, परन्तु लोभ में ख्याल ही नहीं आता, कहीं पर भी नहीं दिखता। वह इतना हमारे में डूब गया है कि इसकी चोटी भी नहीं दिखती। इसे पकड़ना कैसे ? जो दिखता है उसे ही पहले पकड़ले तो बहुत आसान होगा।

क्रोध को जीतनेवाला मान को भी जीत सकता है, उसको लगेगा कि क्रोध के मूल में मान है। जब मान भंग होता है प्रायः तब ही मुझे गुस्सा आता है। क्रोध-मान को जीतनेवाला, माया-लोभ को भी जीत सकता है, क्योंकि अब वह आत्म निरीक्षण करना सीख गया है। माया और लोभ गहराई से आत्म-निरीक्षण करना सीख गया है। माया और लोभ गहराई से आत्म-निरीक्षण किये बिना दिखते नहीं है।

पावन पर्वराज पर्युषण

पर्युषण पर्व हमारी तमाम उष्णताओं को शीतलता प्रदान करनेवाला पर्व है। प्राणीमात्र को अन्धकार से प्रकाश की ओर, पशुत्व से देवतव की ओर, पाप से पुण्य की ओर एवं अत्याचार से सहानुभूति की ओर ले जाने वाला राजमार्ग है। इस अकेले पर्व ही में मानव जीवन को उत्तम बनाने, समानता और विश्व बन्धुत्व स्थापित करने वाले कितने सुन्दर पक्ष विद्यमान है। क्षमा, मृदुता, सरलता, शुचिता, सत्य, संयम, तप, त्याग, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य ये दश गुण जब माला बनकर किसी के जीवन को सुशोभित करते हैं तब वहां होती है भावों की निर्मलता, चिन्तन की पारदर्शिता और प्राणी मात्र के प्रति आत्मीय निकटता इनका उदय हमारे भीतर के क्षितिज से ही संभव है।

वर्तमान में जब विश्व हिंसा की सर्वग्रासिनी ज्वाला से धधक और झुलस रहा है नैतिकता और मानवता नानाभरण भूषित नर्तकी की भांति अनृत के मंच पर थिरक रही है भौतिकवाद के स्वार्थी जबड़े और लिप्सा की जीभ्या एक एक करके मानव मूल्यों को चाट रही है। इस आपाधापी और अन्धी दौड़ में ऊपर से सजा इन्सान भीतर ही भीतर खोखला हो रहा है, टूट रहा है। जीर्णारण्य बनते अन्तर्जगत के आत्मसुधार का एक ही मार्ग है। वैचारिक शुद्धि। चूंकि अच्छा या बुरा कुछ भी करने से पहले विचार का जन्म होता है और जब हमारे विचारों की मनोभूमि चारों कषायों और पांचों पापों से मुक्त होगी तभी हम मानव जन्म को सार्थक कर सकते हैं। शैक्सपियर ने कहा है- **''देयर इच नथिंग आइदर गुड और बैड बट थिकिंग मेक्स इट सौ''** चिन्तन के जो बीज हमारी चेतना में पड़ते हैं वहीं कालान्तर में अंकुरित पल्लवित और पुष्पित होते हैं। हमारा प्रयास होना चाहिये कि हमारे विचार उग्रता और आतुरता के रथ पर सवार न होने पायें। आज ऐसे ही पर्व की घर-घर आवश्यकता है। पर्यूषण पर्व चारों ओर फैली सब प्रकार की उष्णता को शांत करने में समर्थ है। इस पावन पर्व पर हम पुनः अपने अन्तःकरण की जुताई करें और इन दश निर्मल भावों के बीज डाल दें। इनकी सुहानी फसल विलम्ब नहीं तत्काल उगती है और चारों ओर सुख शांति समृद्धि का संदेश प्रसारित करती है। इस पावन पर्वराज की सभी को शुभकामनाएं व्रत (संकल्प) से संयम (पुरुषार्थ) से हम अपनी यात्रा सुनिश्चित करें।

हिंसादि का मूल क्या ?

जगत कहता है- हिंसा, झूठ, चोरी, परिग्रह खराब है। जैन कहता है- उसमें भी क्रोध, मान आदि कषाय ज्यादा खराब है। क्योंकि कषायों के आवेश से ही हिंसा आदि का जन्म होता है। हिंसा आदि तो बाहर दिखनेवाली डाल है, किन्तु उनकी जड़ें तो अंदर पड़ी हुई है। हिंसा की जड़ क्रोध में, झूठ की जड़ मान में, चोरी की जड़ माया में और अब्रह्म तथा परिग्रह की जड़ लोभ में पड़ी हुई है। हिंसा, झूठ, चोरी आदि को कानून से दूर कर सकते हैं, किन्तु क्रोधादि के लिए कानून काम नहीं कर सकता। क्योंकि वे तो हमारे भीतर पड़े है, उनका संबंध हमारे साथ है। कोई कानून आज तक ऐसा नहीं बना कि जो आपके अंदर पैदा होनेवाले क्रोध आदि को रोक सके। प्रत्येक आदमी स्वयं सोचे तो ही रोक सकता है। अगर क्रोधादि गये तो हिंसादि भी गये ही समझो।

क्रोध चरम सीमा पर पहुंचता है तब ही आदमी हिंसा में प्रवृत्त होता है। अभियान पराकाष्टा पर पहुंचता है, ''मैं ही बड़ा हूं'' ऐसे घमंड में आदमी रहता है तब वह दूसरों के लिए या खुद के लिये सत्य नहीं बोल सकता है। दूसरे उसे वामन दिखते हैं, खुद वामन होने पर भी विराट दिखता है। ऐसा आदमी स्वयं को ''महान'' दिखाने के लिए असत्य का आश्रय ही लेगा न ?

माया-छल-कपट आदि आदमी को चोरी की और ले जाते हैं। चोरी की जड़ माया में है। माया के बिना कोई क्या चोरी कर सकता है ? व्यक्ति की आसक्ति (लोभ) अब्रह्म की और तथा वस्तु की आसक्ति (लोभ) परिग्रह की और ले जाती है। इसलिए ही हिंसादि से क्रोधादि खतरनाक कहे गये हैं। उसके नाश में संसार का नाश कहा है। तो क्रोधादि का नाश करने के लिये क्या करना ? किसके शरण में जाना ? क्रोध को दूर करने के लिये अरिहंत का शरण लीजिए। क्योंकि अरिहंत क्षमा के भण्डार है। मान को हटाने के लिए सिद्ध भगवंतों का शरण लीजिए। क्योंकि सिद्ध भगवंत इतने नम्र है कि निगोद के जीव को भी अपना साधर्मिक बंधु मानते हैं। माया को दूर करने के लिए साधु का शरण लीजिए। साधु सरलता के भंडार है।

लोभ को हटाने के लिये, धर्म का शरण लीजिए। धर्म संतोष का भंडार है। धर्म मिलते ही मिलने योग्य सभी मिल जाता है। फिर कुछ भी प्राप्त करने की तमन्ना नहीं रहती है।

पर्युषण पर्व का महत्व क्षमा

* श्रीमती प्रभा जैन, देवास

प्रतिवर्षानुसार पर्वाधिराज पर्युषण आते है और हम सभी नव उत्साह, नव उमंग, नव उल्लास, नव तरंग विश्वास के साथ यह पर्व मनाते है और मनाते रहेंगे। इस पर्व के मनाने से हमारे विचार, हमारा व्यवहार, हमारी धारणा में बदलाव आते है। हमारे भाव शुद्ध बने, हमारी क्रियाएं शुद्ध हो, हमारा व्यवहार में परिवर्तन हो तभी हमारा पर्युषण पर्व मनाना सफलता है, सार्थकता है।

यह महापर्व आत्मा को हल्का करने का, निर्मल बनाने का पर्व है। प्राचीन समय से 8 का योग अच्छा माना जाता है-क्योंकि हमारे कर्म 8 है, आत्मा 8 है, सिद्ध प्रभु के गुण 8 है, आहार के प्रकार 8 है, प्रतिहार्य 8 है, मंगल 8 है, प्रवचन माता 8 है। इसी प्रकार पर्युषण के दिन भी 8 है और इसीलिये इसे अष्टान्हिका पर्व भी कहते है, वर्ष में एक बार ही आने से संवत्सर पर्व भी कहते है।

इस पर्व की साधना का मुख्य संदेश मन की मलिनता को दूर करना है, आज नए-नए अविष्कार, नित नए साधनों ने मानवता की बुद्धि का तो विकास किया है परन्तु हृदय की संवेदना को प्रायः समाप्त कर दिया है। मानव में स्नेह, प्रेम वात्सल्ता, करुणा का अभाव हो रहा है। इस महामंगलकार पर्व पर अंतगढ़शास्त्र का वाचन होता है जिसमें 90 आत्माएं मोक्ष में गई। भगवान श्रीमहावीर से संबंधित कल्पसूत्र का वाचन होता है, बारसा सूत्र का वाचन होता है। कई भाग्यशाली आत्माएं इन कल्याणकारी दिनों में धर्म आराधना, ज्ञान आराधना से अपनी आत्मशुद्धि का भव्य पुरुषार्थ कर तप आदि कर अपने जीवन में नवीनता, स्फूर्ति और उल्लास का अनुभव करता है।

पर्युषण महापर्व हमारे जीवन का प्राण है, यह पर्व शुद्धि का सूत्र है, इस पर्व का आठवां दिन संवत्सरी का दिन तो जैन संस्कृति की आत्मा है। इस दिन क्षमा का आदान-प्रदान करने से क्रोध भी क्षमा के आगे नतमस्तक हो जाता है। क्योंकि क्रोध का अंत क्षमा है और क्षमा हमारी आत्मा का स्वभाव है।

पर्युषण पर्व क्षमा के रुप में प्रसिद्ध है, कहा भी गया है-

नरस्य भूषणं रुपं, रुपस्य भूषणं गुणं।
गुणस्य भूषणं ज्ञान, ज्ञानस्य भूषणं क्षमा॥

अर्थात् क्षमा की उत्तम आराधना क्षमा ही है। मुनि नागदत्त का हमारे जैन दर्शन में वर्णन आता है। मुनि नागदत्त का चारित्र क्षमा से केवल ज्ञान को दर्शाता है। नागदत्त मुनि भाव साधक था, वह तपस्या आदि नहीं कर सकता था, इसलिए उनके साधु नागदत्त की मजाक उड़ाते थे। नागदत्त शरीर साधक नहीं था, उसने क्रोध को जीतने का व्रत लिया था। मुनिगन उसका उपहास करते, उसकी मजाक उड़ाते और उस पर व्यंग भी करते। इस पर नागदत्तमुनि अपनी स्वयं की आलोचना करते और स्वयं को धिक्कारते।

एक समय की बात है, पर्व का दिन था, सभी मुनियों को व्रत था। नागदत्त मुनि गोचरी गए, गोचरी लाकर चारों मुनियों को आचार के नाते आहार दिखाकर आहार की आज्ञा ली- मुनियों को उपवास था, आहार देखकर बहुत क्रुध हुए और आहार के पात्रे में थुक दिया।

परन्तु नागदत्तमुनि क्रोधित नहीं हुए, शांत रहे और हाथ जोड्कर क्षमा याचना की- मुनिवर मैं अपने थुकने के लिए पात्र, पीकदान नहीं ला सका, ''मेरा अपराध क्षमा करें।'' ऐसे क्रोध विजयी नागदत्त के लिए देव दुन्दुभी बजी और उन महातपस्वी मुनियों के पहले केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त किया। कहने का तात्पर्य यही है कि- काया को नहीं कषायों को तपाना है।

पर्युषण महापर्व का क्षमापर्व आत्मिक शांति, मानसिक शुद्धि, निर्मलता, उज्जवलता का सूचक है। क्षमा धर्म का प्राण है, जैनत्व की पहचान है। अंत में मैं यही कहूंगी---

पर्वों में सिरमोर पर्युषण पर्व श्रेष्ठ।
सभी पंथ, धर्म में मोक्ष मार्ग श्रेष्ठ॥
राग-द्वेष से रहित मानव जीवन श्रेष्ठ।
आत्मिक शुद्धि का संवत्सरी दिन श्रेष्ठ॥

अरिहंत की भक्ति
(चार निक्षेप में नवधा भक्ति)

- **नाम निक्षेप की (भक्ति) श्रवण कीर्तन स्मरण से!**
- **स्थापना निक्षेप की वंदन पूजन अर्चन से!**
- **द्रव्य निक्षेप की दास्य या सख्यभाव से!**
- **भाव निक्षेप की आत्मनिवेदन से!**

वर्ग पहेली क्रमांक-316

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2	■	3		4	5	6	■
7		■		■	8			9
■	10			11	■		■	
12		■	13		14	■	15	
	■	16		■	17		■	
18		■	19	20		■	21	
	■	22	■	23				■
24	25		■	■		■	26	27
■	28					■	29	

बाएं से दाएं:-

1- सम्राट अकबर को प्रतिबोध देने वाले जगत गुरु का का नाम-ही --- जय सूरी (2)

3- पालीताना के निकट बोदानोनेस गांव में स्थित ऋषभ प्रभु का तीर्थ (5)

7- यथार्थ, वास्तव, सत्य का पर्यायवाची- ---(2)

8- लक्ष्मणी और मोहनखेड़ा के बीच आदिनाथ भगवान का तीर्थ---र (4)

10- प्राचीन समय में दिगम्बर जैन मुनि के लिये प्रयुक्त शब्द--- (4)

12- माता त्रिशला ने चैत्र सुदी तेरस को सिंह ल--- वाले पुत्ररत्न को जन्म दिया (2)

13- वरमाण के निकट भ.महावीर का प्राचीन तीर्थ---(3)

15- रतलाम जिले में भ.शांतिनाथ का प्राचीन तीर्थ---लिया (2)

16- भगवान महावीर के बड़े भाई का नाम---वर्धन (2)

17- तेरे--- खड़ा भगवान, भगत भर दे रे झोली--- एक फिल्मी भजन (2)

18- मातंग नाम है भगवान महावीर के--- का (2)

19- पालनपुर में जन्मे आचार्य जिन्हें जगतगुरु की उपाधि दी गई- ही---य सूरि (1,2)

21- वृक्ष की छाल और लगड़ी से निकलनेवाला पदार्थ--(2)

23- सोलह सतियो में से एक--- (4)

24- धार जिले में स्थित श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का प्राचीन तीर्थ मां---ढ़ (3)

26- तेईसवें तीर्थकर श्री पार्श्वनाथ भगवान के अनेक भवों में से एक भव--- भूति (2)

28- गुजरात के वल्लभीपुर में आगम ग्रंथों के लेखन का महत्वपूर्ण कार्य करनेवाले आचार्य श्री देवर्धिगणि--- (5)

29- खरीफ मौसम की एक तैलीय फसल---(2)

ऊपर से नीचे:-

1- जो भरा नहीं है भावों से, बहुती जिसमें--धार नहीं। वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ॥ - एक देशभक्ति की कविता (2)

2- दिल्ली के महरोली व जयपुर के दादावाड़ी मंदिर में साध्वीरत्न---श्रीजी महाराज की प्रतिमा स्थापित है (4)

3- कुमुदचंद्राचार्य रचित पार्श्वनाथ स्तोत्राम का दूसरा नाम--- स्तोत्र है (3,3)

4- यह केवल शकर से बनाया जाता है और पूजा में भी काम आता है---शा (2)

5- एक छोटासा जीव जो घर-बगीचे में फुदुकता दिखाई देता है---री (3)

6- पूजा करने वाली कहलाती है-पूजा--- (2)

9- यहां से माता मरुदेवी मोक्ष सिधारी---(5)

11- गाय के गोबर से बने उपले का दूसरा नाम---है (2)

12- वह पावन भूमि जहां महावीर प्रभु का च्यवन जन्म और दीक्षा कल्याणक हुआ --- (5)

14- भगवान महावीर का एक भव-भा--- (3,3)

20- एक जैन कवि, दार्शनिक और विद्वान जिन्हें महात्मा गांधी के आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रुप में भी जाना जाता है-क---मद राजचंद्र (1,1)

21- जिसने रथनेमि को प्रतिबोध दिया, सोलह सतियो में से एक (4)

22- भगवान के जन्म कल्याणक उत्सव में सबसे पहले आने वाली 8 दिक्कुमारियों में से एक---लिनी (2,1)

25- सीना, छाती का पर्याय--- (2)

27- इसका शाब्दिक अर्थ होता है सुन्दर लता-चा--ता (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-315 का परिणाम

मा	न	दे	यी	■	जा	त	ना	■
या	र	■	क्षा	मा	न	ना	■	पै
■	भ	ला	■	न्य	■	थ	रा	द
न	व	ल	य	ता	ल	■	व	मी
मा	■	व	त	■	■	सं	■	र
मि	ती	■	न	■	मं	ग	ल	म
नि	य	म	■	रा	■	म	न	■
त्य	■	हा	श	त	क	■	पु	र
म	णि	भ	द्र	■	मे	घ	र	थ

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-316

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

नीचे दिये गये प्रसंग पर से कहे कि किसे वैराग्य हुआ और किसे केवलज्ञान ?

1- मुझे वैराग्य देवलोक है या मनुष्यलोक इसकी परीक्षा करते हुआ था ?

2- मुझे वैराग्य सुदर्शन सेठ के दर्शन करते हुआ था ?

3- मुझे वैराग्य कँचु की वृद्धावस्था देखकर हुआ था ?

4- मुझे केवलज्ञान तलवार के प्रहार को सहते-सहते हुआ था ?

5- मुझे केवलज्ञान भगवान के निर्वाण की बात सुनकर हुआ था ?

6- मुझे केवलज्ञान पात्र प्रतिलेखन करते हुआ था ?

7- मुझे वैराग्य अपनी काया में रोग के दर्शन करते हुआ था ?

8- मुझे मंत्रीयुद्धा देखकर वैराग्य हुआ था ?

9- मुझे केवलज्ञान माया मुनि के वंदन की भावना से हुआ था ?

10-मुझे केवलज्ञान कायोत्सर्ग मुद्रा में हुआ था ?

स्वच्छन्द टालने की जिसे इच्छा है उसको ज्ञानी की आज्ञा की आराधना करनी चाहिये और प्रतिबंध टालने की जिसे इच्छा है उसको सर्व संग का त्याग करना चाहिये।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 030001000331

IFSC Code ICIC0000300

वर्गपहेली क्रमांक-315 के परिणाम

विजेता:-

1-श्रीमती सुधा धारीवाल, देवास (म.प्र.) - प्रथम

2-रेशम बहन कोठारी, नीमच (म.प्र.) -द्वितीय

3-श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर (म.प्र.) -तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे:-

सुधा लोढ़ा, उज्जैन, प्रभा जैन, देवास, भारती जैन, देवास, श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-315 के परिणाम

सही उत्तर-

1- पावापुरी, 2- आगम, 3- एक पद सिद्ध भगवान का, 4- गजसुकुमाल, 5- अर्जुनमाली, 6- ज्ञान पंचमी, 7- भव विरह, 8- विमलेश्वर देव, 9- विनय गुण, 10-लाभांतराय, 11- ललित विस्तरा।

किसी के भी उत्तर सही नहीं थे

✻ अच्छा साधक वही है जो अपने दुर्गुणों को माफ नहीं करता और दूसरों के दुर्गुणों के प्रति क्रोध नहीं करता, द्वेष नहीं करता।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-9-2021 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

जैन जगत के करीब 150 से अधिक श्रीसंघों में आगमोद्धारकश्रीजी की जन्म जयंति विविध आयोजनों के साथ मनी

उज्जैन- भारत का जैन श्री संघों में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीजी महाराजा का 147 वां जन्मदिन बड़े उत्साह उमंग और विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। सागर समुदाय के श्रमण श्रमणीवृंद के 143 चार्तुमासवाले श्रीसंघों में लगभग 900 साधु-साध्वीश्री की अमृत निश्रा में यह आयोजन हुआ। पूज्यपाद सागर गच्छाधिपति की निश्रा में कात्रज पूना में मुख्य आयोजन हुआ इसके साथ ही 23 आचार्य भगवंत, 1 उपाध्याय, 9 पंन्यास, 11 गणिवर्य की निश्रा में आयोजन हुए। पूना, पालीताना, मुंबई, नागेश्वर, हरिद्वार,उदयपुर,दिल्ली, अहमदाबाद, सूरत,उज्जैन, चैन्नई, इन्दौर अयोध्यापुरम्, देपालपुर आदि स्थानों के साथ साध्वी भगवंत के चार्तुमास स्थलों पर भी भव्य जन्मोत्सव मना। ड्रॉ, नाटिका, गुणानुवाद सभा, मंचीय कार्यक्रम, प्रश्न पत्र प्रतियोगिता जैसे अनेक आयोजनों के साथ पूज्य पादश्री का मंगल स्मरण किया गया।

धर्मक्रांति मशाल लिये गणि श्रीआनंदचंद्र सागरजी के प्रवचनों की अमृत धारा बह रही है

सूरत- यहां के श्री वासुपूज्य स्वामी प्रभु की छत्राछाया में भटार श्री संघ में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान गणिवर्य श्री पद्मचंद सागरजी म.सा. के सुशिष्य प्रखर प्रवचनकार गणिवर्य श्री आनंदचंद सागरजी म.सा.,मुनि मनकचंदसागर जी, मुनि प्रवर श्री चारित्र चंद्रसागरजी म.सा. मुनिश्री उत्सवचंद्र सागरजी म.सा.आदि ठाणा साधु-साध्वीश्री की निश्रा में प्रवचन की गंगा बह रही है। पूज्य गणिवर्यश्री ने अगस्त माह में जिनशासन जययंता है, सिद्ध पुरुष, इन्टरनेट या ईश्वरनेट परिवार को प्रोग्राम My Life My Dream विषयों पर प्रवचन का मौका सूरत में नव जाग्रति का शंखनाद किया है इसके साथ ही प्रत्येक रविवार को संस्कार प्रवचन माला में बड़ी संख्या में युवाओं को आकर्षित कर संस्कार का पाठ पढ़ाया है।पूज्यपाद श्रीसागरजी म.सा. की जन्म जयंति विशाल पैमाने पर मनाई गई अन्य महापर्व की तैयारी चल रही है।

महामंत्र के 68 अक्षरों का पूजन

वापी- सागर समुदाय के अनुयोगाचार्य श्री लब्धिचंद्रसागर सूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में यहां महामंत्र नवकार के 68 अक्षरों का महापूजन आयोजित किया गया। 21 अगस्त को श्री आदिनाथ जैन संघ, अशोक वाटिका के गुंजन विस्तार में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

***** दूसरों के दुःख में दुःखी होना बड़ी बात नहीं, दूसरों के सुख में सुखी होना बड़ी बात है।***

श्री सिद्धचक्र केशरियानाथजी महातीर्थ उज्जैन में सामुहिक धर्माराधना होगी

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनी राम पेढ़ी परसागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. एवं साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी म.सा.आदि ठाणा निश्रा मे चातुमार्सिक आराधना में चल रही है। 21 अगस्त को जिनागम सेवी, प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा. के जीवन के सौ बसंत पूर्ण होने पर चारित्र उपकरण पर वंदनावली का आयोजन किया गया धर्म क्रिया के अनुसार उपकरणों की बोली लगी

पूज्य साध्ववर्या के साथ पूज्य आचार्य भगवंत श्री मुक्तिसागरसूरी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में पर्युषणा महापर्व आराधना दिनांक 3-9-2021 से10-9-2021। जिनागम सेवी, प.पू.गच्छाधिपति आ.भ.श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा. के जीवन के सौ बसंत पूर्ण होने एवं 101 वें वर्ष प्रवेश पर त्रिदिवसीय महोत्सव दिनांक 3,4,5 अक्टूबर 2021को होगा शाश्वती नवपद ओलीजी आसोज सुद 7 से 15, दिनांक 12 से 20 अक्टूबर 2021 से होगी होगी दीपावली पर्वाराधना चरम तीर्थाधिपति प्रभु महावीर के निर्वाण कल्याणक की आराधना कार्तिक वद 14-30 दिनांक 3-4 नवंबर के बेले एवं कार्तिक सुद 1 दिनांक 5-11-2021 को प्रातः नूतन वर्ष की महामांगलिक होगी

पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री के शतायु होने पर पूना में 12 महाआयोजन का शंखनाद

पूना- पूना में विराजमान समस्त साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में साध्वी श्री दिव्यदर्शना श्रीजी म.सा. की प्रेरणा एवं शताब्दी शंखनाद युवा समिति, पूना के द्वारा 12 महाआयोजनों का भव्य कार्यक्रम अलग-अलग तरीके से पूना शहर में किया जा रहा है। 12 कार्यक्रमों के अंतर्गत 1-36 दिन तक घर-घर में जन्म बधाई। 2- 100 दिन तक पूज्यपाद श्रीजी की गौरवगाथा का गुणगान। 3- 36 दिन तक घर-घर में नवकार उत्सव। 4- पूना के लिये देसावगासिक शिविर। 5- 100 दिवसीय शक्रस्तव महाभिषेक। 6- 100 विविध महापुरुषों की जीवन गाथा का गुणगान। 7- बहनों के लिये वीरप्रभु के 21 भव का स्तवना। 8- 100 उपाश्रय का शुद्धिकरण। 9- 100 दिन तक 9 लाख सामायिक एवं 9 करोड़ महामंत्रा का जाप। 10- जन्मदिन पर 5000 दीपक के एकासणा एवं 12- 1000 परिवारों को कीट का वितरण का आयोजन हो रहा है।

गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी 16 दिवसीय श्री वर्धमान विद्या आराधना करेंगे

नईदिल्ली - आचार्य भगवंत श्री मृदु रत्नसागर सूरीजी महाराज के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश श्री सुमतिनाथ परमात्मा के परिसर नई दिल्ली के श्रीमंडार जैन श्वेतांबर संघ में होने के बाद चार्तुमासिक अराध्ना अच्छी चल रही है। साध्वीवर्या अमित गुणा श्रीजी म. सा. की प्रशिष्या साध्वी श्री स्नेहझरा श्रीजी का चार्तुमास भी हो रहा है। 9 अगस्त को महामांगलिक का आयोजन हुआ। चातुमार्सिक आराधना के अंतर्गत श्री पार्श्व अट्ठम तप, नवकार महामंत्र आराधना, ज्ञान पंचमी के साथ 19 अक्टूबर से 16 दिवसीय श्री वर्धमान विद्या आराधना गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म. सा. करेंगे। धर्मिष्ट पूज्यश्री के दर्शन वंदन करनेवाले आ रहे है।

नव-अपूर्व अमरभक्त परिवार : पालीताना में उपधान तप

पालीताना- श्री नव-अपूर्व अमर भक्त परिवार के द्वारा शत्रुंजय महातीर्थ में विराधना से विरती की ओर ले जाने वाली श्रावक से श्रमण बनानेवाली महामंगलकारी उपधान तपाराधना का आयोजन होने जा रहा है। श्री नव-अपूर्व कृपापात्र मुनिप्रवर श्री आगमरत्न सागरजी म.सा., मुनिश्री प्रशमरत्न सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री वज्ररत्न सागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीवृंद की मंगल निश्रा में तप का प्रथम मुर्हूत ज्ञानपंचमी दिनांक 9 नवंबर को है। दूसरा मुर्हूत 11 नवंबर को तथा मालारोपण 27 नवंबर को होगा। संपर्क सूत्र 9993948331

✻ शरीर की भूख तो चार रोटी से शान्त हो जाती है पर मन की भूख जितना मिले, उतनी बढ़ती जाती है।

उमराश्री संघ में महादीर्घ तपस्या

उमरा- यहां के चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान पूज्य आचार्य भगवंत श्री रश्मिरत्नविजय सूरीजी म.सा., आचार्य श्री संयमरत्न सूरीजी म.सा., पं. प्रवर श्री पद्मबोधि विजयजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी की पावन निश्रा में पूज्य साध्वीवर्या श्री परमानंदरेखा श्रीजी म.सा. की 51 उपवास एवं साध्वी श्री ज्ञानात्सरेखा श्रीजी म.सा. के मासक्षमण तप आराधना निमित्त दिनांक 21 अगस्त को बहनों की सांझी एवं 22 अगस्त का तप संवेदना का आयोजन किया गया। अन्य अनेक साधु-साध्वी भगवंतों की विभिन्न तपाराधना भी चल रही है।

श्रुतज्ञान सत्कार समारोह

देवबाग- श्री जैन देवबाग लक्ष्मी आश्रम उपाश्रय में पूज्यपाद आचार्य हेमप्रभसूरीजी म.सा., आचार्य श्री पूर्णचंद्रसागरसूरीजी म.सा., पंन्यास प्रवर सत्यसुन्दरविजयजी, मुनि श्री दीपरत्नसागरजी म.सा. एवं जामनगर में स्थित सभी साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में 28 अगस्त को पूज्य आगम दिवाकर डॉ. मुनिप्रवर श्री दीपरत्न सागरजी म.सा. द्वारा सर्जित किये गये आगम परिभाषा कोष के लिये भव्य सत्कार समारोह आयोजित किया गया। विश्व में प्रथम बार किसी मुनि भगवंतों ने आगम परिभाषा का ज्ञान करवाने के लिये इस प्रकार के कोष का निर्माण किया है।

मालवा के अनेक श्री संघ के धर्मिष्ठों का युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी आदि ठाणा के दर्शन वंदन के लिये हरिद्वार निरंतर आगमन

मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी एवं मुनिश्री उज्जवलरत्नसागरजी म.सा. के द्वारा सिद्धितप की आराधना करे तप की कीर्ति और उज्जवलता से हरिद्वार चार्तुमास में चार चांद लगा दिये। 27 से 29 अगस्त तक हुए तप महोत्सव एवं पारणा पर बहुत-बहुत अनुमोदना।

✻ आचार्स भगवंत श्रीदेवचंदसागरसूरीजी म. सा. उपाध्याय श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा. आदि साधु भगवंत ठाणा - 15 साथ में ही है ✻ पूज्यपाद सागरजी महाराजा की जन्म जयंति मनी। ✻ आगामी महामांगलिक 9 अगस्त को हुई। ✻ जिनालय शुद्धिकरण में म.प्र., राजस्थान, वागड़ के 1200 जिन मंदिरों में शुद्धिकरण हुवा। ✻ महापर्व बधाने की जोरदार तैयारी। ✻ धर्मिष्ठों को पर्व के लिये बुलाया। ✻ महामंत्र आराधना होगी। ✻ सूरी मंत्राराधना की तैयारी। श्री वीरप्रभु के निर्वाण कल्याणक की आराधना। ✻ नूतन वर्ष की महामांगलिक। ✻ छ:रिपालित यात्रा संघ निकालने की चर्चा। ✻ आगामी आयोजन तैयारी की रुपरेखा बनी।

हरिद्वार-मालवा से लगभग 1200 किलोमीटर दूर जबर्दस्त जैन शासन की प्रभावना करते हुए युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. ने अपने युवा शिष्यों को बड़ी प्रेरणा दी और गुरुदेव मालव भूषण आचार्यभगवंत श्री नवरत्नसागर सूरी जी महाराजा की भावना के अनुकूल सबको साथ लेते हुए आपने श्रमण धर्म का जोरदार पालन कर रहे है। पूज्य आचार्य भगवंत श्री देवचंदसागरसूरीजी म.सा. एवं उपाध्याय श्री वैराग्यरत्न सागरजी म. सा. के साथ विहार कर गुरुनवरत्न कृपापात्र, युवा हृदय सम्राट, महा मांगलिक प्रदाता परम पूज्य आचार्य देव श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी महाराजा , प.पू.मुनिश्रीकीर्तिरत्नसागरजी म.सा., प.पू. मुनिश्रीतीर्थरत्नसागरजी म. सा., प.पू. मुनि श्री उदयरत्नसागर जी म.सा. ,प.पू.मुनिश्री उत्तमरत्नसाग रजी म.सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ञवलरत्नसागरजी म. सा.,प.पू.मुनि श्रीगंभीररत्नसागरजी म. सा., प.पू.मुनि प.पू. मुनि श्री रम्यरत्न सागरजी म.सा.,प.पू.मुनि श्री लब्धि रत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास हरिद्वार के श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन श्री संघ के परिसर चल रहा है। बैंगलोर से श्री सुरेन्द्र गुरु का आगमन 9 अगस्त की महामांगलिक में हुआ। मांगलिक में ही हस्तिनापुर का छ:रिपालित यात्रा संघ निकालने की चर्चा हुई, फाईनल होने के लिये बात चल रही है।हरिद्वार में आपका भव्य मांगलिक प्रवेश 19 जुलाई को हुआ था।महापर्व, पर्युषण नवकार महामंत्र आराधना ,शाश्वत आसोज ओली सूरी मंत्राराधना, विशिष्ट प्रवचन माला के साथ,छःरि पालित यात्रा संघ निकलने की योजना है। आपकी निश्रा में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले जिनालय शुद्धिकरण का कार्यक्रम 29 अगस्त को होने जा रहा है। राजस्थान, वागड़ और मध्यप्रदेश के मालवा आदि स्थानों के 1200 जिन मंदिरों के शुद्धिकरण का लाभ श्रीमती पंकु बहन भूरमलजी कोठारी, श्रीमती विमला बहन तेजराज जी कोठारी परिवार चैन्नईवालों ने लिया है।। समाचार लिखने तक तैयारी पूर्ण हो गई थी।

श्री नागेश्वर महातीर्थ में आचार्यश्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी ने सूरी मंत्राराधना के अंतर्गत चार पीठाका की साधना की

नागेश्वर- नागेश्वर- विश्व विख्यात महा-तीर्थ श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ दादा के दरबार में आचार्य भगवंत श्री जितरत्न सागरसूरीजी म.सा. 255 ओली आराधाक श्री आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री चैत्यरत्नसागरजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी, मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा. के साथ साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी, श्री कल्पज्योति श्रीजी, श्री शासनज्योति श्रीजी,श्री कल्पदद्रुमा श्रीजी, श्री चन्द्ररत्नाश्रीजी, श्री हितेषाश्रीजीश्री श्रीसुनंदिता श्रीजी, श्री अर्चिताश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की चातुमार्सिक आराधना अच्छी चल रही है पूज्य आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागरजी म.सा. ने यहां श्री सूरी मंत्राराधना में गुप्तवास और मौन के साथ बेले के पारणा बेला आयंबिल पारणा के साथ त्रिभुवन स्वामिनी दूसरी पीठिका की आराधना पूर्ण की। 12 अगस्त को पूर्णाहुति हुई, 13 अगस्त से श्री लक्ष्मीदेवी तीसरी पीठिका की 25 दिन की आराधना आरंभ की एवं 6 सितंबर से चौथी पीठिका की सलंग्न आराधना आरंभ करेंगे। 16 अगस्त को आपश्री की यह साधना पूर्ण होगी फिर पारणा के साथ आयोजन होंगे। पूज्य आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी अपनी वाणी के जादू से व्याख्यान में धर्मिष्ठों को मंत्र मुग्ध कर रहे है। मुनिश्री चैत्यरत्न सागरजी भी जोशीली वाणी में प्रवचन दे रहे है। पूज्यश्री सागरजी म.सा. की जन्म जयंति के बाद पर्वाराधना की तैयारी चल रही है।

डॉ. सुभाष जैन अमरावती श्री संघ में पर्वाराधना करवायेंगे

अमरावती- अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक शासनरत्न श्री मनोज कुमा र बाबूलालजी हरण की प्रेरणा और मार्गदर्शन के साथ अमरावती जैन तपागच्छ श्री संघ के वासूपूज्य स्वामी जिनमंदिर परिसर में संघ के श्री महावीरजी भंसाली आदि वरिष्ठों के आग्रह पर डॉ. सुभाष जैन एवं यश जैन महापर्व पर्युषण की आराधना दिनांक 3 से 10 सितंबर तक करवाने के लिये अमरावती पहुंचे। संघ में निर्विहन रुप से उमंग उत्साह के साथ विभिन्न आयोजन के साथ आराधना हुई।

अनुयोगाचार्यश्री की निश्रा में पर्वाराधना

इन्दौर- श्री वीरमणी चंद्रप्रभ स्वामी जैन मंदिर परिसर ओएसिस टाउनशीप इन्दौर में चार्तुमास आराधना के लिये विराजित पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. की अमृत निश्रा में महापर्व पर्युषण का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 3 से 10 सितंबर तक होनेवाले आयोजन के अंतर्गत प्रथम तीन दिवस श्रावकों के लिये कर्त्तव्य संदेश पर आधारित प्रवचन एवं अंतिम 5 दिन ग्रंथाधिराज श्री कल्पसूत्र का वाचन होगा। 10 सितंबर को बारसा सूत्र वाचन एवं 11 सितंबर को जिन मंदिर का द्वारोद्‌घाटन होगा।

बडोदरा में श्री नेमिनाथ प्रभु के अट्‌ठम तप

बडोदरा- 22 वें तीर्थकर परमात्मा श्री नेमिनाथ प्रभु के जन्म एवं दीक्षा कल्याणक पर यहां के गिरनार भक्ति युवा समिति के द्वारा सम्पूर्ण बडोदरा में सामुहिक अट्‌ठम तप का आयोजन किया गया। 12 से 14 अगस्त तक अट्‌ठम तप हुए एवं इसके पूर्व 11 अगस्त को उत्तर पारणा करवाये गये। 15 अगस्त को पारणा निजामपुरा में हुए।

मुंबई में श्री नेमि जन्म कल्याणक और महालक्ष्मीपूजन हुई

मुंबई- श्रीयति ज्वेलपर्ल बिल्डिंग सी.पी. टैंक में चार्तुमास हेतु विराजित सागर समुदाय के आचार्य भगवंत श्री चंद्राननसागर सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में बाल ब्रह्मचारी 22 वें तीर्थकर परमात्मा श्री नेमिनाथ प्रभु के जन्म कल्याणक 13 अगस्त को भव्य आयोजन किया गया। आपश्री की निश्रा में श्री ठाकुरद्वार जैन श्री संघ में 15 अगस्त को श्री महालक्ष्मी पूजन का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने भाग लिया।

225 गुरु भगवंतों का चार्तुमास

सूरत- भक्ति योगाचार्य आचार्य भगवंत श्री यशोविजयजी म.सा., शास्त्र संशोधक आचार्य श्री मुनिचंद सूरीजी म.सा., आचार्य श्री राजपुण्यसूरीश्वरजी म.सा, आचार्यश्री भाग्येशविजय सूरीजी म.सा. तथा आचार्यश्री के समुदाय के 225 साधु-साध्वी भगवंतों का चार्तुमास एक साथ भीलड़ीयाजी तीर्थ में चल रहा है।

100 वर्षीय हुए सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपतिश्री की अभ्यर्थना में 100 की श्रृंखला में अद्भूत शासन प्रभावक अनेक महायोजन

✻ मोह विजय शंखनाद: आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धनसागर सूरीजी म.सा. की प्रेरणा से पूज्यपादश्री के जीवन की अविस्मरणीय घटनाओं का विवरण। ✻ 100 दिन में 10000 आराधकों के द्वारा 21,00,000 लाख सामायिक,1 करोड़ 8 लाख श्री चारित्रपद का महाजाप।

✻ पूज्यपाद आचार्य भगवंतश्री हर्षसागर सूरीश्वरजी महाराजा की प्रेरणा से 100 किलो शुद्ध चांदी की श्री आदिनाथ दादा की प्रतिमा का निर्माण।

✻ 100 किलो शुद्ध चांदी की श्री पुंडरिक स्वामीजी की प्रतिमा का निर्माण आगम मंदिर कात्रज पूना के संयोजन में।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री के 100 वर्ष पूर्ण होने के अनुमोदनार्थ:- ✻ 100- श्रीसंघों में - ✻ 100- श्रमण-श्रमणी भगवंतों के द्वारा- 100- दिवसीय गुरु गुण गाथा कीर्तन- ✻ आयोजन 8 अगस्त से आरंभ 15 नवंबर तक चलेगा।✻ प्रेरणा मार्गदर्शन:- पूज्य आचार्य भगवंत वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागरसूरीश्वरजी महाराजा एवं 255 वीं वर्धमान ओली के आराधक श्री चंद्ररत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज। व्यवस्था- शताब्दी शंखनाद परिवार।

शासन प्रभावक का भव्य शंखनाद : शताब्दी शंखनाद मार्ग दर्शन समिति के 7 आचार्य भगवंतों केमार्गदर्शन एवं प्रेरणा से - : ✻100- जिन मंदिरों का निर्माण।✻100- साधु-साध्वी भगवंतों के परिवारों का बहुमान। ✻100- श्रमण-श्रमणी के परिवारों का मेड्रिक्लेम।✻100- पुस्तकों का प्रकाशन।✻100- श्रीसंघों में संस्थाओं के पदाधिकारियों का सम्मान।100- उपाश्रय का निर्माण। ✻100- तीर्थो का जीर्णोद्धार।

पूना- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवालेपूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजात शत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, पूज्य आचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी एवं आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. आदि-12 ठाणा एवं पूज्य साध्वी श्री नमिवर्षा श्रीजी की चार्तुमासिक आराधना चल रही है पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा के जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत सागर समुदाय के श्रमण भगवंतों के द्व ारा 100 दिवसीय आयंबिल आराधना का शुभांरम जेठ वदी -5 दिनांक 29 जुन को आरंभ हुई जिसकी पूर्णाहुति भाद्र वदी- 14 दिनांक 29 अक्टुबंर को होगी पूज्य आचार्य भगवंत अजात शत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, पूज्य आचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी एवं आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. की प्रेरणा से 100 दिवसीय भद्रतप 29 जून से आरंभ हुआ है, तप की पूर्णाहुति 5 अक्टूबर को अंतिम उपवास के साथ होगी। पूर्णाहुति 6 अक्टूबर को होगी। पूज्यपादश्री की अभ्यर्थना में संपूर्ण सागर श्रमण-श्रावक समुदाय विभिन्न तप जप क्रिया के आयोजन निरंतर कर रहे है। आपश्री 100 वर्ष पूर्ण होने तथा संयम जीवन की 82 वर्ष की कठोर चरित्र की आराधना के बेजोड़ श्रमण है शताब्दी शंखनाद परिवार के बैनर पर सब कार्यक्रम हो रहे है। पूज्यपादश्री के सम्मान की कड़ी में। श्रमण श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़ चढ़कर इसमें भाग ले रहे है।

सागर गच्छाधिपति की अभ्यथनी में 1 करोड़ 8 लाख 8 हजार लोगस्स भाष्य जाप आयोजन

मुंबई- सुविशाल सागर समुदाय के 100 वर्षीय गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा के 100 वर्ष पूर्ण होने की अभ्यथनी में पूज्य आचार्य भगवंत श्री सागरचंदसागरसूरीजी म.सा. की प्रेरणा और मार्गदर्शन में 1 करोड़8 लाख 8 हजार लोगस्स भाष्य जाप का आयोजन 8 अगस्त से आरंभ हुआ जो 19 सितंबर तक चलेगा। 100 दिन तक 100 लोगस्स का पाठ किया जाना है। एवरशहिन जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक श्री संघ वासुपूज्य जिनालय कांदिवली मुंबई इस आयोजन के लाभार्थी है ।100 विशिष्ट जाप आराधकों का बहुमान किया जायेगा।

वागड़ नरेश आचार्यश्री का आयड़ श्री संघ में चातुमार्सिक आराधना अच्छी चल रही है

उदयपुर- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीजी म.सा. के तीसरे सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी मुनिश्री अर्हम्रत्न सागरजी सा.मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की चातुमार्सिक आराधना अच्छी चल रही है ।आपश्री की महामांगलिक का आयोजन महामांगलिक 9 अगस्त को हुई ।अष्ट प्रातिहार्य तप 3 अगस्त से आरंभ होकर 24 दिन 24 अगस्त को पूर्ण हुआ। इसमें 8 उपवास, 8 एकासणा और 8 बियासणा हुए। 15 अगस्त को मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी के द्वारा देश आजाद : प्रजा बर्बाद पर व्याख्यान दिया गया। बच्चों के लिये सामुहिक अष्टप्रकार की पूजा का आयोजन 29 अगस्त को किया गया । पूज्यश्री के द्वारा चातुमार्सिक आराधना के अंतर्गत 18000 मुनि वंदना, 36 बियासणे, जन्म कल्याणक पर स्टेज शो, आगम परिचय वाचना, शाश्वत जिनालय भावयात्रा,सूरी मंत्रा राधना,महापर्व पर्युषण शाश्वतआसोज ओली, विशिष्ट प्रवचनमाला के साथ उपधान तप एवं श्री नाकोड़ा का संघ,छःरिपालित यात्रासंघ निकलने की योजना है।

सुनकर धर्मशाला पालीताना में नवकार महामंत्र आराधना हुई

पालीताना- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठआचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नवअपूर्व अमर कृपापात्र बंधु त्रिपठी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म.सा. की निश्रा में चार्तुमास की पालीताना में चल रही है। आपका चार्तुमास सुनकर धर्मशाला में हो रहा है। विभिन्न आराधना चल रही है, नवकार महामंत्र आराधना हुई चार्तुमास का लाभ एक ही परिवार ने लिया है। यहां आपकी भावना उपधान तप कराने की है।

✻ समस्या का आखरी समाधान माफी है कर दो या मांग लो !!

पंच दिवसीय शाही बाग गिरधरनगर में गुरु गुणरत्न गुणानुवाद

अहमदाबाद- शाही बाग गिरधर नगर जैन संघ में आचार्यदेव श्री रविरत्न सूरीजी म.पं. वैराग्यरत्न वि.म.,पं.श्री जयेशरत्न वि.म. एवं मुनिराज श्री करुणादृष्टिविजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वीजी की पावन निश्रा में 451 दीक्षा दानेश्वरी आचार्यश्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. की प्रथम वार्षिक तिथि निमित्त पंच दिवसीय गुणानुवाद ''गुरु गुणरत्न गौरव'' महोत्सव में पू.गच्छाधिपति जयघोष सूरीजी म.सा. का 86 वां जन्म दिवस एवं ''जयघोष गीता'' संस्कृत में पुस्तक का विमोचन, गुणानुवाद हुए एवं प्रथम गुरुकुल के बालकों द्वारा अजित शांति स्तवन का शास्त्रीय संगीत के साथ स्त्रोत पाठ हुआ। श्री 8 करोड़ नवकार जाप श्री जितुभाई की संवेदना, शाहीबाग में गुरुदेव के ग्रुप में दीक्षित परिवारों का बहुमान, राजनगर अहमदाबाद में गुरुदेवश्री के 14 चार्तुमास हुए उसमें चार्तुमास स्थल के अध्यक्ष, मंत्री एवं ट्रस्ट मंडलों द्वारा गुणानुवाद एवं अंतिम पांचवें दिन आचार्य भगवंत पंन्यासजी एवं मुनि भगवंतों द्वारा गुणानुवाद सभा, सामुहिक आयंबिल तप रहा।

कालधर्म

आचार्यश्री जयानंदसूरीजी म.सा. की आज्ञानुवर्तीय साध्वी श्री पुनीतप्रज्ञा श्रीजी म.सा. का 16 अगस्त को नवरत्नधाम धर्मशाला पालीताना में कालधर्म हुआ।

चार आचार्य भगवंतों की अमृत निश्रा में गुरुराम पावन भूमि पर उपधान तपाराधना

सूरत-गुरुराम पावन भूमि पर पाल-सूरत में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री अभयदेव सूरीजी महाराज, आचार्यदेव श्री जगतचंद्र सूरीजी महाराज, आचार्यदेव श्री मोक्षरत्न सूरीजी महाराज एवं नूतन आचार्य भगवंत श्री कल्पयशसूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में उपस्थित डेहलावाला समुदाय के साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की धर्म क्रिया उपधान तप का शुभारंभ प्रथम मुर्हूत 19 अक्टूबर को होने जा रहा है, द्वितीय मुर्हूत 21 अक्टूबर का है, माल परिधान 8 दिसबंर को होगा। यह धर्म क्रिया शुभ मंगल फाउण्डेश्न की ओर से होने जा रही है। परमात्मा श्री नेमिनाथ प्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर 12 से 14 अगस्त तक अट्ठम तपाराधना में बड़ी संख्या में आराधक जुड़े थे।

आगमोद्धारकश्री की जन्म जयंति पर नीमच के श्री विकासनगर श्रीसंघ में यादगार गुणानुवाद सभा हुई

डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक सम्पादक मुख्य वक्ता रहे।

नीमच- श्री महावीर स्वामी जिनालय से सुसज्जित विकासनगर में पूज्य साध्वीवर्या श्री हितदर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री दिव्यनेहाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री चारुदर्शना श्रीजी म.सा. के सानिध्य में पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा (पूज्यश्री सागरजी महाराजा) की 147 वीं जन्म जयंति पर यादगार गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। स्थानीय वक्ताओं के उपरांत डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक सम्पादक ने पूज्यश्री का धाराप्रवाह एक घंटे से अधिक गुण कीर्तन किया एवं पूज्यश्री के जीवन से संबंधित अनेक प्रसंगों को नीमच श्री संघ से प्रथम बार अवगत कराया। डॉ. सुभाष जैन विगत 20 वर्षो से लगातार अलग-अलग श्री संघों में पूज्यश्री की गौरव गाथा जन्मतिथि पर करने जाते रहे है और हर बार नये संघ में पूज्यश्री के बारे में यादगार स्मरण सुनाते है। यहां आपने लड्डू की प्रभावना की इसके अलावा श्रीफल और पांच रुपये की प्रभावना हुई। रात्री में पूज्यश्री के जीवन पर नाटिका खेली गई।

महातीर्थ शत्रुंजय में आराधना तप

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय अजितयशसूरीजी महाराजा एवं पंन्यास श्री संस्कार यशविजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वीजी की पावन निश्रा में उपधान तप होने जा रहा है। समर्पण परिवार के द्वारा आयोजित इस धर्माराधना का शुभारंभ प्रथम मुर्हूत दिनांक 15 अक्टूबर एवं द्वितीय मुर्हूत 17 अक्टूबर से होगा। चैन्नई भवन में होनेवाली इस धर्म क्रिया की माल परिधान 6 दिसंबर को होगी।

पूना में 24 जिन तप का आयोजन

पूना- गुदेंचा गार्डन में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान सागर समुदाय के पंन्यास प्रवर श्री विराग सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यहां 24 जिन तप का आयोजन आरंभ हुआ। तपाराधना के अंतर्गत 21 उपवास, 21 बियासणा, 1 छट्ठ तथा 1 अट्ठम तप होगा। कुल 50 दिन की आराधना 23 जुलाई से आरंभ हुई और पूर्णाहुति 10 सितंबर को होगी।

श्री नवकार महामंत्र आराधना हुई

हाटपिपल्या- यहां श्री चन्द्रप्रभ स्वामी जिनालय परिसर में चार्तुमार्सिक हेतु विराजित मातृहृदय साध्वी श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री अर्पितगुणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में 9 दिवसीय नवकार महामंत्र की आराधना का आयोजन किया गया। 10 से 18 अगस्त बीच हुई। आराधना के बाद 19 अगस्त को रथयात्रा तथा संघ का स्वामी वात्सलय हुआ।

कच्छ में कषाय जपाराधना हुई

कच्छ- माधापर श्री संघ में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित आचार्य भगवंत श्री पूर्णचंद सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में कषाय जप तपाराधना का आयोजन किया गया। 1 उपवास, 1 आयंबिल, 1 नीवी, 1 एकासणा के साथ 16 दिवसीय आराधना 3 से 16 अगस्त तक आयोजित की गई। बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने भाग लिया।

आ.श्रीगुणरत्नसूरीजी की प्रथम स्वर्गा-रोहण तिथि पर 40 हजार आयंबिल, 5 लाख प्रदक्षिणा तथा ''गुरु गुण गौरव गाथा''

सूरत- पूज्य दीक्षा दानेश्वरी गुरुदेव श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.की प्रथम स्वर्गारोहण तिथि के उपलक्ष्य में चरणोपासक आचार्य श्री रश्मिरत्न सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में श्री उमरा जैन संघ सूरत में खूब उल्लासपूर्वक ''गुरुगुण गौरव गाथा अष्टान्हिका महोत्सव सम्पन्न हुआ सूरत में विराजित उनके गुरु भगवंत पधारे और गुणानुवाद किये। भारतभर के अनेक जिनालयों में प्रभुजी की अंग रचना हुई।

महोत्सव निमित्तक एक भव्य आर्ट गेलेरी की रचना की गई थी जिसमें उड़िसा के कलाकारों ने सेंड आर्ट के रुप में अचलगढ़ युवाशिविर और जीरावला प्रतिष्ठा की प्रस्तुति की गई। मेजिक मीरर की रचना भी आकर्षक थी। पूज्यश्री की प्रथम स्वर्गारोहण तिथि निमित्तक देश-विदेश में 40 हजार से अधिक आयंबिल ठेर-ठेर गुणानुवाद हुए। सूरत-वेसु-महाविदेहधाम-दीक्षा दानेश्वरी संयम तीर्थ गुरु समाधि भूमि पर पांच हजार गुरु भक्तों ने 108 प्रदक्षिणा देकर कुल पांच लाख प्रदक्षिणा का एक रिकार्ड बनाया।

आठ दिन सभी गुरु गुणमय बने थे। पू.आ.रश्मिरत्नसूरीजी ने कहाकि पूज्यश्री उनके परम गुरु के विशिष्ट कृपापात्र तथा विश्वासपात्र थे। पूज्य प्रेमसूरि दादा ने पाटण में उनके करकमलों से समुदाय व्यवस्था पट्टक (वील) की 7 कॉपी बनवाई उसमें से एक कॉपी मुनि गुणरत्नविजयजी को दी। पूज्य प्रेमसूरि दादा का अंतिम ध्वजारोहण भी उन्हें मिला, उनका ज्ञानवैभव बेजोड़ था। खवगसेढ़ी आदि 60,000 श्लोक प्रमाण संस्कृत-प्राकृत साहित्य का सर्जन किया, उनका स्वर्गवास कैलाशनगर, सूरत में 400 से अधिक साधु-साध्वीजी भगवंतों के श्रीमुख से नवकार महामंत्र सुनते-सुनते हुआ। पंडित मृत्यु को प्राप्त किया। पूज्यश्री के 140 साधु, 392 साध्वीजी थे। 67 वर्ष का दीर्घ संयम पालन कर 88 वर्ष की उम्र में देह का त्याग किया। सामान्य तौर पर पूज्यश्री ने प्रति 33 वें दिन दीक्षा दी है।

पालीताना में उपधान तप

पालीताना- पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी की अमृत निश्रा में सुणता भवन में उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान प्रवेश प्रथम मुर्हूत 19 सितंबर को तथा दूसरा मुर्हूत 21 सितंबर को है। माल परिधान 7 अक्टूबर को होगा।

श्रीमणी लक्ष्मीतीर्थ में उपधान तप

बड़ोदरा- बड़ोदरा-भावनगर हाईवे पर स्थित जैन तीर्थ मणी लक्ष्मी में पूज्य गणिवर्य श्री श्रुतचंदविजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में अठारिया एवं उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम मुर्हूत प्रवेश 15 अक्टूबर को है, उपधान तप की माल 2 दिसंबर 2021 को होगी।

गुरुकृपा तीर्थ में नवनिर्माणाधीन का भूमि पूजन-खनन मुर्हूत

रामजी का गोल- पश्चिमी राजस्थान के मखमली धोरों के बीच बसा नेशनल हाइवे नं. 68 पर स्थित महाप्रभावी श्री आर्य गुण गुरुकृपा जैन तीर्थ, रामजी का गोल में नवनिर्माणाधीन वाराणसीपुरम् संकुल का भूमिपूजन, खनन मुहूर्त वि.सं. 2078, भादवा वदी-7, 29 अगस्त को विजय मुहूर्त में आयोजित हुआ। अचल गच्छाधिपति प.पू.आ.भगवंत श्रीमद् कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से बना महाप्रभावक श्री आर्य गुण गुरुकृपा जैन तीर्थ, रामजी की गोल में नवनिर्माणाधीन विशाल वाराणसीपुरम् संकुल का भूमिपूजन, खनन मुहूर्त 29 अगस्त को विजय मुर्हूत में भव्य समारोह के बीच आयोजित किया गया। वाराणसीपुरम् संकुल में आधुनिक सुविधायुक्त सोलह ए.सी. कमरों का अतिथि गृह, भक्ति हॉल, विविधलक्षी हॉल, संघ रसोड़ा, दो स्टोर रुम, ऑफिस, दो लिफ्ट, मैनेजर रुम सहित अन्य निर्माण कार्य होंगे।

श्री नाकोड़ा भैरव महापूजन एवं आयंबिल भवन खनन मुर्हूत हुआ

मंदसौर- यहां रुपचंद आराधना भवन से चार्तुमास हेतु विराजित साध्वीवर्या श्री मोक्षज्योतिश्री आदि ठाणा की पावन निश्रा में 15 अगस्त को 51 जोड़ों के साथ श्री नाकोड़ा भैरव महापूजन हवन का आयोजन हुआ। 16 अगस्त को आयंबिल भवन का भूमि पूजन तथा खनन मुर्हूत श्री पूनमचंद डांगी परिवार के द्वारा किया गया।

भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी म.सा.श्री भगवती सूत्र पर प्रवचन दे रहे है

देपालपुर- भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. के साथ साध्वीवर्या श्री पूर्णयशा श्रीजी आदि ठाणा निश्रा मे चातुमार्सिक आराधना देपालपुर में चल रही है। देपालपुर के युवा चार्तुमास की कमान संभाल रहे है। वैयावच्य सेवी मुनिप्रवर श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. को 93 वीं ओली की आराधना चल रही है। नवकार महामंत्र आराधना शाश्वत आसोज ओली, होगी विशिष्ट प्रवचनमाला चल रही है श्री भगवती सूत्र पर पूज्यश्री के प्रवचन चल रहे है आपश्री की निश्रा में महापर्व की आराधना जोरदार होने की तैयारी चल रही है।

बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंतों की निश्रा : अयोध्यापुरम् तीर्थ से श्री सागरजी जन्म जयंति एवं महामंत्र आराधना हुई

अयोध्यापुरम्- सागर समुदाय की दर्शन की महत्ता को दर्शाता जैन जगत में ख्यातिनाम श्री अयोध्यापुरम् महातीर्थ में संस्थापक बंधुबेलड़ी आचार्य भगवंत पूज्यपाद जिनचंद्रसागरसूरीश्वरजी एवं पूज्यपाद श्री हेमचंद्रसागरसूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों के चार्तुमास के साथ भव्य रुप से पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा की जन्म जयंति 8 अगस्त को भव्य गुरुआदाराजंलि के साथ मनाई गई। परवान चढ़ती चातुमार्सिक आराधना के मध्य 10 से 18 अगस्त तक महासंघ की दिव्य आराधना हुई। मांत्रिक विवेचन के साथ पूज्यश्री ने महामंत्र की महत्ता को बतलाया। आराधना में 300 से अधिक आराधकों ने भाग लिया। अब महापर्व की आराधना का माहौल 3-10 सितंबर के लिये बनने लगा है।

38 दिवसीय श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ का संघ जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरी निकालेंगे

उज्जैन -पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा.,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागर जी म.सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अभ्युदयपुरम् तीर्थ में चल रहा है। आपकी निश्रा में 38 दिवसीय श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ छःरि पालित यात्रा संघ आयोजित किया जा रहा है। यह संघ 10 दिसंबर 2021को नागेश्वर तीर्थ से आरंभ होकर 2 जनवरी 2022 को राणकपुर पहुंचेगा 15 जनवरी 2022 नाकोड़ा तीर्थ पहुंचकर माल 16 जनवरी को होगी।

ग्रंथ ''जयघोष गीता'' का लोकार्पण

सूरत- आजीवन गुरु गुण चरणोपासक आचार्य विजय रश्मिरत्न सूरीश्वरजी की निश्रा में उमरा जैन संघ सूरत में 600 से अधिक विद्वान महात्मा द्वारा संस्कृत में लिखित 700 पन्नों का बेजोड़ ग्रंथ ''जयघोष गीता'' का भव्य लोकार्पण लाभार्थी महानुभावों के वरद हस्त हुआ। यह ऐतिहासिक ग्रंथ सूरि प्रेम-भुवनभानु समुदाय के स्वर्गीय गच्छाधिपति आ.श्री जयघोषसूरि म.सा. की स्मृतिरुप में प्रकाशित हुआ है। इस ग्रंथ का संपादन आ.श्री रश्मि-रत्नसूरि म.सा. के शिष्य मुनि श्री यशरत्नविजयजी म.सा. ने खूब प्रयत्न पूर्वक किया है। इसी तरह उनके द्वारा तैयार किया हुआ ''वैराग्य कल्पलता'' ग्रंथ के आठ भागों का भी लोकार्पण हुआ।

पूना में नवकार जाप अट्ठम हुए

पूना- श्री आदिश्वर महाराज मंदिर गोठवाला ओसवाल संघ पूना में चार्तुमास आराधना के लिये विराजित पूज्य साध्वीवर्या श्री शीलपूर्णाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में 9 अगस्त को नवकार जाप एवं शांतिकलश एकासणा का आयोजन किया गया। श्री नेमिनाथ परमात्मा के जन्म दीक्षा कल्याणक निमित्त अट्ठम तप का आयोजन 13 से 15 अगस्त तक किया गया। 14 अगस्त को श्री सीमंधर स्वामीजी की भावयात्रा भी हुई।

✲ संत या साधक बनें या न बनें पर अपने जीवन की दीवार पर सज्जनता का चित्र अवश्य उभारें।

चार्तुमास आराधना : याद में रखने योग्य महत्वपूर्ण तिथि

✻ भादवा वदी-11	3 सितम्बर 2021	शुक्रवार	पर्वाधिराज पर्युषण का आरम्भ अट्ठाईघर
✻ भादवा वदी-30	6 सितम्बर 2021	सोमवार	कल्पसूत्र वाचन
✻ भादवा सुदी-1	7 सितम्बर 2021	मंगलवार	श्री महावीर प्रभु जन्म वांचन, चौदह स्वप्नाजी दर्शन
✻ भादवा सुदी-2	8 सितम्बर 2021	बुधवार	तेलाघर
✻ भादवा सुदी-10	10 सितम्बर 2021	शुक्रवार	संवत्सरी महापर्व पारसा, सूत्र वांचन सवंत्सरी प्रतिक्रमण, क्षमापना,
✻ भादवा सुदी-11	17 सितम्बर 2021	शुक्रवार	जगतगुरुश्री हीरसूरीजी का स्वर्गारोहण दिन वि.सं. 1652
✻ आसोज सुदी-5	10 अक्टूबर 2021	रविवार	श्री यक्षेन्द्र मणिभद्र दादा का स्मृति दिन
✻ आसोज सुदी-7	12 अक्टूबर 2021	मंगलवार	आसोज नवपद ओली आरम्भ
✻ कार्तिक वदी-13	2 नवम्बर 2021	मंगलवार	धनतेरस
✻ कार्तिक वदी-14	3 नवम्बर 2021	बुधवार	काली चवदस
✻ कार्तिक वदी-30	4 नवम्बर 2021	गुरुवार	दीपावली, लक्ष्मी-शारदा महापूजन श्री वीर प्रभु निर्वाण दिवस
✻ कार्तिक सुदी- 1	5 नवम्बर 2021	शुक्रवार	नूतन वर्षारंभ, वीर निर्वाण संवत् 2548 श्री गौतमस्वामीजी केवलज्ञान
✻ कार्तिक सुदी-5	9 नवम्बर 2021	मंगलवार	ज्ञान पंचमी
✻ कार्तिक सुदी-14	18 नवम्बर 2021	गुरुवार	चौमासी चवदस, चार्तुमास संपूर्ण
✻ कार्तिक सुदी-14	19 नवम्बर 2021	शुक्रवार	श्री सिद्धाचल यात्रा आरंभ, कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य का जन्म दिन

अभिनव शत्रुंजयधाम की अंजन- प्रतिष्ठा जनवरी 2022 में होगी

रानी- श्री जैनाचार्य श्री नेमी सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवश्री सुशीलसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यदेव श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा. के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर रानी के सुशील विहारधाम अभिनव शत्रुंजय धाम का नव निर्माण किया गया है। तीर्थ का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 15 से 24 जनवरी 2022 तक आयोजित होगा। प्रतिष्ठा 22 जनवरी को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 153 चढ़ावों का लाभ लेने के लिये 1 लाख 8 हजार का नकरा तैय किया गया जिसका ड्रॉ निकालकर विजेता लाभ दिया जायेगा। ड्रॉ 26 फरवरी 2021 को श्री अष्टापद तीर्थ सुशील विहार रानी में निकाले जायेंगे।

✻ बहिरात्मा कौन है ? शरीर तथा अन्य पदार्थो में आत्मशुद्धि रखने वाला बहिरात्मा है। अन्तरात्मा कौन है ? वह जो आत्मा तथा शरीरादि जड़ पदार्थो का भेद जान गया है। परमात्मा कौन है ? कर्ममल से मुक्त ही परमात्मा है।

श्री अमीझरा पार्श्वनाथ प्रभु के भव्य जिनप्रसाद का नवनिर्माण 23 अगस्त को प्रथम ढांकना विधान के साथ आरंभ हुआ

✲ मंदिरजी का नक्शा पास हुआ : मार्बल के लिये एग्रीमेंट हुआ।

भोपावर- दादा शांतिनाथ प्रभु की प्रथम वर्षगांठ पर भोपावर महातीर्थ में पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.की मंगल उपस्थिति में श्री अमीझरा पार्श्वनाथ दादा के भव्य त्रिलोकदर्शयी जिनप्रसाद के नवनिर्माण के लिये ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष श्री रमेशजी मुथा मैनेजिंग ट्रस्टी श्री प्रकाश सिरोही के द्वारा भट्ट शिलारोपण के लिये पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. से मंगल मुर्हूत की चर्चा के बाद 23 अगस्त को एक दिवसीय आयोजन के साथ भट्ट शिलारोपण के साथ भव्य जिनप्रसाद निर्माण का आरंभ होने जा रहा है प्रथम ढांकना विधान के साथ भट्ट शिलारोपण का कार्य विजय मुर्हूत 11.30 बजे सम्पन्न होगा। लाभार्थी श्रीमती असुबहन रघुनाथमलजी समरथमलजी दिनेशजी आदि दोषी परिवार है।

अध्यक्ष श्री रमेशजी मुथा के अनुसार - मंदिरजी निर्माण के सभी नक्शे निश्चित कर लिये गये है देवद्रव्य के लिये अपील तैयार है तथा दादाश्री अमीझरा पार्श्वप्रभु और तीर्थ के सभी देवी-देवताओं से विनंती कर निर्माण की आज्ञा भी प्राप्त कर निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जैनाचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी की निश्रा में जबुंद्वीप में महापर्वाराधना

पालीताना- सिंह गर्जना के स्वामी सागर समुदाय के वरिष्ठआचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा पूज्य आचार्य श्री सौम्यचंद्र सागर सूरीजी, पूज्य आचार्य श्री विवेक चंद्रसागर सूरीजी म.सा.,आदि ठाणा निश्रा मे चातुमार्सिक आराधना जम्बुद्वीप परिसर में चल रही है। पूज्यश्री क प्रवचन में बड़ी संख्या में साधु-साध्वीजी की उपस्थिति रहती। महापर्व की भव्य आराधना में देशभर के श्रावक-श्राविका जुड़ेंगें। पूज्यश्री की निश्रा में महापर्व की आराधना के लिये गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि अनेक प्रांतों से आराधक आ रहे है। 3 से 10 सितंबर तक महापर्व की आराधना होगी। आपश्री की निश्रा में महापर्व की आराधना जोरदार होने की तैयारी चल रही है।

धार में महा मंत्राराधना हुई

धार- श्री पार्श्वनाथ श्री संघ में चार्तुमास हेतु विराजित साध्वीवर्या श्री पद्मलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में महामंत्र नवकार की 9 दिवसीय मंत्राराधना का आयोजन किया गया। 14 अगस्त को 108 दीपक के साथ परमात्मा की कुमारपाल राजा के द्वारा भव्य आरती की गई।

सामूहिक अट्ठम तप का आयोजन

मुंबई- श्री अखिल भारत अचल गच्छ (विधिपक्ष) श्वेतांबर जैन संघ द्वारा आयोजित तपचक्र चक्रवर्ती, जिनशासन शिरोमणी, अचल गच्छाधिपति प.पू.आचार्यदेव श्री गुणोदयसागर सूरीश्वरजी म.सा. की प्रथम पुण्य तिथि निमित्ते भारत भर के अचलगच्छीय श्री संघों/महाजनों में सामुहिक अट्ठम तप का उत्कृष्ट आयोजन हुआ।

महापर्वाराधना शंखेश्वर महातीर्थ में

शंखेश्वर- श्री पार्श्व पद्मावती शक्तिपीठ में आचार्यश्री विजय लेखेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में पर्युषण महापर्वाराधना का आयोजन किया जा रहा है। 504 आराधकों के साथ 3 से 10 सितंबर तक आयोजित हुआ है।

चैन्नई में प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन

चैन्नई- श्री नेमिनाथ जिनालय का प्रतिष्ठा महोत्सव साहुकार पेठ में किया गया। दिनांक 19 से 23 अगस्त तक आयोजित अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव में आचार्य श्री हेमवल्लभसूरीजी म.सा. ने अंजन तथा आचार्य श्री मेघदर्शन सूरीश्वरजी म.सा. ने प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई।

✲ संसार के सुख-दुःख तब सुख-दुःख नहीं लगते जब आत्मा का सुख-दुःख हमारी समझ में आ जाता है।

हमारे तीज-त्यौहार

1-	भादवा वदी-11	शुक्रवार	3-9-2021	पर्वाधिराज पर्युषण पर्व आरंभ
2-	भादवा वदी-30	सोमवार	6-9-2021	प्रभु जन्म वाचन, चौदह स्वप्न दर्शन
3-	भादवा सुदी-2	बुधवार	8-9-2021	तेलाघर, गणधरवाश
4-	भादवा सुदी-4	शुक्रवार	10-9-2021	संवत्सरी महापर्व बारसासूत्र वाचन, महाप्रतिक्रमण-क्षमापना
5-	भादवा सुदी-11	शुक्रवार	17-9-2021	जगत गुरु श्री हीरसूरीश्वरजी म.सा. का स्वर्गवास दिन
6-	आसोज वदी-6	सोमवार	27-9-2021	रोहिणी

पुष्प नक्षत्र :–

आरम्भः- भादवा वदी-11 शुक्रवार, दिनांक 3-9-2021, समय- 04.43 से

समाप्तः- भादवा वदी-12 शनिवार, दिनांक 4-9-2021, समय- 05.46 से

पंचक :–

आरम्भः- भादवा सुदी-12 शनिवार, दिनांक 11-9-2021, समय- दोपहर 14.27

समाप्तः- आसोज वदी-2 गुरुवार, दिनांक 15-9-2021, समय- 22.30 से

अरिहंत परमात्मा के पांच वैभव

1- वीतरागणं- गुणों के वैभव

2- सव्वणणूणं- ज्ञान के वैभव

3- देविंदपूईयाणं-वाणी के वैभव (वचन सिद्ध)

4- तेलोक्कगुरुणं- तीन लोक के गुरु पद के वैभव।

हमें देरासर में जाकर परमात्मा से इन पांच वैभव में से थोड़ा-थोड़ा हमें भी प्राप्त करना है। इसलिये हमें परमात्मा से प्रार्थना करनी है।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

✲ जिस प्रकार मनुष्य जन्म मिलना परम भाग्य का परिचय है, उसी प्रकार सद्बुद्धि मिलना भी असीम भाग्य की निशानी है।

सादर आमंत्रण

✲ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✲ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✲ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✲ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

वर्ष 26 | श्रावण-भादवा | सितम्बर-2021 | अंक 09 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 06/2021-2023

प्रति,
बुक पोस्ट
श्रीमान् ....
....
....

स्टाम्प
टिकिट

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897